हाथ में हाथ

एच.आई.वी. के प्रति हमारी प्रतिक्रिया को बदलने के लिए बाइबल अध्ययन

S. Samraj, Executive Director, CANA, India
E: canadelhi@gmail.com; samrajindia2april@gmail.com
M: 09871076999

कृपया ध्यान दें : बाइबिल अध्ययन समूह के सदस्य,
मोड्यूल के पाठक,

मसीह में प्रिय भाइयों एवं बहिनों

स्थानीय कलीसिया ''चर्च एन्ड कम्युनिटी मोबिलाइजेशन प्रोसेस(सी.सी.एम.पी.) की सबसे बड़ी हितधारक है, क्रिश्चियन एड्स/एच.आई.वी. नैशनल एलायंस, काना(सी.ए.एन.ए.) अपनी क्षमता के निर्माण की प्रक्रिया में हैं कि यह अनुभव कर सकें कि कलीसिया के अन्तर्गत पर्याप्त एवं सम्भावित संसाधन हैं जिससे कि वे निर्धनता, अस्वस्थता एवं किसी भी विकास सम्बंधी चुनौती का सामना करने में योगदान देने के योग्य हो सके जिसमें एच.आई.वी. एवं एड्स सम्मिलित हैं ।

कलीसिया के अन्दर और सहयोग करने वाली एजेन्सियों जैसे काना एवं आपकी संस्था में परिवर्तन लाने की प्रक्रिया में समय लगता है ।

हम काना में यह भी देखना चाहते हैं कि भारत की सम्पूर्ण कलीसियाएँ यशायाह 61:1-3 का दर्शन अपनी सम्पूर्ण सभाओं में अपना रही है और अपने पड़ोसी समुदायों तक पहुँच बनाने के योग्य हैं; ताकि भारत में एक विशाल जागृति आए, और शेष पद (यशा. 61:4-11) परिपूर्ण हों ।इस प्रकार सत्ताधारी परमेश्वर समस्त राष्ट्रों के सामने धार्मिकता एवं स्तुति को प्रकट करे ।

इस सुधार के लिए हमारी ताकत कहाँ से आएगी ? हमारे आत्मिक युद्ध में हमारे हथियार क्या हैं ? परमेश्वर का वचन और परमेश्वर का आत्मा मुख्य शस्त्र हैं जो जीवन परिवर्तन लाने के इस प्रयास में हमारे पास हैं, जिसके बिना हम अपनी कलीसियाओं में और व्यक्तियों के रूप में जो जीवित व प्रेमी प्रभु में विश्वास को दूसरों के साथ बांटते हैं आगे को कोई प्रगति नही कर सकते है। यह संसाधन ''हाथों में हाथ'' ''एचआईवी के प्रति हमारे प्रत्युत्तर को रूपान्तरित करने हेतु बाइबिल अध्ययन'' जिसे हमने अपने साझेदार टियरफन्ड यू.के., इस मार्गदर्शिका के मुख्य विकासकर्ता से प्राप्त किया है, और अपने सम्पूर्ण सी. सी.एम.पी. कार्य में प्रयोग किया है। काना के रूप में हम दूसरों के साथ इसे बांटते हुए प्रसन्न हैं, जो व्यक्तियों, परिवारों और समुदायों, जो एच.आइ.वी और एड्स की सम्भाव्यता से संघर्ष कर रहे हैं उनमें परिवर्तन लाने के लिए उत्साही है ।

यह कोई कठोर मार्गदर्शिका नहीं है कि जिसका कोई एक एक शब्द प्रयोग करे, आप इसे एक विस्तृत मार्गदर्शिका के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं और उदाहरणात्मक अध्ययन के रूप में आप स्थानीय उदाहरणों का समावेश भी कर सकते है वृत्त अध्ययन, सन्दर्भ के रूप में भी प्रयोग कर सकते हैं साथ ही अधिक बाइबिल अध्ययन जिससे स्थानीय मण्डलियों को सहायता मिल सके, परिवारों को पोषण मिले ।
(फिर भी कितना कार्य एवं निपुणता के घंटे इन बाइबिल अध्ययनों को विकसित करने में खर्च हुए, इन बाइबिल अध्ययनों की आत्मा में कोई भी मिलावट नहीं कर सकता)।

इन बाइबिल अध्ययन के संकलनों पर अधिक जानकारी के लिए आप काना एवं टीयरफन्ड यू.के. से सम्पर्क कर सकते हैं ।हमें यह जानकर प्रसन्नता होगी कि यह मार्गदर्शिका आपको आपके कार्य में किस प्रकार सहायत कर रही है, साथ ही कोई सुझाव, सुधार जो आपके पास हों उनका स्वागत है ।

परमेश्वर आपके साथ रहे !

विषयवस्तु

परिचय
मार्गदर्शक के लिए टिप्पणी
मसीही संदेश के रूप में इस्तेमाल किये जा सकने के लिए इन बाइबल अध्ययनों को अपना

---

1. एच.आई.वी. के साथ जीवित मसीह की देह
2. बीमारी और कष्ट को समझना
3. मसीही एवं विशिष्ट दृष्टिकोणों को समझना
4. चंगाई और एंटरिट्रोवाइरल इलाज (ए.आर.टी.)
5. कलंक, भेदभाव और इनकार
6. आत्मग्लानि
7. क्षमा
8. एचआईवी के साथ जीवित लोगों की देखभाल और सहायता
9. विवाहित जोड़ों के लिए परमेश्वर की योजना: प्रेम और यौन का स्थान
10. एकल व्यक्ति एवं अविवाहित जोड़ों के लिए परमेश्वर की योजना: प्रेम एवं यौन का स्थान
11. महिलाओं के विरुद्ध यौन उत्पीड़न और हिंसा
12. जवान किशोरों की सूरक्षा: एचआईवी के प्रति उनकी असुरक्षा
13. स्वस्थ विवाह, स्वस्थ परिवार को बनाता है
14. बच्चों की अच्छी मसीही परवरिश
15. लिंग और रिश्तों की पुनःस्थापना
16. एचआईवी असंगत परिवार
17. एचआईवी के साथ जीवित लोगों की पूर्ण सहभागिता
18. असुरक्षित बच्चों के लिए देखभाल और सहारा
19. अगुवाई और वकालत
20. मृत्यु की दशा में तैयारियाँ
21. मृत्यु की सच्चाई
22. अपने प्रिय जनों की मृत्यु का शोक करने के बाद जीवन के साथ सामंजस्य करना
23. जीवन को पूरे उत्साह के साथ जीना

बाइबल के पद
शब्द-संग्रह
अतिरिक्त पाठ एवं उपयोगी संसाधन
सूची

बाइबल अध्ययनों का परिचय

इस पुस्तक में 23 भिन्न-भिन्न पाठ हैं, जिन्हें कलीसिया के अनुभवी अगुवों द्वारा चुना गया है, और जो इस बात से परिचित थे कि हमारी कलीसियाओं को उन्हें पढ़ने से फायदा होगा। उन विषयों को चुनें जिन्हें आप सोचते हैं कि वे आपकी अपनी परिस्थिति के लिए सबसे ज्यादा प्रासंगिक हैं। ये बाइबल अध्ययन एक स्पष्ट योजना के अनुसार हैं। आप बाइबल अध्ययन के पृष्ठ को फोटोकॉपी कर दूसरों को दे सकते हैं।

समय का ध्यान

समूह में इन अध्ययनों का प्रयोग करने के लिए लगभग एक से दो घंटे का समय निकलने की सलाह दी जाती है। समय के पाबंद रहें-और सुनिश्चित करें कि सभी बिन्दुओं एवं प्रश्नों का अध्ययन किया गया है। यदि भाग लेने वाले किसी रुचि के विषय पर बहुत ही उत्साह के साथ विचार-विमर्श कर रहे हैं, तो अध्ययन का आधा भाग करने के लिए आपस में सहमति बना सकते हैं और बाकी हिस्से को पूरा करने के लिए फिर से मिला जा सकता है। प्रार्थना के साथ बंद करने के लिए समय निकालें।

हमेशा प्रार्थना के साथ शुरू करें – और यदि उचित हो तो आराधना भी की जा सकती है

परमेश्वर की आशीष और मार्गदर्शन के लिए अपने शब्दों में प्रार्थना करें या फिर शुरूआत की इनमें से एक प्रार्थना का प्रयोग करें।

- परमेश्वर के वचन में नई insight हम पवित्र आत्मा के लिए प्रार्थना करते हैं
- प्रिय प्रभु हम आपसे विनती करते हैं कि आज अपने वचन से और ज्यादा सीखने के लिए हमारे हृदयों एवं दिमाग़ों को आप खोलेंगे।
- हे प्रभु, आपके प्रेम एवं देखभाल के लिए हम बहुत आभारी हैं। हम आपकी दया को अपने जीवनों के हर एक दिन अनुभव करते हैं। हम विनती करते हैं कि इस प्रेम व दया को दूसरों को कैसे दिखाना है इसको हम सीख सकें। जैसे-जैसे हम आपके वचन का अध्ययन करते हैं, हम यह विनती करते हैं कि आप हमें उन जिम्मेदारियों को दिखायेंगे जो कि इस प्रेम के पात्र होने के नाते हमारी हैं। हम विनती करते हैं कि पवित्र आत्मा कार्य करने के वे क्षेत्र हमें दिखायेगा जिन्हें करने के लिए आप हमें बुला रहे हैं।

बाइबल पाठ

प्रत्येक अध्ययन के लिए सम्पूर्ण बाइबल के पाठ इस पुस्तक के अंत में दिये गए हैं। जब आप मिलते हैं तो इनका प्रयोग करने के लिए आप इसकी फोटोकॉपी बना सकते हैं। बाइबल के कई संस्करणों का होना भी अच्छा रहेगा यदि लोगों के पास दूसरे संस्करण हैं। अपनी स्वयं की बाइबल लाने के लिए लोगों को उत्साहित करें।

बाइबल अध्ययन

प्रत्येक बाइबल अध्ययन एक ही रूपरेखा के अनुसार है।

परिचय
यह अध्ययन की पृष्ठभूमि को प्रदान करता है। कभी-कभी यह उस विषय पर ध्यान केन्द्रित करता है जिसकी हम चर्चा कर रहे हैं। कभी-कभी यह अनुच्छेद का परिचय देता है।

बाइबल का अनुच्छेद
बाइबल के अनुच्छेद या अनुच्छेदों को एक साथ पढ़ें और विचार विमर्श के दौरान इन पदों का हवाला दें।

बाइबल के लिखे जाने वाले समय में विचार विमर्श...
बाइबल के अनुच्छेद पर, सबसे पहले हम इस बात को ध्यान में रख कर विचार करते हैं कि यह किस के लिए लिखा गया और उस समय की परिस्थिति क्या थी। अनुच्छेद के बारे में, और उसके द्वारा परमेश्वर क्या कहना चाहता है, इस संबंध में वह सब कुछ सीखने में, प्रश्नों की एक श्रृंखला हमारी मदद करती है।

एच.आई.वी. वाले समय में विचार विमर्श...
उसके बाद हम इस बात पर ध्यान देने की ओर मुड़ते हैं कि बाइबल का अनुच्छेद आज हम से क्या कह रहा है – हमारे लिए उसकी महत्वता क्या है, हमारे जीवनों के लिए उसकी क्या प्रासंगिकता है, और विशेष रूप से एच.आई.वी. के विषय पर वह क्या बात कर रहा है?

सीखने के लिए मुख्य बातें
इस बात को देखें कि ये बातें विचार विमर्श से निकल कर आई हैं। इन बातों को अध्ययन द्वारा प्राप्त शिक्षा का एक अच्छा निष्कर्ष प्रदान करना चाहिए। कार्य करते समय सुझावों को देने में भी ये बातें मदद कर सकते हैं।

पढ़ने के लिए अतिरिक्त बाइबल अनुच्छेद
विषय से संबंधित कई अन्य बाइबल अनुच्छेदों को दिया गया है। अध्ययन के दौरान इनका उल्लेख या व्यक्तिगत बाइबल अध्ययन के लिए इनका प्रयोग किया जा सकता है।

प्रार्थना
हमेशा प्रार्थना के साथ अध्ययन को समाप्त करें – अपनी व्यक्तिगत परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और इस बात लिए प्रार्थना करें कि जो भी शिक्षा और समझ हमने प्राप्त की है उसे हम अपने जीवन में लागू कर पायें।

मार्गदर्शक के लिए दिशा-निर्देश
यह पुस्तक बाइबल में से कई अनुच्छेदों पर एकदम नए एवं चुनौतीपूर्ण दृष्टिकोण को प्रगट करती है, जिससे कि हमारे समाज एवं कलीसियाओं में एच.आई.वी. के प्रभाव पर मसीही लोगों को उपयोगी सुझाव मिलने में मदद मिल सके, और प्रत्युत्तर दे सकने के लिए तरीकों को बता सके।

इस पुस्तक का प्रयोग करना – मार्गदर्शक की भूमिका

इन बाइबल अध्ययनों का प्रयोग अकेले व्यक्तियों द्वारा किया जा सकता है लेकिन छोटे समूह जैसे बाइबल अध्ययन समूह, माताओं के समूह या महिलाओं के समूह या जवानों के समूहों में इन अध्ययनों का प्रयोग करने के द्वारा ज्यादा समझ मिलने का संभावना ज्यादा है।

इन अध्ययनों को सामूहिक विचार विमर्श एवं शिक्षा के लिए बनाया गया है। इनके लिए शिक्षक की जरूरत नहीं है। इसके विपरीत मार्गदर्शक की जरूरत है। एक अच्छा मार्गदर्शक ऐसा आरामदायक एवं खुला माहौल बना सकता है जिसमें लोग सुरक्षित महसूस करते हों और अपने व्यक्तिगत विचारों एवं अनुभवों को बांट सकते हैं। मार्गदर्शक को अध्ययन समूह के सदस्यों के बीच अच्छा रिश्ता बनाने में मदद करनी चाहिए। ऐसा करने से संवेदनशील और मुश्किल विषयों को उठाने एवं उन पर विचार विमर्श करने में मदद मिलती है।

संभव हो कि मार्गदर्शक कलीसिया में नेतृत्व की किसी भूमिका को अदा कर रहा होगा। फिर भी इन अध्ययनों में मार्गदर्शन देने के लिए पादरी या मसीही सेवक शायद सबसे ठीक व्यक्ति न हो। लोग उनसे "शिक्षा देने" और "सही" उत्तर देने की अपेक्षा कर सकते हैं।

इस पुस्तक की संरचना

इस पुस्तक को एक स्पष्ट रूपरेखा के साथ पेश किया गया है। जो बाइबल अध्ययन की अगवाई कर रहा है उसके लिए प्रत्येक बाइबल अध्ययन के पहले पृष्ठ पर सूचना, मार्गदर्शन एवं सुझाव दिये गए हैं। इस पृष्ठ को समूह के लिए नहीं पढ़ना है, लेकिन इससे पहले कि समूह के मिले, मार्गदर्शक को इसे पढ़ने और अध्ययन के विषय में सोचने के लिए समय देना चाहिए। मार्गदर्शक के पृष्ठों को निम्न तरीके से लिखा गया है:

यह अध्ययन हमें कैसे बदल सकता है?

पहले हम अध्ययन के उद्देश्यों की सूची बनाते हैं: इस बाइबल अध्ययन का प्रयोग एवं इस पर विचार विमर्श करने के परिणामस्वरूप भाग लेने वाले व्यक्ति को क्या ज्ञान प्राप्त होना चाहिए। तीन प्रकार के उद्देश्य होते हैं।

जानना – प्राप्त किये जाने वाले व्यवहारिक ज्ञान एवं शिक्षा को ये बताते हैं।

बनना – हमारी सोच व समझ में बदलाव, हमारे हृदयों एवं हमारी प्रतिक्रियाओं में बदलावों को ये बताते हैं।

कार्य करना – ये वे व्यवहारिक प्रतिक्रियाएं हैं जिन्हें हम अपनी शिक्षा के परिणामस्वरूप बनाते हैं।

ये उद्देश्य, अध्ययन के लिए एक अच्छा परिचय प्रदान करते हैं। प्रत्येक अध्ययन से पहले इन्हें समझाया जा सकता है और अध्ययन के अंत में, ये उद्देश्य उपयोगी निष्कर्ष प्रदान कर सकते हैं।

पृष्ठभूमि की जानकारी

अध्ययन शुरू करने से पहले यह भाग पृष्ठभूमि की उपयोगी सूचना प्रदान करने में मदद करता है। इन बातों को मार्गदर्शक द्वारा पढ़ा एवं स्मरण किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त संदर्भ सामग्री भी उपलब्ध कराई गई है।

मार्गदर्शक के लिए सुझाव

प्रासंगिक विचार विमर्श एवं अनुभवों को बांटने में, ये सुझाव मार्गदर्शक की मदद कर सकते हैं। अध्ययन के कुछ अंश बहुत ही संवेदनशील हैं, और अलग-अलग विचार विमर्श के लिए पुरुषों एवं महिलाओं या लड़कियों एवं लड़कों में विभाजित करना मदद कर सकता है (याद रखें कि इसके लिए आपको एक अतिरिक्त मार्गदर्शक की जरूरत पड़ेगी।) अध्ययन समाप्त करने से पहले हमेशा बड़े समूह में जमा हो जाइए, जिससे कि आप अपनी शिक्षा को बांट सकें, मुख्य विषयों को बड़े समूह के साथ बांटने के लिए पहले से ही सहमति बनाएं, और समाप्त करने से पहले प्रार्थना करें। जब संवेदनशील विषयों पर बातचीत हो रही हो, तो समूह को एक दूसरे के भरोसे को बना कर रखना है। उन्हें एक दूसरे के विषय में गपशप या कहानियाँ फैलानी नहीं है। यौन विषयों के लिए प्रयोग किये जाने वाले शब्दों पर सहमति बनाएं जिससे कि बातचीत के दौरान लोग सहज महसूस कर सकें।

शांत रहने वाले लोगों को उनके विचारों को बांटने के लिए प्रोत्साहित करें, एवं बड़बोले व्यक्ति को विचार विमर्श के दौरान हावी होने से रोकें। समूह में सभी से बारी-बारी करके पूछें, जिससे कि मौजूद सभी लोग अपने विचारों को बांट सकें।

ईमानदारी से की गई बातचीत मूल्यवान होती है, चाहे भले ही भाग लेने वाले लोग हर विषय से हर समय सहमत न हों। फिर भी, मार्गदर्शक को चाहिए कि वह बातचीत को गुस्सैल या तनावपूर्ण न होने दे। यदि ऐसा होने लगता है, तो उन्हें 'शिक्षण' को रोकना चाहिए। बाइबल के द्वारा सीखने एवं प्रेरित होने के लिए आम लोगों के पास पर्याप्त ज्ञान एवं अनुभव होता है। लोगों को जो वे सोचते हैं उसे कहने के लिए प्रोत्साहित करें – चाहे वह बात एकदम सटीक न भी हो। जहाँ पर भ्रांति हो वहाँ सही तथ्यपूर्ण जानकारी प्रदान करें, लेकिन मार्गदर्शक की भूमिका यह है कि वह लोगों की एकसाथ नम्रता के साथ यह खोजने में मदद करें कि बाइबल का अनुच्छेद क्या कह रहा है – और ज्यादा महत्वपूर्ण यह कि यह उन लोगों से क्या कह रहा है।

यदि जरूरी हो तो अगले प्रश्न पर जाने से पहले लम्बी बातचीत को सारांश में बताएं।

व्यवहारिक प्रतिक्रिया के लिए सुझाव

ये अध्ययन हमारी समझ एवं कुछ विशेष विषयों के बारे में हम कैसे सोचते हैं, उसे बदल सकती है। फिर भी, शायद यह काफी न हो। सही मायने में, इन अध्ययनों द्वारा हमें कार्य करने की ओर भी प्रेरित करना चाहिए। जैसे-जैसे बाइबल अनुच्छेद पर विचार विमर्श समाप्त होता है, तो ध्यान केन्द्रित करने में लोगों की मदद करें कि वे क्या व्यवहारिक प्रतिक्रियाएं कर सकते हैं। इनमें से कुछ सुझावों का उपयोग करें यदि वे प्रासंगिक हैं।

बाइबल उपदेश के रूप में इस्तेमाल करने के लिए इन अध्ययनों को अपनाना

एच.आई.वी. और एच.आई.वी. की समस्या से संबंधित बाइबल के सच्चे व निष्पक्ष परिप्रेक्ष्य को गहनता से समझने में कलीसिया की मदद करने के योग्य बनने के लिए पादरीयों एवं चर्च के अगुवों को संसाधनों एवं ज्ञान से सुसज्जित करने के लिए, बाइबल के इन अध्ययनों को बनाया गया है।

सामूहिक बाइबल अध्ययन के लिए विचाराधीन प्रत्येक विषय उपदेशों के लिए बहुत अच्छे सुझाव भी प्रदान करते हैं। गरीबों एवं हमारे समाज के उपेक्षित वर्गों के बीच कार्य करने के लिए कलीसिया को बाइबल से स्पष्ट आदेश प्राप्त है। आज के संदर्भ में, इसमें विभिन्न प्रकार से एच.आई.वी. से प्रभावित लोग भी शामिल हैं। एच.आई.वी. के बारे में बाइबल से प्रेरित होकर अपने सदस्यों को शिक्षा देने में चर्च की मुख्य भूमिका है। कलीसिया के अगुवों के पास न केवल चर्च के समुदाय में, बल्कि बाहर समाज में भी आदर व अधिकार होता है। कलंक, चोट व हानि पहुँचाने वाले रवैये एवं गलत धारणाओं को चुनौती देने और चिकित्स्य देखभाल के लिए सहारा एवं असुरक्षित बच्चों की वकालत करने के लिए कलीसिया के अगुवे अच्छी स्थिति में होते हैं।

यौन संबंध, पारिवारिक संबंधों, एच.आई.वी. से बचाव व नशे पर प्रचार करने और उन पर चर्चा करने से अकसर कलीसिया के अगुवे झिझकते हैं। यह झिझक अज्ञानता को प्रोत्साहित करती है, जिसके कारण कई जीवन नाश हो जाते हैं, और विशेषकर जवानों के जीवन। हमें साहसी अगुवों की जरूरत है जो बाइबल की सच्चाई को प्रेम के साथ बता सकें और मसीह के प्रेम को अपने समुदायों में बांटने के लिए अपने सदस्यों को प्रेरित कर सकें।

यह पुस्तक बाइबल के कई अनुच्छेदों पर नए दृष्टिकोण से विचार करती है और इन्हें उपदेशों की सामग्री के स्रोत के रूप में अपनाया जा सकता है। अपनी सोच और समज को तरोताजा करने के लिए पृष्ठभूमि की जानकारी एवं परिचय के साथ शुरू करें। दिये गये संदर्भों को इस्तेमाल करने के द्वारा शायद आप तथ्यों पर और गहनता से विचार करना चाहेंगे।

जब इन बाइबल के अध्ययनों को उपदेशों के लिए आधार बनाते हैं, तो अनुच्छेद पर मनन करने और उसे सावधानीपूर्वक पढ़ने की हम सलाह देते हैं। बाइबल के अतिरिक्त अनुच्छेद सुझावों के स्रोत सिद्ध हो सकते हैं। बाइबल अनुच्छेदों से संबंधित चर्चा के प्रश्नों के संभावित जवाबों पर विचार करें, और बाइबल अनुच्छेद एवं मुख्य शिक्षण बिंदुओं को समझाने के लिए इनका प्रयोग परिचय देने के लिए करें।

फिर चर्चा के प्रश्नों पर विचार करें जो कि आज के संदर्भ में एच.आई.वी. से संबंधित हैं। इनसे कौन से मुख्य बिंदु निकल कर आ सकते हैं? मुख्य शिक्षण के बिंदुओं की सूची बना कर सुनिश्चित करें कि आपके उपदेश में आपने सभी मुख्य बातों को शामिल किया है।

जब समाप्त कर रहे हों, तो शिक्षण के उद्देश्यों एवं व्यवहारिक प्रत्युत्तर दोनों पर विचार करें। उपदेश के अपने नोट्स को दोबारा देखें – आप किन बदलावों को लाना चाहते हैं:

- लोगों की समझ एवं ज्ञान में
- लोगों के रवैये एवं हृदयों में
- आपके उपदेश के कारण लोगों के व्यवहारिक प्रत्युत्तर में?

लोगों के साथ आप किन चुनौतीयों को छोड़ेंगे? वे किस तरह से प्रत्युत्तर करेंगे, आप क्या आशा कर सकते हैं?

क्या आप कुछ ऐसी जीवन की सच्ची घटनाओं, कहानियों या व्यक्तिगत अनुभवों को शामिल कर सकते हैं जो आपके उपदेश में जान डाल सकती है और कलीसिया के लिए इसे वास्तव में प्रसंगिक बना सकते हैं?

दो कारणों के लिए मैंने खामोशी तोड़ने और अपनी परिस्थिति को बताने का निर्णय लिया। पहला तो वास्तव में व्यक्तिगत था इस मायने में कि मैंने महसूस किया कि यदि मैं अपनी परिस्थिति के बारे में बात करता हूँ तो सटीक सूचना के साथ, स्वयं के बचाव व स्वयं की देखभाल के लिए सेवाओं के साथ लोग मेरी मदद करने की बेहतर स्थिति में रहेंगे। लेकिन दूसरा धार्मिक नेतृत्व की जिम्मेदारी से ज्यादा संबंधित थी। मुझे लगा कि यदि दोहरी पहचान के साथ जीवित रहा, तो जिन लोगों की मैं अगवाई करता हूँ, उनके लिए आदर्श उदाहरण नहीं रहूँगा, जबकि मैं इस बात को जानता हूँ कि सार्वजनिक जीवन में कुछ और हूँ और निजी जीवन में दूसरा कुछ और।

कैनन निडयन बयामुगिशा, INERELA+ के संस्थापक

1 एच.आई.वी. के साथ जीवित मसीह की देह

यह अध्ययन हमें कैसे बदल सकता है?

हम जानेंगे...

- हम सब मसीह की देह में एक हैं, एच.आई.वी. संक्रमण के साथ जीवित लोग एवं एच.आई.वी. संक्रमण के बिना लोग
- कि परमेश्वर भेदभाव नहीं करता और हमें भी नहीं करना चाहिए।

हम बनेंगे...

- ज्यादा समझ पायेंगे कि एच.आई.वी. से संक्रमित लोग कितने आसानी से स्वयं को अलग किया हुआ महसूस करते हैं
- एच.आई.वी. साथ जीवित लोगों की विशेष जरूरतों के विषय में जानकारी, जरूरी नहीं कि वे व्यवहारिक ही हों।
- कलीसियाई परिवार के भीतर दूसरों के लिए ज्यादा प्रेम।

हम कार्य करेंगे...

- इस बात को सुनिश्चित करने के लिए कि हम में से एच.आई.वी. के साथ जीवित लोगों की प्रतिभाओं, कौशल एवं अनुभवों से कलीसिया लाभ पाये
- एच.आई.वी. के विषय में हानिकारक रवैये को चुनौती देने के लिए
- हम में से एच.आई.वी. के साथ जीवित लोगों की व्यवहारिक, भावनात्मक एवं आत्मिक जरूरतों को पूरा करने के लिए कलीसिया के सकारात्मक प्रत्युत्तर को प्रोत्साहित करना।

पृष्ठभूमि की जानकारी

अपने सदस्यों एवं अगुवों के बीच एच.आई.वी. एवं एड्स की उपस्थिति के बारे अकसर कलीसिया अंजान बनी रहती है या उसे सिरे से नकारती है। इसका परिणाम है कि एच.आई.वी. और उसके प्रभावों के प्रत्युत्तर के विषय में अज्ञानता, अलगाव एवं दुःख पैदा होता है, जिससे मसीह के शरीर को हानि पहुँचती है।

एच.आई.वी. से अंजान बनने से भी ज्यादा हमारे सदस्यों के बीच यह गलत एवं बहुत ही हानिकारक विश्वास है कि एच.आई.वी. परमेश्वर की ओर से लोगों पर उनके जीवन जीने के तरीके के लिए सज़ा है।

संसार भर में लगभग 3 करोड़ 30 लाख लोग एच.आई.वी. के साथ जीवित हैं, और लगभग 1 करोड़ 15 लाख ऐसे बच्चे हैं जिन्होंने अपने माता पिता में से एक दोनों को एडस के कारण खो दिया है। संसार भर की लगभग प्रत्येक कलीसिया में एच.आई.वी. के साथ जीवित लोग मसीह की देह का हिस्सा हैं।

मार्गदर्शक के लिए सुझाव

एच.आई.वी. के साथ जीवित लोग मूल्यवान हैं और हमारी कलीसियाओं के महत्वपूर्ण सदस्य हैं और मसीह की देह के रूप में सहयोग करने के लिए जिनके पास बहुत कुछ है।
इस समूह में एच.आई.वी. वाले लोग भी हो सकते हैं। सामूहिक बाइबल अध्ययन में प्रयोग की जाने वाली भाषा संवेदनशील एवं सब को शामिल करने वाली हो। उदाहरण के लिए, 'हम में से एच.आई.वी. के साथ जीवित लोग' - न कि 'एच.आई.वी. से संक्रमित लोग'। यदि लोग अनुचित भाषा का प्रयोग करते हैं को उन्हें चुपचाप एक तरफ ले जा कर समझायें।
एच.आई.वी. के लिए और कलीसियाई परिवार में एच.आई.वी. के साथ रह रहे लोगों के प्रति अपनी कलीसिया के रवैये की जाँच करने में लोगों की मदद करें। कलीसिया के भीतर आदर्श स्थिति क्या है? इस जगह को और स्वागत करने वाला, गर्मजोशी, सहारेवाला एवं अपनापन लगने वाला बनाने के लिए क्या बदलाव की जरूरत है?

व्यवहारिक प्रतिक्रिया के लिए सुझाव

समूह की इस बारे में कल्पना करने में मदद करें कि उन सभी का एच.आई.वी. परीक्षण होगा – और उनमें से कुछ का परिणाम पॉजिटिव होगा। यदि इन लोगों में से हम वे हैं जो एच.आई.वी. के साथ जीवित हैं तो हम कैसे चाहेंगे कि कलीसिया एवं समाज इस बारे में कैसी प्रतिक्रिया करे? एच.आई.वी. के साथ जीवित हम में से लोगों का यीशु कैसे स्वागत करेगा एवं उन्हें कैसे सहारा देगा? (बीमारों, वेश्याओं, चुंगी लेने वालों, कोढ़ियों, या आंतरिक स्राव के साथ जीवित महिला के साथ यीशु के व्यवहार पर विचार करें)। हम में से एच.आई.वी. के साथ जीवित लोगों का कलीसिया कैसे स्वागत करता है, समझता एवं उन्हें सहारा देता है? इन भिन्नताओं व भेदभावों को उजागर करें एवं उन्हें बदलने व कम करने की ओर कार्य करें। यदि कोई भेदभाव नहीं है (क्या आप निश्चिंत हैं!) तो दूसरी कलीसियाओं की मदद करें।
हम में से एच.आई.वी. के साथ या तो जीवित लोगों या अपने परिवारों व दोस्तों के बीच उससे प्रभावित लोगों की विभिन्न जरूरतों पर ध्यान दें: वयस्क, बच्चे, देखभाल करने वाले, अभिभावक और दादा-दादी।

संदर्भ

www.avert.org/statistics.htm Averting HIV and AIDS
आज एच.आई.वी. के साथ जीवित लोगों की संख्या 1990 में 80 लाख से बढ़कर 330 लाख हो चुकी है, और अभी भी बढ़ रही है। लगभग 67% एच.आई.वी. के साथ जीवित लोग अफ्रीका के उप-सहारा प्रदेश में रहते हैं।
AVERT 2007

1 कुरिन्थियों 12:12-27

एच.आई.वी. के साथ जीवित मसीह की देह

मसीह की देह एच.आई.वी. से संक्रमित है। मसीह की देह भूख से तड़प रही है। मसीह की देह के पास कोई उचित घर नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब शरीर का एक अंग पीड़ित होता है, तो पूरा शरीर पीड़ा में होता है। कोई 'हम' या 'वे' नहीं हैं। हम सब प्रभावित हैं। हम सबके जीवन जुड़े हुए एवं आपस में बुने हुए हैं और हमें इस जुड़ाव की सोच पर कार्य करना चाहिए।

यह अनुच्छेद उन आत्मिक वरदानों का एक सुंदर व्याख्या है जिन्हें परमेश्वर ने अपनी कलीसिया को दिया है; ऐसे वरदान जो कि किसी व्यक्ति को दिये गये हैं लेकिन जिनका इस्तेमाल पूरी कलीसिया के लाभ लिए करना है।

विचार विमर्श

बाइबल के समय में...

1. अपने कई भागों से कलीसिया कैसे एक शरीर बनती है? क्या पद 12और 14 किसी एक कलीसिया की ओर इशारा करते हैं या सम्पूर्ण कलीसियाई परिवार की ओर-या दोनों?
2. यीशु के समय में यह कहना कितना विवादास्पद था कि परमेश्वर की नज़र में दास लोग स्वतंत्र लोगों के समान थे (पद 13)? यीशु ने ऐसा क्यों कहा?
3. मानव शरीर के सबसे महत्वपूर्ण हिस्से कौन से हैं? जब कोई एक हिस्सा क्षतिग्रस्त या दर्द में होता है तो बाकी शरीर पर क्या असर होता है?

एच.आई.वी. के समय में...

4. हमारी कलीसियाएं एक शरीर के रूप में एक साथ अच्छी तरह से क्यों कार्य नहीं कर पाते हैं?
5. पद 13 में यीशु के वचन उसके दिनों में दासों के प्रति भेदभाव को चुनौती देते हैं। आज वह हमें किस विषय पर चुनौती देगा जिस प्रकार से लोगों के भिन्न-भिन्न समूहों के बीच हम भेदभाव करते हैं?
6. क्या हम उन लोगों के साथ पहचान बना पाते हैं जो हमारी कलीसियाई देह में पीड़ित हैं?
7. यहूदी के स्थान पर एच.आई.वी. से पीड़ित लोग और यूनानी के स्थान पर एच.आई.वी. के बिना जीवित लोग लगा कर पद 13 को जोर से एक साथ पढ़ें। एक ही आत्मा में साझेदारी करने का क्या अर्थ है?
8. एक देह के समान कलीसिया की यह तस्वीर हमारी कलीसिया में एच.आई.वी. के साथ जीवित लोगों के साथ हमारे संबंधों के बारे में हमें कैसे चुनौती है ?
9. हम उनकी वास्तविकता को बेहतर रीति से कैसे समझ सकते हैं और उनकी समस्याओं और खुशियों में कैसे भागी बन सकते हैं ?
10. यदि बाकी और कलीसिया एक शरीर के रूप में जरूरतमंदों के साथ हमेशा ऐसा प्रत्युत्तर दे तो इसके परिणामस्वरूप प्रतिक्रिया क्या होगी ?

सीखने के लिए मुख्य बातें

- परमेश्वर के लोगों के रूप में हम सब एक देह हैं –उन वरदानों को एक दूसरे के साथ बांटना जो परमेश्वर ने दिये हैं – अपने फ़ायदे के लिए नहीं परन्तु पूरी कलीसियाई देह के फ़ायदे के लिए।
- जब परमेश्वर हमें देखता है तो वह सिर्फ हमें अनमोल बच्चों के रूप में देखता है – न कि गरीब और अमीर, न ही दास या स्वतंत्र, न ही एच.आई.वी. के साथ जीवित लोग या एच.आई.वी. के बिना जीवित लोग। हमें भी लोगों को उसकी नज़र से देखना चाहिए और एक दूसरे को बराबरी के साथ प्रेम करना चाहिए।

प्रार्थना के लिए विनतीयाँ

- प्रार्थना करें कि हमारी कलीसिया एक ऐसा स्थान हो जहाँ सभी आने वालों का स्वागत किया जाता है और जहाँ उनके लिए एक आशा है।
- ऐसे लोगों के लिए प्रार्थना करें जिन्हें महसूस होता है कि हमारी कलीसिया उनकी जरूरतों नहीं समझती।
- प्रार्थना करें कि संसार भर की कलीसिया आपसी समझ और ऐसा स्थान बनें जहाँ सब लोगों की जरूरते पूरी होती हैं।

पढ़ने के लिए अतिरिक्त अनुच्छेद
गलातियों 3:26-28 मसीह में हम सब एक हैं
लूका 10:27 अपने पड़ोसी को अपने समान प्यार करें

2 बीमारी और कष्ट को समझना

यह अध्ययन हमें कैसे बदल सकता है?

हम जानेंगे...

- कि बीमारी पाप के लिए परमेश्वर की सज़ा नहीं है, जिसमें एच.आई.वी. से संबंधित बीमारी भी शामिल है
- कि यीशु ने बीमारी के कारणों के बारे में नई सच्चाईयों को उजागर किया जो पुराने नियम वाली समझ से परे हट कर विकसित हुई
- परमेश्वर के प्रेम को बीमारी और कष्ट का अनुभव कर रहे लोगों को दिखाने हमारे लिए कितना अति आवश्यक है
- कि स्वयं डर लोग को बीमार बना सकता है (शापित होने के डर से जुड़ा हुआ)।

हम बनेंगे...

- दूसरों के प्रति और हम में से जो एच.आई.वी. के साथ जीवित हैं उनके प्रति ज्यादा दयावान
- स्वयं के प्रति ज्यादा दयावान एवं स्वयं को ज्यादा समझना (आत्म-ग्लानि पर विजय)
- बीमारी के कारणों के बारे ज्यादा जानकारी और जागरूकता
- हम में से एच.आई.वी. के साथ जीवित लोगों के ख़िलाफ़ शिकायत न करने वाले

हम कार्य करेंगे...

- यह पूछने के विपरीत कि व्यक्ति कैसे संक्रमित हुआ हम करूणामय सहारे के द्वारा प्रत्युत्तर देंगे
- आत्म-ग्लानि को चुनौती देंगे (ऐसी भावना कि हम बेकार हैं और लज्जा एवं पीड़ा के लायक हैं)
- बीमारी के कारणों एवं इलाज के विषय में सोचने के लिए आधुनिक एवं परम्परागत तरीकों की पहचान करना।

मार्गदर्शक के लिए सुझाव

उस सनसनीखेज और निर्णायक शिक्षण बिंदु पर ध्यान-केंद्रित करें जिसे यीशु बता रहा है: कि व्यक्ति का अंधापन पाप का परिणाम नहीं है – चाहे वह उसका या उसके माता-पिता का हो। निश्चित करें कि यह मुख्य बात सभी को स्पष्ट रूप से समझ आ गई है, क्योंकि कलीसिया के भीतर कई लोगों के लिए यह बहुत बड़ा ठोकर का कारण है।

व्यवहारिक प्रतिक्रिया के लिए सुझाव

बीमारी और इसके कारणों के विषय में परम्परागत धारणाओं की सूची बनाएं। चर्चा करें कि इस अनुच्छेद में यीशु की शिक्षा के संदर्भ में प्रत्येक धारणा को फिर से कैसे समझ सकते हैं। ऐसे अवसरों की पहचान करने के तरीकों को सोचें जहाँ आप लोगों की बातचीत में शामिल हो सकते हैं जब वे समाज या चर्च में बीमार लोगों के बारे में बातचीत करते हैं, और बीमारी के कारणों के परम्परागत धारणाओं को चुनौती दें।

संदर्भ...

www.godswordforyou.com/bible-studies/suffering कष्ट या पीड़ा पर बाइबल के पाँच अध्यन

www.Biblelight.org/suffer.htm

PILLARS: Responding more effectively to HIV and AIDS

By Tearfund – बाइबल अध्ययन 8 और 9

एच.आई.वी. सिर्फ तब फैलता है जब खून या शरीर का द्रव्य (माँ का दुध, वीर्य या महिलाओं का यौन द्रव्य) एच.आई.वी. वाले व्यक्ति के साथ मिल जाता है :

- यौन संबंध के दौरान (सबसे सामान्य कारण - 80% यौन संबंध के द्वारा फैलता है)

-गर्भधारण, शिशु जनने और स्तनपान के दौरान

-खून चढ़ाने के समय (खून की जाँच किये बिना)

-संक्रमित सूई को आपस में बांटने या संक्रमित चाकू या ब्लेड का उपयोग करने से

एच.आई.वी. छूने से नहीं फैलता – हाथ मिलाने से, गले लगाने से, शौचालयों से, थाली और प्याले को आपस में साझा करने से।

यूहन्ना 9 : 1-7

बीमारी और कष्ट को समझना

यीशु व्यवस्था एवं पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं की बातों को पूरा करने के लिए आया। अकसर पुराना नियम कष्ट को पाप के साथ जोड़ता है, फिर भी हमारे पास अय्यूब की कहानी यह दिखाने के लिए है कि धर्मी लोग भी बिना किसी कारण के कष्ट में हो सकते हैं। जब यीशु आया, तो उसके जीवन एवं वचनों ने परमेश्वर के मन का पूरा प्रकाशन हमें प्रदान किया है। इस अनुच्छेद में यीशु स्पष्ट रीति से कहता है कि जब हम बीमारी से पीड़ित व्यक्ति का सामना करते हैं, तो इस प्रकार से सोचना कि किस पाप के द्वारा उन्हें यह बीमारी लगी, सही प्रतिक्रिया नहीं है। इसके विपरीत वह कहता है कि बीमारी और पीड़ा, हमें, दूसरों की प्रेम में देखभाल व सेवा करने के मसीह के उदाहरण पर चलने का एक अवसर प्रदान करते हैं।

बाइबल के इस अध्ययन में हम यीशु द्वारा एक अंधे व्यक्ति की चंगाई वाली कहानी पर विचार कर रहे हैं और उस बात को सुनते हैं जिसे यीशु बीमारी एवं पीड़ा के कारणों के विषय में बता रहा है।

विचार-विमर्श

बाइबल के समय में...

1. कृपया कहानी को अपने शब्दों में फिर से बताएं।
2. चेले क्या विश्वास करते थे कि यह व्यक्ति के अंधेपन का कारण है ?
3. यीशु ने चेलों की समझ को किस प्रकार चुनौती दी ?
4. व्यक्ति की मदद करने के लिए यीशु ने क्या किया ?
5. अपनी चंगाई की प्रक्रिया में व्यक्ति ने स्वयं की कैसे मदद करी ?

एच.आई.वी. के समय में...

6. हमारे समाज में एच.आई.वी. एवं अन्य बीमारियों के विषय में कौन-कौन सी विभिन्न परम्परागत धारणाएँ हैं ?
7. यदि यीशु यहाँ पर आते तो आपको क्या लगता है कि इन धारणाओं के लिए वे क्या सोचते ?
8. क्या इन धारणाओं के कारण, हम में से जो एच.आई.वी. के साथ जीवित हैं आत्म-ग्लानि के साथ कलंक और निंदा का सामना भी करते हैं ?
9. जब हम एच.आई.वी. के साथ जीवित लोगों से मिलते हैं, तो कौन सा प्रश्न पूछना उचित होगा: 'आपको एच.आई.वी. संक्रमण कैसे लगा ?' या 'एच.आई.वी. से निपटने के लिए हमारे समाज में एक दूसरे की मदद कैसे कर सकते हैं ?'
10. हम यीशु के उदाहरण का पालन और इस बीमारी के विषय में नई समझ का प्रयोग किस प्रकार कर सकते हैं : जिससे कि हम एक दूसरे के प्रति ज्यादा दयावान बने और एक दूसरे पर उँगली न उठाएं। (यीशु ने दया की और हमें सिखाया कि हम दूसरों पर दोष न लगाएं)।

सीखने के लिए मुख्य बातें

- अकसर बीमारी किसी विशेष पाप के परिणाम स्वरूप नहीं होती।
- यीशु ने हमें बताया कि हम दूसरों पर दोष न लगाएं।

प्रार्थना के लिए विनतीयाँ

- प्रार्थना करें कि लोगों के जीवनों में पाप के परिणामों के विषय हमारी सोच में पूरी रीति से हृदय परिवर्तन हो सके।
- उन लोगों के लिए प्रार्थना करें जो कलीसिया के प्रत्युत्तर के कारण दुःखी हैं क्योंकि उनकी एच.आई.वी. बीमारी, उनकी पीड़ा और उनके व्यवहारिक समस्याओं के लिए कलीसिया उनकी निंदा करती है।
- प्रार्थना करें कि हम यीशु के कार्य को करने की चुनौती के साथ जीवित रह सकें और उसकी ज्योति एवं उसके प्रेम को दूसरे को दिखा सकें।

पढ़ने के लिए अतिरिक्त अनुच्छेद

उत्पत्ति 9 :12-16 सब जीवित प्राणियों को फिर से नष्ट न करने के लिए परमेश्वर ने वाचा बाँधी।
इब्रानियों 9 :15 यीशु नई वाचा ले कर आता है, हमें हमारे पापों से छुटकारा देने के लिए मरता है।
अय्यूब 3 अय्यूब ऐसा धर्मी पुरुष है जिसे अपने दुःख का कारण समझ में नहीं आ रहा है।
मत्ती 9 :35-38 यीशु ने उन सब लोगों पर तरस खाया जिनके पास ढेरों समस्याएं थीं।

3 मसीही एवं विशिष्ट दृष्टिकोणों को समझना

यह अध्ययन हमें कैसे बदल सकता है?

हम जानेंगे...

- और समझेंगे कि वास्तव में एच.आई.वी. कैसे फैलता है
- सभी परिस्थितियों में परमेश्वर की सच्चाई खोजने के लिए बाइबल पर जोर
- एच.आई.वी. से संबंधित गलत मिथक व परम्पराओं को नज़रंदाज़ करने के खतरे को

हम बनेंगे...

- इस बात से और ज्यादा अवगत होंगे कि 'सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा' (यूहन्ना 8 :32)
- मिथक के बजाय सत्य को खोजने एवं उस पर कार्य करने के प्रति ज्यादा सावधान।

हम कार्य करेंगे...

- हानिकारक मिथकों एवं परम्परागत इलाजों के प्रति जागरूकता को बढ़ाना
- इस बात को निश्चित करेंगे कि हमारा जीवन दूसरों को हानि न पहुंचाये
- उन लोगों के जीवनों को बचाना जिनका जीवन खतरनाक एवं हानिकारक मिथकों एवं प्रथाओं के कारण खतरे में है

पृष्ठभूमि की जानकारी

एच.आई.वी. से संबंधित कई सारे हानिकारक मिथक एवं प्रथाएं हैं। कुछ तो बिल्कुल ही हानिकारक हैं; अन्य खतरनाक हैं और लोगों के जीवनों को खतरा पहुंचा सकते हैं। एच.आई.वी. के लिए परमेश्वर ने वैज्ञानिकों को पर्याप्त समझ दी है और हमारा यह कर्तव्य बनता है कि एच.आई.वी. के विषय में विश्वसनीय एवं प्रमाणित सूचना को प्राप्त करें और उसे समझें। नीचे दी गई सूची कुछ आम मिथकों को दर्शाती है। विभिन्न समुदायों में कई और भी प्रचलित हैं।

मिथक या प्रथा	सच्चाई	मिथक या प्रथा का प्रभाव
कुंवारी के साथ सोने से एच.आई.वी. से चंगाई मिलती है	एच.आई.वी. के लिए कोई इलाज नहीं है	किशोर लड़कियों और यहां तक कि शिशु को भी लम्बे समय तक शारीरिक एवं मानसिक क्षति पंहुचती है
100 औरतों के साथ सोने से एच.आई.वी. से चंगाई मिलती है	एच.आई.वी. के लिए कोई इलाज नहीं है	एच.आई.वी. के फैलने एवं अन्य यौन संचारित रोगों के लगने का बहुत बड़ा खतरा होता है। धोका देना
कई महिलाओं के साथ यौन संबंध	परमेश्वर ने यौन को इस तरह	बहुत संभव है कि शादी के समय

बना कर आप दिखा सकते हैं कि आप असली पुरुष हैं	बनाया कि इसका आनंद वफादार विवाह के संबंध में ही लिया जाये	पुरुष को एच.आई.वी. की बीमारी हो।
निरोध का इस्तेमाल आपको कमजोर बनाता है	निरोध गर्भधारण को रोकता है और एच.आई.वी. एवं अन्य यौन संचारित बीमारियों से बचाव करता है	और ज्यादा अनचाहा गर्भाधारण, एच.आई.वी. एवं यौन संचारित रोगों का फैलना
महिलाओं को 'शुद्ध' रखने के लिए उनके जननांग को काटना) महिला जननांग विकृत करना FGM (	विश्व स्वास्थ्य संगठन ने पाया है कि महिला जननांग काटने से कोई भी स्वास्थ्य लाभ नहीं होता और लड़कियों एवं महिलाओं को कई मायनों में हानि पहुँचाता	महिला जननांग काटने से शारीरिक क्षति, एचआईवी संक्रमण का खतरा में वृद्धि होती है। यह जटिलताओं को पैदा कर सकते हैं और इसके संक्रमण के कारण बांझपन हो सकता है। इससे प्रसव जटिलताओं और नवजात शिशु मौतों का खतरा बड़ जाता है। (WHO)

महिलाओं के जननांगों के काटना हानिकारक होता है और बचपन एवं बाद के जीवन में बहुत दर्द और स्वास्थ्य एवं प्रजनन को क्षति पहुंचाता है, और यह स्वास्थ्य के लिए कतई लाभकारी नहीं है (WHO)। शारीरिक क्षति एच.आई.वी. संक्रमण के खतरे को भी बढ़ाता है।

मार्गदर्शक के लिए सुझाव

- हमारे समाज में कौन-कौन से मिथक एवं प्रथाएं हैं उनकी चर्चा करें। उनका परिणाम क्या है?
- हमारे देश में ही एच.आई.वी. पर सबसे विश्वसनीय सूचना हमें कहाँ मिल सकती है? इसे हम प्रभावशाली तरीके से कैसे बांट सकते हैं?
- शरीर को गोदने या चेहरे की सजावट या पुरुष खतना के दौरान एचआईवी के फैलने के जोखिम को हम कैसे कम कर सकते हैं?

व्यवहारिक प्रतिक्रिया के लिए सुझाव

इन बातों पर ध्यान केंद्रित करें: विश्वसनीय सूचना को प्राप्त एवं प्रभावशाली रीति बांटना और हमारे समुदायों में हानिकारक एवं खतरनाक मिथकों एवं प्रथाओं को चुनौती देना।

संदर्भ

www.avert.org

www.unaids.org

www.int/mediacentre/factsheets

निर्गमन 32:1-20

यूहन्ना 14:15-17

मसीही एवं विशिष्ट दृष्टिकोणों को समझना

इस्राएलियो को मूसा ने लाल समुद्र और मरूस्थल को सुरक्षित पार करा कर मिस्र की दासता से छुड़ाकर उनकी अगवाई करी, जिसमें परमेश्वर ने उन्हें मन्ना व पानी दिया और दिन में बादल और रात को आग के खंबे द्वारा उनकी अगवाई करी (निर्मगन 13:21-22)। इस तरह उन लोगों ने परमेश्वर की उपस्थिति के कई आश्चर्यपूर्ण चिन्हों द्वारा उनकी अगवाई को देखा। फिर परमेश्वर ने मुसा को उससे सीधे बात करने के लिए सीने पर्वत पर बुलाया और उसको दस आज्ञाएं, व्यवस्था और अराधना नियम दिए।

विचार-विमर्ष

बाइबल के समय में...

1. मूसा ने हारून को महायाजक का अधिकार दिया था। वह उस बात के लिए क्यों इतनी जल्दी तैयार हो गया जो इस्राएली चाहते थे?
2. किस प्रकार के तनाव या परेशानी ने उन्हें वापस उन पुराने रीति-रिवाजों और झूठे देवी-देवताओं को पूजने के लिए मजबूर कर दिया?
3. इस नए और जल्द उपलब्ध भगवान के प्रति इस्राएलियों की क्या प्रतिक्रिया थी?
4. अपने पुराने मार्ग पर चलने से लोगों ने क्या खोया और उनके चुनाव के कारण उनके समुदाय को क्या दुःख और नुकसान उठाना पड़ा?
5. परमेश्वर के क्रोध के परिणाम क्या हुए?
6. मूसा ने लोगों को उस मुर्ति की धूल पीने के लिए क्यों कहा? (पद 20)

एच.आई.वी. के समय में...

7. क्या हमारे अगवे उदाहरण बनकर अगवाई करते हैं या फिर उसके द्वारा जिसे वे जानते हैं कि लोग इस बात को चाहते हैं? दोनों के कुछ उदाहरण और उसके परिणाम दीजिए?
8. आजकल किस प्रकार के मूर्तियों की पूजा होती है, परमेश्वर के स्थान में या फिर उसके साथ-साथ? (उदाहरण के लिए, पैसा) उसके परिणाम क्या होते हैं?
9. आजकल के मसीह लोगों में, किस प्रकार के मिथक, रीतिरिवाज जड़ पकड़े हुए हैं?

10. क्या कोई ऐसे उपयोगी, लाभदायक सांस्कृतिक रीतिरिवाज हैं जो प्रेम और सेवा के मसीही मूल्यों को बढ़ावा देते हैं?
11. नुकसानदायक मिथक और रीतिरिवाजों के कुछ उदाहरण सोचिए। कैसे हम इनमें सत्य की कमी को दर्शा सकते हैं?
12. परमेश्वर का सलाहकार, पवित्र आत्मा इस बात को जांचने में कैसे हमारी सहायता कर सकता है कि क्या सच है और क्या झुठ? क्या हम कुछ उदाहरणों को बांट सकते हैं?
13. हम लोगों की इस बात को देखने में कैसे सहायता कर सकते हैं कि सत्य वास्तव में स्वतंत्र करता है (यूहन्ना 8:32)?

सीखने के लिए मुख्य बातें

- अपने द्वारा अनुभव किये गए उन सभी आश्चर्यजनक चिन्हों को देखने (दस महामारी, लाल समुद्र को पार करना, मरूभूमि में पानी व मन्ना का मिलना) और मूसा जैसे एक मजबूत, साहसी और धर्मी अगुवा होने के बावाजूद भी इस्राइली लोग अपने पुराने रीतिरिवाजों और झुठे देवताओं की अराधना करने के लिए बहुत जल्द लौट गए।
- सत्य को स्थापित करने और हानिकारक मिथकों एवं रीतिरिवाजों की निंदा करने के लिए कलीसिया के अगुवों को आवाज़ उठानी चाहिए ताकि उनकी शक्ति से स्वतंत्र होने के लिए लोग आत्मविश्वास को पा सकें।
- वे जो अगुवाई की भूमिका में हैं उन्हें अपने भाई-बहनों को सीखना चाहिए, यदि वे जानते हैं कि लोग गलत सूचना पर विश्वास कर रहे हैं, विशेषकर एचआईवी के बारे में।

प्रार्थना के लिए विनतीयाँ

- प्रार्थना करें कि हम सब उन मिथकों और रीतिरिवाजों को नई नजर से देखें जिनको हमने बचपन से सीखा और जो अभी भी हमारे अंदर जड़ पकड़ कर बैठी हैं, खासतौर पर तनाव के समय में।
- प्रार्थना करें कि हमारे राजनैतिक और कलीसिया के अगुवे सत्य बोलने और गलत शिक्षाओं की निंदा करने में ईमानदारी और साहस का परिचय दें।
- प्रार्थना करें कि सही मार्ग को खोजने में पवित्र आत्मा हमेशा हमारा मार्गदर्शक बने।

पढ़ने के लिए अतिरिक्त अनुच्छेद

गलतियों 5:1 मसीह में स्वतंत्रता

यूहन्ना 8:32 सत्य तुम्हे स्वतंत्र करेगा।

दुनिया भर में 10 से 14 करोड़ लड़कियाँ और महिलाएं गुप्तांगों से होने वाले नुकसान का सामना करते हैं, जिसमें अधिकतर अफ्रीका में हैं।

WHO Factsheets

---

4 चंगाई और एंटरिट्रोवाइरल इलाज (ए.आर.टी.)

यह अध्ययन हमें कैसे बदल सकता है?

हम जानेंगे...

- चंगाई और इलाज के बीच अंतर
- कि परमेश्वर के आश्चर्यकर्म विभिन्न प्रकारों से अलग-अलग समयों में अलग-अलग प्रकार के लोगों के साथ होते हैं।
- कि ए.आर.टी. परमेश्वर का एक चमत्कारिक प्रबंध है, कई प्रार्थनाओं का असर कि परमेश्वर डाक्टरों को एच.आई.वी. के इलाज का तरीका खोजने में मदद करे।
- ए.आर.टी. के साथ बने रहना क्यों महत्वपूर्ण है, यहाँ तक कि तब भी जब लोग अच्छा महसूस करते हैं।

हम बनेंगे...

- विश्वास करने के लिए, यह विश्वास कि इलाज और प्रार्थना प्रभावकारी है।
- इस सत्य के प्रति अपने मनों को खोलें कि जो परमेश्वर वैज्ञानिक खोज के पीछे है वही परमेश्वर आत्मिक चंगाई के पीछे भी है।
- इस बात को समझने के योग्य बनेंगे कि सभी चंगाई परमेश्वर की ओर से आती है।

हम कार्य करेंगे...

- साहस के साथ एच.आई.वी. के लिए स्वैच्छिक परामर्श और परीक्षण को हम बढ़ावा देंगे और कोशिश करेंगे।
- प्रार्थना के साथ-साथ इलाज जारी रखेंगे।
- दूसरे लोगों को परीक्षण व इलाज करवाने एवं उसे जारी रखने के लिए उत्साहित करेंगे।
- शरीर दिमाग एवं आत्मा के लिए स्वस्थ, सकारात्मक जीवनशैली बढ़ावा देंगे।

पृष्ठभूमि की जानकारी

समझाएं कि एआरटी में क्या शामिल है? समझाएं कि एआरटी को जारी रखना कितना महत्वपूर्ण है, तब भी जब आप बेहतर महसूस कर रहे हों। यदि हम एआरटी को बंद कर देंगे तो हम दुबारा बीमार पड़ जाएंगे और अगली बार दवाएं ठीक असर करेगी।
ना केवल जिन्हें एच.आई.वी. होने का संदेह है, लेकिन हम में से सभी को स्वेच्छा से इसके परामर्श और परीक्षण के लिए जाना चाहिए। केवल तभी लोग इस बात को सुनिश्चित करने के लिए चिकित्स्य सलाह प्राप्त कर पाएंगे कि वे अच्छे स्वास्थ्य में बने रहें- और यदि आवश्कता पड़े तो एआरटी को प्राप्त करें।
एआरटी में काफी प्रभावशाली दवाओं को लेना शामिल होता है जिससे उल्टी व चक्कर आ सकता है। खूब पानी पीने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करना मदद कर सकता है। अदरक के साथ, पुदीना या दालचीनी के साथ साधारण चाय भी उपयोगी है, लेकिन हर्बल इलाज से बचें क्योंकि यह एआरटी इलाज में रुकावट डाल सकता है।

मार्गदर्शक के लिए सुझाव
सुनिश्चित करें कि लोग इस बात को अच्छी तरह से समझ जाएं कि विश्वास की चंगाई और चिकित्स्य चंगाई दोनों आपस में जुड़े हुए हैं-ये एक दूसरे के विपरीत नहीं हैं।
इन दोनों बातों में बहुत बड़े फर्क को समझाएं-एच.आई.वी. वाले लोगों के चंगाई के लिए प्रार्थना के साथ पूरी तरह से चिकित्सा सेवा भी लेने को प्रोत्साहित करना--और इस झूठ को लोगों से बोलना कि परमेश्वर पर विष्वास करो वो ठीक करेगा, एआरटी दवाई लेना परमेश्वर पर विश्वास की कमी को दिखाता है।
जबकि जीवाणु अभी भी शरीर में हो सकता है, हम शारीरिक आत्मिक और भावनात्मक स्वास्थ्य में चंगाई पा सकते हैं। प्रार्थना और इलाज दोनों पूर्ण चंगाई प्राप्त करने के लिए बेहद जरूरी है।

व्यवहारिक प्रतिक्रिया के लिए सुझाव
ऐसे व्यक्ति से जो एच.आई.वी. के साथ जीवित है और उस पर खुल कर बोल सकता है और जो एआरटी को ले रहा कि वह अपनी दवाओं को लाये और दवाओं, इनके विपरीत प्रभाव एवं लाभ को समझाए।
एआरटी की उपलब्धता और जारी रहने वाली आपूर्ति के लिए स्थानीय परिस्थिति की पूर्ण जानकारी को प्रोत्साहित करें। एआरटी दवाओं की उपलब्धता अलग अलग देशों व क्षेत्रों में बहुत ही अलग-अलग है। यदि एआरटी हर किसी को मुफ्त में उपलब्ध नहीं है, तो इस बात पर विचार कीजिए कि कलीसिया इसको उपलब्ध कराने में क्या कदम उठा सकती है ।

संदर्भ
www.avert.org/treatment.htm
www.unaids.org/en/PolicyAndPractice/HIVTreatment

विकासशील देशों में, 1 करोड़ लोगों को जीवनदायक एआरटी की तत्काल जरूरत है; इनमें से केवल 30 लाख (31%) लोग ही इस दवा को प्राप्त कर रहे हैं। (Avert)

2 राजा 5:1-15

चंगाई और एंटीरेट्रोवाइरल थैरेपी (एआरटी)

यह कहानी कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण व 'बड़े' लोगों पर केंद्रित है--नामान, जो कि आराम के राजा और इस्राइल के राजा का एक महान सेनापति है। फिर भी नम्र लोग, यानि दास लोग ही परमेष्वर के कार्य को देख और समझ पाते हैं और नामान की समझ को बदलने के लिए इन लोगों का इस्तेमाल किया गया। नामान की अपेक्षा के अनुरूप परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता एलीशा उसे चमत्कारी चंगाई प्रदान नहीं करता है। इसके विपरीत नामान को नम्र होना पड़ता है और साधारण एवं व्यवहारिक चंगाई को स्वीकार करना पड़ता है जिसमें उसे भी भागीदारी करनी है।

विचार-विमर्ष

बाइबल के समय में...

1. इस कहानी में कौन-कौन से चरित्र हैं और उनसे हम क्या सीखते हैं?
2. एक इस्राएली गुलाम लड़की किस प्रकार नामान की सहायता करती है? क्या इससे पहले किसी ने नामान की बीमारी को स्वीकार किया था?
3. नामान, किस प्रकार की चंगाई की उम्मीद एलीशा भविष्यद्वक्ता से कर रहा था?
4. पहले पहल नामान, एलीशा की सलाह को क्यों मानना नहीं चाहता था?
5. नमान के सेवक ने उसकी मदद कैसे करी?

एच.आई.वी. के समय में...

6. क्या इस कहानी में पाये जाने वाले लोगों के समान हमारे बीच में भी ऐसे लोग हैं? परिक्षण एवं इलाज करवाने को जाने के लिए लोगों को कौन प्रोत्साहित करता है? लोगों को निरंतर अपना एआरटी लेने में कौन मदद करता है?
7. किस प्रकार का इलाज और चंगाई परमेश्वर ने उन लोगों को प्रदान करी है जो हम में से एचआईवी के साथ जी रहे हैं?
8. इलाज और प्रार्थना को जारी रखना क्यों तब भी जरूरी है जब हम बेहतर महसूस करने लगते हैं?
9. जीवन लम्बा जीने, ज्यादा स्वस्थ जीवन और एचआईवी संक्रमण से स्वयं एवं दूसरों को बचाने के लिए कौन सा व्यवहार हम सब की एवं एचआईवी के साथ जीवित लोगों की मदद कर सकता है?
10. हम में से जो एचआईवी के साथ जी रहे है उनके स्वास्थ्य एवं चंगाई को बढ़ावा देने के लिए परमेश्वर हमसे जो उसकी कलीसिया है क्या चाहता है?

सीखने के लिए मुख्य बातें

- एआरटी के खोज ने मृत्यु की सज़ा को जो एचआईवी और एडस के साथ जुड़ी थी हटा दिया है।
- इलाज और प्रार्थना के द्वारा अच्छे स्वास्थ्य को पाना संभव है चाहे भले ही एचआईवी हमारे शरीर में रहे।
- चंगाई इलाज से भिन्न है। ऐसा कोई भी वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है कि एचआईवी पोजिटिव से एचआईवी निगेटिव हुआ हो (अर्थात एचआईवी से पूर्ण चंगाई)। परमेश्वर के चमत्कार भिन्न-भिन्न रूपों में भिन्न-भिन्न लोगों के लिए होता है। हमने परमेश्वर से प्रार्थना की है कि वह डाक्टरों को एचआईवी के इलाज का समाधान दिखाए। एआरटी परमेश्वर का आश्चर्यजनक प्रबंध है जो अब कई लोगों को उपलब्ध है।
- हम में से जो अच्छे से जानते हैं या शंका है कि उन्हें एचआईवी है वे इस बात की पूरी जिम्मेदारी लें कि उसे दूसरों तक न फैलाएं। हम में से जिनको एचआईवी नहीं है वे इस बात की पूरी जिम्मेदारी लें कि उन्हें यह बीमारी न लगे।

प्रार्थना के लिए विनतीयाँ

- प्रार्थना करें जो लोग हमारे समुदाय में चिकित्स्य सेवा कर रहे हैं वे जरूरतमंदों की मदद करने में निपूर्णता, दया, ज्ञान एवं समानता दिखायें। विशेषकर चिकित्स्य सेवा में कार्यरत मसीहों एवं पर्याप्त संसाधनों के लिए प्रार्थना करें ।
- एक कलीसिया के रूप में हमें लोगों के साथ मिलकर प्रार्थना करना चाहिए और एचआईवी के साथ जीवित लोगों को एआरटी अपनाने और जारी रखने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए।
- अंत में, पृथ्वी पर सारे दुखों को खत्म करने और अपने साथ हमें अनंत जीवन में लाने से, परमेश्वर हम सबको मृत्यु के द्वारा चंगाई देता है।

पढ़ने के लिए अतिरिक्त अनुच्छेद

यहजेकेल 37:1-14 एक साथ शारीरिक और आत्मिक चंगाई

यूहन्ना 5:1-8 एक अपंग व्यक्ति चंगाई की प्रक्रिया में व्यक्तिगत जिम्मेदारी लेता है।

व्यवस्थाविवरण 29:29 हमें और आने वाली पीढ़ी को आशिषित करने के लिए परमेश्वर नई चीजों को दिखाता है।
।

5 कलंक, भेदभाव और इनकार

यह अध्ययन हमें कैसे बदल सकता है?

हम जानेगे ...

- और समझेगे कि एचआईवी के फैलने में कलंक, भेदभाव और इनकार का क्या नतीजा होता है।

हम बनेंगे...

- कलंक, भेदभाव और इनकार के मूद्दों को संबोधित करने के द्वारा एचआईवी के साथ जीवित लोगों एवं उनके परिवार सदस्यों की देखभाल और सहायता करने के योग्य बनेंगे।

हम कार्य करेंगे...

- एचआईवी के साथ जीवित लोगों और उनके परिवारों के लिए बिना शर्त का प्रेम, देखभाल एवं दया को प्रोत्साहित करेंगे।

पृष्ठभूमि की जानकारी

तीन मुख्य कारक--**कलंक ,भेदभाव** और **इनकार** -- पूरे संसार भर में एचआईवी के फैलने में योगदान देती हैं।
कलंक का मतलब है, बदनामी या शर्म का बोध होना। यह तब दिखाई देता है जब एचआईवी के साथ जीवित लोगों का उनके परिवार सदस्यों, पड़ोसियों, सहकर्मीयों एवं समुदायों द्वारा अस्वीकार, निंदा और बहिष्कार किया जाता है।
भेदभाव का मतलब है, पुर्वाग्रह से ग्रस्त या गलत जानकारी के कारण किसी व्यक्ति के साथ को अन्यायपूर्ण व्यवहार करना; उदाहरण के लिए, विभिन्न जाति या धर्म के लोग, या एचआईवी के साथ जीवित लोग।
इनकार का मतलब है, जो बात सच है स्पष्ट तथ्यों के बावजूद उसको मानने से मना कर देना, (जैसे कि, किसी के परिवार में या समुदाय में एचआईवी की मौजुदगी से इनकार करना)।

एचआईवी और एड्स के साथ जुड़े बहुत ज्यादा कलंक के कारण, एचआईवी के साथ जीवित कई लोग अपने परिवार सदस्यों, दोस्तों, सहकर्मियों, स्वास्थ्य कर्मियों और विश्वासी समुदाय से भेदभाव को सहन करते हैं। इसके कारण एचआईवी की वास्तविकता से बहुत बड़े स्तर पर इनकार किया जाता है। यदि लोग एचआईवी की व्सतविकता को अस्वीकार करते हैं, तो उनके परिक्षण और सूरक्षित उपायो को प्रयोग करने की समभावना भी कम हो जाती है। अकसर महिलाओ को सबसे ज्यादा भेदभाव सहना पडता है और उन पर एचआईवी-पॉज़ीटीव होने का उन पर गलत तरीके से इलजाम लगाया जाता हैं (चाहे भले ही पति उस एचआईवी का स्रोत रहा हो)।

मार्गदर्शक के लिए सुझाव

उन व्यवहारिक तरीकों पर ध्यान दें, जिसमें एचआईवी के साथ जीवित लोग हमारी कलीसियाओं एवं समुदायों में कलंक और भेदभाव का अनुभव करते हैं। इस बात की जांच करें कि हम पर, दूसरो पर और उनके परिवारों पर उसका क्या प्रभाव पड़ता है।

हमारी कलीसियाओं और परिवारों में एचआईवी होने की बात को इनकार करने के बारे में क्या आप जानकारी रखते हैं? इस प्रकार के इनकार को हम चुनौती और खुल्लेपन को प्रोत्साहन कैसे दे सकते है?

व्यवहारिक प्रतिक्रिया के लिए सुझाव

अपनी कलीसियाओं एवं समुदायों में कलंक, भेदभाव और इनकार के परिणाम के बारे में समझने में मदद करें।
-और इनमें से प्रत्येक के साथ निपटने के लिए विचार विमर्श करें।

संदर्भ

Positive Voices: Religious leaders living with or personally affected by HIV and AIDS Called to Care series No 1, Strategies for Hope Trust, Oxford 2005

यूहन्ना 8:1-11

कलंक, भेदभाव और इनकार

यह कहानी झोपड़ियों के पर्व के बाद मंदिर में घटती है। फरीसी लोग और व्यवस्था के शिक्षक यीशु को फंसाने एवं बदनाम करने के लिए इस स्त्री को उसके पास लाते हैं।

विचार विमर्श

बाइबल के समय में...

1. इस कहानी में मुख्य लोग कौन हैं?
2. यह कहानी वास्तव में किस के बारे में है?
3. इस अनुच्छेद का पद 4 बताता है कि इस 'स्त्री को व्यभिचार करते हुए पकड़ा गया था।' क्यों, इसलिए, क्या सिर्फ अकेले स्त्री को ही, और उस पुरुष को क्यो नही जो उस स्त्री के साथ था जिसे व्यविचार का दोषी माना गया और यीशु एवं लोगों की भीड़ के सामने लाया गया?
4. यीशु ने इस रीति से ऐसा उत्तर क्यों दिया?
5. फरीसी लोग और व्यवस्था के शिक्षक क्यों चले गए?

एचआईवी के समय में...

6. यदि हमारे समाज में, किसी विवाहित महिला को उसके पति से पहले एचआईवी परिक्षण में पाज़ीटीव पाया जाता है, तो उसके पति एवं परिवार के सदस्यों द्धारा उसके साथ कैसा व्यवहार किया जाता है?
7. एचआईवी के साथ जीवित गर्भवती महिला के प्रति उसके गर्भावस्था और बच्चे होने के समय में अच्छा चिकित्स्य देखभाल पाने के अवसर को समाज का रवैया कैसे प्रभावित करता है?
8. यह रवैया शिशु के जन्म के समय, बच्चे को मां से एचआईवी होने की संभावना को कैसे प्रभावित करता है?

सीखने के लिए मुख्य बातें

- दूसरो पर दोष लगाने में तत्पर न रहे, क्योकि हम सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महीमा से रहित हैं। रोमियो 3: 23-24
- अकसर एचआईवी को फैलाने का दोष महिलाओं को दिया जाता है क्योंकि अकसर उन्हे ही सबसे पहले अपने एचआईवी स्थिति का पता चलता है परंतु हो सकता है किउन्हे यह बीमारी उनके पति से मिली हो।
- एक मसीह होने के नाते हमारी ये जिम्मेदारी है कि हम कलंक, भेदभाव और इनकार को चुनौती देने के लिए प्रभावशाली कदम उठायें।
- गर्भावस्था या शिशु के जन्म के समय देखभाल जैसी चिकित्सा सेवा की प्रभावकारिता एचआईवी पाजीटीव माता के प्रति कलंक न होने पर बहुत हद तक निर्भर करता है।

प्रार्थना के लिए विनतीयाँ

धन्यवाद दें कि यीशु इस संसार में उसको बचाने के लिए आया, न कि दण्ड की आज्ञा देने। एक नये जीवन की शुरूआत करने के लिए इस स्त्री के समान हम सब को भी उद्धार पाने की जरूरत है।

पढ़ने के लिए अतिरिक्त अनुच्छेद

यूहन्ना 4:1-26 यीशु और सामरी स्त्री

यूहन्ना 5:1-15 यीशु एक लकवे के मारे हुए व्यक्ति को चंगा करता है।

6 आत्मग्लानि

यह अध्ययन हमें कैसे बदल सकता है?

हम जानेगे...

- और समझेंगे कि आत्मग्लानि के खिलाफ लड़ने की विधि को कैसे विकसित करें, और सकारात्मक जीवन जीने को कैसे प्रोतसाहित करें।

हम बनेंगे...

- ऐसे लोग जो कि आत्मग्लानि के साथ जीवित लोगों के साथ खड़े रहने और उन लोगों में नम्रता के साथ आत्मविश्वास को उत्साहित करने की समझ दी गई है
- एचआईवी संक्रमण वाले व्यक्तियों के साकारात्मक कल्याण को बड़ावा देने के योग्य बन सकेंगे।

हम कार्य करेंगे...

- यीशु मसीह के करूणामय प्रेम को दिखाकर आत्मग्लानि से पीड़ित लोगों के आत्मसम्मान को हम फिर से स्थापित करेंगे।
- समाज में अन्याय से लड़ कर परमेश्वर के लोगो के बीच में हम बेहतर समझ और समानता को विकसित करेंगे।

पृष्ठभूमि की जानकारी

आत्मग्लानी एक भावना है कि किसी विशेष कारण से लोग आपको नजरअंदाज कर रहे हैं या फिर आप पर 'दोष' लगा रहे हैं। यह कुछ इस प्रकार से है यदि हम किसी रीति से 'अयोग्य' हैं तो इसके लिए हम ही दोषी हैं। इसका परिणाम आत्मविश्वास की कमी, मानसिक यातना और यह जीवन को भरपूरी से जीने एवं वह सब कुछ बनने से हमें रोक देती है, जिसके लिए परमेश्वर ने हमें बनाया है। एचआईवी के साथ जीवित रहने के संदर्भ में यही आम एवं सामान्य प्रतिक्रिया है।

मार्गदर्शक के लिए सुझाव

मार्गदर्शक द्वारा पुराने नियम में 'अशुद्ध' की परिकल्पना को समझाये जाने की जरूरत है (देखें लैव्यवस्था अध्याय 15)। 'अशुद्धता' या 'अपवित्रता' का अर्थ है दुसरे लोगों की 'पवित्रता' को स्पर्श के द्वारा खतरे में डालना। 'अशुद्ध' या 'अपवित्र' वस्तु या लोगो को पवित्र स्थान या लोगो से अलग और दूर रखा जाना चाहिए। अशुद्धता और अपवित्रता पाप से या फिर प्राकृतिक रूप से जैसे शरीर की द्रव्यों, बच्चे का जन्म, बीमारी या किसी मृतक को छुने से हो सकती है।

अशुद्ध लोगों के प्रति यीशु की प्रतिक्रिया को जांचे (जैसे कोढ़ी लोगों के साथ, उस स्त्री के साथ, जिसका लहू बहता था या जो मर गये थे)।

समूह के लोगों के साथ बहुत संवेदनशील रहें क्योंकि हो सकता है कि उनमें से कुछ कई कारणों से आत्मग्लानी का अनुभव कर रहे हों, जिसमें एचआईवी भी शामिल है।

व्यवहारिक प्रतिक्रिया के लिए सुझाव

जब लोगों को अपने शरीर में एचआईवी होने के बारे में पता चलता है तो हम उन लोगों की भावनाओ को कैसे समझ सकते है? इस जानकारी को लेकर आशा के साथ प्रतिक्रिया देने में हम लोगों की कैसे सहायता कर सकते है? हम में से कुछ तो प्राकृतिक रूप से परामर्शदाता हैं--हम सुनने के बजाय जल्दबाजी में सलाह देने लगते हैं। सलाह परामर्श में किस प्रकार हम निपूर्ण बन सकते हैं?

जिनको समाज 'अशुद्ध' कहती थी उनके प्रति यीशु के व्यवहार को सीखने के द्वारा लोगों के आत्मसम्मान को स्थापित करने पर अपना ध्यान केन्द्रित करें।

यूहन्ना 4:1-26

अत्मग्लानि

यीशु ने जानबूझकर सामरिया से होकर गलील जाने वाले रास्ते को चुना। दूसरे यहूदी लोग इस मार्ग को नही लेते थे क्योंकि यहूदियों और सामरियों के बीच अच्छे संबंध नहीं थे। वे लोग लम्बा रास्ता चुनते थे। यीशु की सामरी स्त्री के साथ मुलाकात महज एक घटना नही परन्तु परमेश्वर की योजना के कारण थी। अपने पिछले जीवन के कारण, वह स्त्री दोपहर को कड़ी धूप में पानी भरने आती है ताकी वह दूसरों से बच सके। जब यीशु ने उसके भूतकाल और कई पतियों के बारे मे उसका सामना किया तो वह इससे इनकार नही करती है। ।उसके मुश्किल भरे भूतकाल ने उसे आत्मिक रूप से प्यासा और उद्धार की आवश्यकता वाला बना दिया था। हम में से सब लोग पापी हैं और हमें यीशु के सामने खड़े होने की जरूरत है और अपने जीवनों के बारे में इमानदार होना है, और जीवन के जल को प्राप्त करने के वास्ते उससे क्षमा मांगनी है।

विचार विमर्श

बाइबल के समय में...

1. बाइबल से जो अनुच्छेद आपने अभी पढ़ा उसे अपने शब्दो में समझायें।
2. इस कहानी में कौन लोग हैं ?
3. आप क्या सोचते हैं कि वह स्त्री कूएं से पानी भरने के लिए दोपहर को क्यों आई जब इतनी गर्मी थी?
4. सामरी स्त्री इतनी आश्चर्यचकित क्यों हो गई कि यीशु ने उससे पानी मांगा?
5. यीशु का कहने का तात्पर्य क्या था, जब उसने स्त्री से कहा कि वह उसे 'जीवन का जल' देगा?
6. सामरी स्त्री के साथ जिसको यहूदी लोग अशुद्ध मानते थे, यीशु की बातचीत बारे में, इस अनुच्छेद से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

एचआईवी के समय में...

7. सामरी स्त्री के कई पुरुषों के साथ यौन संबंध थे। एचआईवी के संदर्भ में इस वाक्य पर विचार विमर्श करें।
8. एचआईवी के प्रभावशाली तरीके से रोकथाम और देखभाल और उपलब्ध सुविधाओं को प्राप्त करने में आत्मग्लानि रूकावट का काम कैसे करती है?
9. हम कैसे लोगों की सहायता कर सकते हैं कि वे एचआईवी के संक्रमण के निजी जोखिम को ध्यान में रखकर जीवन जीने के अपने तरीके और सांस्कृतिक कार्यकलापों को खोज सकें?
10. ऐसे लोगो को जो अपने को अयोग्य समझते हैं, कलीसिया किस प्रकार से यह महसुस करा सकती कि वे यहां पर व्यक्तिगत रीति से उनका स्वागत है?
11. कौन सी ऐसी कुछ बातें हैं, जिन्हें हम अपनी कलीसिया में करते हैं जिनसे अन्य लोग अपने को अलग महसूस करते हैं? इन्हे हम कैसे बदल सकते हैं?

सीखने के लिए मुख्य बातें

- यीशु ने साफ तौर पर हमें दर्शाया है कि वह सभी लोगो को एक समान रूप से देखता है और कोई भी जाति या समुह के लोग दूसरे जाति या समुह के लोगों से छोटे या नीचे नही हैं।
- हमें स्त्री और आदमी के बीच में और हमारे समुदायों में लोगो के विभिन्न जाति समुह में समानता को प्रोत्साहित करने की जरूरत है।
- हमें उन समाजिक प्रथाओं और धारणाओं की दुबारा समीक्षा करनी चाहिए जो दुसरों को कलंकित करते हों, और जिसके द्धारा हम अपने आपको भी एचआईवी के संदर्भ में दोषी ठहराते हैं।
- ऐसे समाज को खड़ा करने में कलीसिया को भविष्यद्वक्ताओं की भूमिका निभानी चाहिए, जहाँ सभी लोग मिलकर काम करते हों और जहा सभी लोगो के साथ न्यायपूर्वक व्यवहार किया जाता हो।

प्रार्थना के लिए विनतीयाँ

- हम में से सभी पापी हैं। हम सब को यीशु मसीह के पास आने और उससे जीवन का जल मांगने की जरूरत है जो केवल वही दे सकता है। हम सब अपनी आत्मग्लानी की भावना को दूर हटाकर, उससे क्षमा और नया जीवन प्राप्त कर सकते हैं।
- उनके लिए प्रार्थना करें जो आत्मग्लानी से पीड़ित हैं और महसूस करते हैं कि वे समाज से बहिस्कृत हैं।
- अपने शब्दों,कार्यों एवं निषक्रियता के लिए प्रार्थना में क्षमा मांगे जिनसे किसी को ठेस पहुँची हो या वे कलंकित हुए हों।

पढ़ने के लिए अतिरिक्त अनुच्छेद

यूहन्ना 9:1-3 यीशु ने कहा, न तो इस अन्धे व्यक्ति ने और न ही इसके माता पिता ने पाप किया।

अय्यूब 3:1-6 अय्यूब अपनी हालात पर निराशा और भय की भावना को व्यक्त करता है

1 यूहन्ना 3:19-20 यहाँ तक कि जब हमारा हृदय हमें दोष देता है, परमेश्वर हमारे हृदय से बढ़कर महान है।

रोमियो 8:1 अतः उन पर जो मसीह यीशु मे है दण्ड की आज्ञा नही।

7 क्षमा

यह अध्ययन हमें कैसे बदल सकता है?

हम जानेंगे...

- परमेश्वर की अद्‌भुत क्षमा का पूर्ण मतलब
- कि क्षमा सिर्फ एक साधारण निर्णय नहीं है लेकिन इसमें लगातार कार्य करने की जरूरत पड़ती है।
- कि क्षमा भुला देना जैसा नहीं है।

हम बनेंगे...

- हमारे लिए परमेश्वर की क्षमा की कीमत एवं गहराई की हमारी समझ से अभिभूत हो जायेंगे।

हम कार्य करेंगे...

- दूसरों को वास्तव में क्षमा करेंगे, और मन और हृदय में शांति पायेंगे।
- क्षमा करने के बावजूद भी जारी रहने वाले नाकारात्मक भावनाओं को चुनौती देंगे।

पृष्ठभूमि की जानकारी

परमेश्वर जो कुछ हमारे जीवन में चाहता है उसे हम पूरा नहीं कर पाते हैं। एक दूसरे को प्रेम करने की उसकी आज्ञा के लिए हमारे प्रत्युत्तर में कमी के द्वारा हम उसे निराश कर देते हैं, और उसकी अनाज्ञाकारिता करते हैं जब हम परीक्षा में गिर जाते हैं।

हमारे उद्धारकर्ता, यीशु के क्रूस में बलिदान के द्धारा हम पापो से, आत्मग्लानि से क्षमा पा सकते हैं और और शुद्ध हृदय के साथ एक नई शुरूआत कर सकते हैं। लेकिन परमेश्वर की इस आश्चर्यजनक क्षमा को हमें दूसरों के साथ भी बांटना चाहिए, चाहे भले ही उन लोगो ने हमें कितना भी दुख पहुंचाया हो।

मार्गदर्शक के लिए सुझाव

शायद किसी ऐसे व्यक्ति को क्षमा करना बहुत मुश्किल हो सकता हो जिसने एचआईवी से किसी दूसरे व्यक्ति के जीवन को संक्रमित कर दिया हो। विचार विमर्ष कीजिए कि कैसे हम अपने साथी को क्षमा कर सकते हैं, न सिर्फ ऊपरी मन से, बल्कि अपने हृदय की गहराई से? केवल ऐसा करने से ही हम भविष्य के लिए वास्तव में शांति एवं आशा प्राप्त कर पायेंगे।

चर्चा करें कि हम कैसे जानते हैं कि, हमने वास्तव में किसी को क्षमा कर दिया है। क्या उसके प्रति अब हमे कुछ भी बुरा महसूस नहीं होता? क्या अपने दर्द से हमें निजात मिल गई है?

व्यवहारिक प्रतिक्रिया के लिए सुझाव

मेल मिलाप का अर्थ है गुनाह करने वाले और गुनाह के पीड़ितों के एक साथ मिलाना। जो भी बुरा हुआ उसे खुल बताया जाता है और दोषी को याद दिलाया जाता है, या पहली बार उन्हें उस दर्द व चोट की जानकारी दी जाती है जो उसने पहुंचाई है। अपराधी अपनी गलती को सुधारता है और पीडितों से क्षमा पा सकता है।

- विभिन्न परिस्थितियो में मेल मिलाप करवाने में कलीसिया के लिए अवसरों पर विचार विमर्श करें—जैसे जमीन के झगड़े और झगड़े के बाद शांति को बहाल करना।
- क्या कलीसिया कुछ लोगों को तैयार कर सकता जो एक सलाहकार के रूप में ऐसे लोगों के बीच क्षमा के आसपास के मुद्दों पर काम करे, जिन्हें गहरी चोट लगी हो।
- क्या कलीसिया को विवाह को खुशहाल बनाने के पाठ्यक्रम को ऐसे विवाहित जोड़ों की मदद के लिए तैयार कर सकता है जो एचआईवी में जी रहे हैं, ताकि वे अपने रिश्तों को बना सकें और जो भी दोष लगाने एवं कड़वाहट की भावनाएं हैं उनका समाधान कर पायें।

विश्वासयोग्य विवाहित महिलाएं शायद अपने पति को उनके धोके के लिए क्षमा कर पायें। फिर भी, यह उन्हें बहुत हद तक एचआईवी के खतरे में रखेगा, इसलिए उनको सुरक्षित यौन संवध बनाने की आवश्यकता पड़ेगी। उन्हें इसके खिलाफ आवाज उठाने और अपने पति के व्यवहार को चुनौती देने की जरूरत है, यदि वे लगातार धोका देते हैं।

लूका 17: 3-4

मरकुस 11: 25-26

क्षमा

क्षमा एक ऐसा निर्णय है जिसमें कड़वाहट और बदले की भावना को दूर जाने दिया जाता है। यह हमें उन प्रभावों से स्वतंत्र करती है जो इन नाकारात्मक भावनाओं का परिणाम होता है। क्षमा का मतलव शायद ही उस बात को भुल जाना होता है। लेकिन हम उस विवाद को जाने देते हैं और अव नही चहते कि अपराधी को उसकी सजा मिले। हम उन्हें परमेश्वर के सुरक्षित हाथो में सौप देते हैं और वह ही उनसे अंततः निपटारा करेगा। हम जव क्षमा करते हैं, तो परमेश्वर हमारे हृदय को क्रोध, दर्द और कड़वाहट से स्वतत्र कर देता है।

विचार विमर्श

बाइबल के समय में...

1. 'डांटना' शब्द का मतलब है किसी को कहना कि वो ये काम करना बंद कर दे। किन परिस्थितियों में हम किसी को डांटते हैं? किस को हम बिना हिचक के डांट सकते हैं?
2. 'पश्चाताप' शब्द का क्या अर्थ है? हमने अपने जीवन में किस बात पर पश्चाताप किया है?
3. किसी को 7 के 70 बार माफ करने से यीशु का क्या तात्पर्य था?
4. क्या आपको कोई ऐसा समय याद है जब आपको क्षमा मिली हो? इससे आपको कैसा महसूस हुआ?
5. हम दूसरे लोगों को क्षमा करने के लिए कितना तैयार रहते हैं? जब लोग आपसे क्षमा मांगते है तो क्या क्षमा करना आसान हो होता है?

6. जब लोग क्षमा नहीं कर पाते हैं तो क्या होता है?

एचआईवी के समय में...

7. क्या किसी को क्षमा करने में हम संघर्ष कर रहे हैं? क्या अभी भी कुछ ऐसा है जिसे हम इस व्यक्ति से चाहते हैं?
8. यदि हमारा साथी अपने एचआईवी के बारे में अंजान है और और वह हमें संक्रमित कर देता है और बाद में जो कुछ भी हुआ उसके लिए क्षमा मांगता है तो क्या क्षमा करने के विभिन्न स्तर हैं जिनका हम अनुभव करते हैं?
9. यदि कोई जानबुझकर किसी व्यक्ति को एचआईवी से संक्रमित करता है (एचआईवी अकसर लड़ाई, आतंक या सत्ता के हथियार रेप के साथ जुड़ा होता है), तो आमतौर से पीड़ित का जीवन तबाह हो जाता है। हम कैसे सुनिश्चित करें कि उस व्यक्ति को न्याय मिले? क्या इस परिस्थिति में हम क्षमा को खोज सकते हैं?
10. अकसर महिलाओं को एचआईवी फैलाने का दोषी माना जाता है, हालांकि अधिकतर मामलों में पति अपने पत्नीयों से ज्यादा धोकेबाज़ होते हैं। किसी पर दोष लगाए बगैर हम इस परिस्थिति में कैसी प्रतिक्रिया दे सकते हैं?

सीखने के लिए मुख्य बातें

- क्षमा शायद ही आसानी से मिलती है। हमें सक्रिय होकर क्षमा को चुनना चाहिए।
- हम शायद क्षमा को सीधे-सरल तरीके से नहीं पाते हैं। हमें कई बार इस पर लम्बे समय तक कार्य करने की जरूरत पड़ती है और लगातार क्षमा करना पड़ता है जब तक कि हमारे हृदय को शांती न मिल जाये।
- परमेश्वर चाहता है कि हम दूसरों को क्षमा करें ताकि हमारा हृदय शुद्ध जाये।
- बिना क्षमा प्राप्त किये हमारा हृदय हमेशा क्रोध के बोझ से दबा रहेगा और हम आगे नहीं बढ़ पायेंगे।
- जब कि हम क्षमा कर देते हैं, हमें हमेशा नाकारात्मक व्यवहार को चुनौती देनी चाहिए और जरूरत पड़ने पर सहायता लेनी चाहिए, जिसमें न्याय पाना भी शामिल है।

प्रार्थना के लिए विनतीयाँ

- क्या किसी को क्षमा करने में हमें मुश्किल हो रहा है? यीशु मसीह की मृत्यु के कारण हमें पवित्र आत्मा मिला है जो हमें हमारी कमजोरी पर विजय प्राप्त करने में हमें सामर्थ्य देता है। परमेश्वर के साथ कुछ भी असंभव नही है।

पढ़ने के लिए अतिरिक्त अनुच्छेद

मति 6:14-15 यदि हम दूसरों को क्षमा नहीं करेंगे तो परमेश्वर हमें भी क्षमा नही करेगा।

मति 18:21-35 दया न करने वाले नौकर का दृष्टांत

लूका 15:11-24 ऊड़ाउ पुत्र और उसके पिता की क्षमा का दृष्टांत

8 एचआईवी के साथ जीवित लोगों की देखभाल और सहायता

यह अध्ययन हमें कैसे बदल सकता है?

हम जानेंगे...

- और समझेंगे कि एक दूसरे की देखभाल और जिम्मेदारी लेने के लिए हमें बुलाया गया है।

हम बनेंगे...

- व्यवहारिक देखभाल और सहायता के लिए गहरी समझ वाले, जिसकी जरूरत एचआईवी के संदर्भ में दूसरों को पड़ सकती है
- दूसरे लोगों की शारीरिक, भावनात्मक और आत्मिक जरूरतों के प्रति जागरूक।
- जरूरतमंदों की सहायता करने के लिए लोगों को तैयार करेंगे।

हम कार्य करेंगे...

- हमारे समुदाय में एचआईवी से प्रभावित लोगों की शारीरिक, भावनात्मक और आत्मिक जरूरतों को पूरा करने में सहायता प्रदान करने वाले।
- एचआईवी के साथ जीवित लोगों की जरूरतों को पूरा करने के लिए हमारी कलीसियाओं को तैयार करने वाले।

पृष्ठभूमि की जानकारी

अपने समुदाय के अंदर जरूरतमंद लोगों को सहारा देने के लिए कार्य करने की जरूरत के बारे में कलीसिया के अगुओ को ज्ञान प्राप्त करने की जरूरत है। न केवल एचआईवी के साथ जीवित लोगों के बारे में, बल्कि उनके बच्चों, उनके परिवारों एवं देखभाल करने वाले भी जो एड्स से अनाथ हुए बच्चों की जिम्मेदारी उठते हैं। इन सभी लोगों की भिन्न-भिन्न लेकिन अकसर बहुत ही ज्यादा व्यवहारिक, भावनात्मक और आत्मिक जरूरतें होती हैं--जिनमें से सभी को हमारी कलीसियाओं में से भिन्न-भिन्न संसाधनों और प्रतिक्रियाओं की जरूरत पड़ती है।

मार्गदर्शक के लिए सुझाव

लोगों का यह देखने में प्रोत्साहन करें कि हर किसी के पास एक दूसरे की मदद करने की क्षमता है। चाहे भले ही हम गरीब हों, या कमजोर, या बीमार हों फिर भी हमारे पास देने को कुछ होता है। उदाहरण के लिए, भले ही हमारे पास पैसों की कमी हो, लेकिन फिर भी हम अपना समय दे सकते हैं और हम अपने कार्यकुशलता का इस्तेमाल कर सकते हैं—पानी के रिसाव को बंद करने में या अनाथ को खाना बनाना सीखाने में। हम किसी ऐसे व्यक्ति की बात सुन सकते है या उनके साथ बातें कर सकते हैं जिनके साथ बात करने वाला कोई नहीं है। हम अपने अनुभवो को बता सकते हैं, हमने अपने जीवन में क्या सिखा है और किसी समस्या को सुलझाने में मदद के लिए सलाह दे सकते हैं।

व्यवहारिक प्रतिक्रिया के लिए सुझाव

यह अध्ययन न केवल परिस्थितियों और जरूरतों के बारे में न सिर्फ बातचीत करने के लिए हमें प्रोत्साहित करती है बल्कि जो जरूरत में हैं उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिए कार्य करने के लिए भी हमें प्रोत्साहित करती है। इस बात की चर्चा करें कि हमारे आसपास कौन भुखा, प्यासा, बेघर, बिना कपड़ो में या जेल में हैं-- शारीरिक और आत्मिक दोनों रूप से। यदि कोई इन लोगो की जरूरतों को पर्याप्त रीति से पूरा नहीं कर रहा है तो हम अपने आप क्या कर सकते हैं?

संदर्भ

www.Biblelight.org परमेश्वर का न्याय

www.avert.org/statistics.htm

ऐसे बच्चे जो एड्स के कारण अनाथ हो गये हैं उनको परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा लिया जा सकता है, लेकिन भाईयों और बहनों को अलग किया जा सकता है ताकि किसी पर भार न पड़े। बच्चों के लिए यह बहुत बड़ी भावनात्मक दर्द हो सकता है, जिन्होने अभी-अभी अपने माता पिता को खो दिया है।

मत्ती 25: 31-46

एचआईवी के साथ जीवित लोगों की देखभाल और सहायता

यह शक्तिशाली अनुच्छेद यीशु के अंतिम भोज और उसके पकड़वाये जाने से ठीक पहले की घटना है। अपने चेलों को यीशु की यह लगभग आखरी शिक्षा है और यह ऐसी शिक्षा है जो आज भी हमारे लिए लागू होती है।

इस शक्तिशाली और व्यवहारिक अनुच्छेद में, यीशु उन लोगों की जरूरतों को पूरा करने की शिक्षा दे रहे हैं जिनको अकसर समाज भूला देता या छोड़ देता है, उदाहरण के लिए, ऐसे लोग जो बंदीगृह में हैं। उसकी बातों को सुनने वाले उसके वचनों से आश्चर्यचकित थे।

विचार विमर्श

बाइबल के समय में...

1. यह अनुच्छेद क्या कह रहा है?
2. वे कौन से भिन्न-भिन्न लोग इसमें शामिल हैं और वे क्या कर रहे हैं?

3. यह अनुच्छेद हमें, एक मसीह होने के नाते दूसरों की जरूरतों पर हमें कैसा ध्यान देना है, उस बारे में क्या बताता है?

एचआईवी के समय में...

4. हमारी संस्कृति में, हम किस से बीमारों का ध्यान रखने की उम्मीद करते हैं, और क्यों? इस अनुच्छेद में यह किस की जिम्मेदारी है?
5. हम में से जो एचआईवी के साथ जीवित हैं उनकी जरूरतें क्या हो सकती हैं? शारीरिक, भावनात्मक एवं आत्मिक जरूरतों पर विचार करें। क्या लोगों को देखभाल की जरूरत उसी समय पड़ती है जब वे बीमार पड़ते हैं?
6. मसीहों के समान, एक व्यक्ति एवं एक कलीसियाई समुदाय दोनों के रूप में हम कैसे इन जरूरतों को पूरा कर सकते हैं और कैसे एक दूसरे के लिए व्यवहारिक देखभाल एवं सहायता प्रदान कर सकते हैं?
7. क्या बच्चों की जरूरतें वयस्कों से अलग होती हैं? स्पष्ट कीजिए क्यों। हमारे समुदाय में असुरक्षित बच्चों के लिए हम देखभाल एवं सहायता कैसे प्रदान कर सकते हैं। उदाहरण के लिए जो अनाथ हो गए हैं या जो अपने बीमार माता पिता की देखभाल कर रहे हैं?
8. हम ऐसा सोचते हैं कि हमारे पास देने के लिए बहूत कम है, लेकिन इस अनुच्छेद में यीशु हर किसी को लेखा देने के लिए बुलाता है कि कैसे उन्होंने दूसरों की देखभाल करी है। उन तरीकों को खोजें जिनके द्वारा जो कुछ भी थोड़ा हमारे पास है उससे दूसरों की सहायता हम कर सकें?

सीखने के लिए मुख्य बातें

- क्या हमारे समुदाय में ऐसे लोग हैं जिन्हें अलग कर दिया गया है, या जिनकी जरूरतों को अनदेखा कर दिया जाता है--उदाहरण के लिए उनकी उम्र या लिंग या एचआईवी संक्रमित होने के कारण?
- इसके कारण हमारा समाज क्या खो देता है?
- इस परिस्थिति को हम कैसे बदल सकते है, और कैसे इस बात को सुनिश्चित कर सकते हैं कि सभी लोग हमारे समुदाय के जीवन में खुलकर जी सकें?

प्रार्थना के लिए विनतीयाँ

- प्रार्थना करें कि इस संदेश को हम अपने दिल में रख सकें और दूसरों की जरूरतों को पूरा करने के लिए तैयार हो सकें, चाहे भले ही उनकी परिस्थिति या पृष्ठभूमि के बारे में हम कितना भी असहज महसूस कर रहे हों। परमेश्वर का प्रेम बिना शर्त का है और हमारा प्रेम भी ऐसा ही होना चाहिए।

पढ़ने के लिए अतिरिक्त अनुच्छेद

2 कुरिन्थियों 5:1-3 स्वर्ग के लिए हमारी चाहत

2 कुरिन्थियों 5:15 हमें केवल अपने लिए नहीं जीना चाहिए।

9 विवाहित जोड़ों के लिए परमेश्वर की योजना: प्रेम और यौन का स्थान

यह अध्ययन हमें कैसे बदल सकता है?

हम जानेंगे...

- प्रेम और यौन संबंध के बारे में बाइबल का दृष्टिकोण, साथ में स्त्री-पुरूष की भूमिकाएं और अपेक्षाएं।
- यौन को लेकर हमारी सांस्कृतिक परंपरा और ये कैसे बाइबल की शिक्षा से भिन्न हो सकते हैं।
- मानवीय रिश्तों के लिए परमेश्वर की योजना में प्रेम और यौन का स्थान

हम बनेंगे...

- जागरूक होंगे कि विवाह में कैसे भावनात्मक और शारीरिक जरूरतों पर ध्यान दें
- खुलकर यौन संबंध के बारे में बोल सकेंगे जो कि एक 'वर्जित' विषय है
- अपने शरीरों से संतुष्ट रहेंगे
- विवाह के अंतर्गत यौन के तोहफे का आनंद लेने में दोषमुक्त महसूस करेंगे।

हम कार्य करेंगे...

- यौन और विवाह के अंदर रिश्ते के बारे में आत्मविश्वास के साथ खुलकर चर्चा करेंगे ।

पृष्ठभूमि की जानकारी

यौन परमेश्वर की ओर से एक तोहफा है जिसे प्रभावकारी विवाहित संबंधों के निर्माण के लिए बनाया गया और जिसका आधार आपसी आनंद है। इसमें दोनों पति और पत्नी का आनंद एवं संतुष्टि होनी चाहिए। यह तभी संभव है जब दोनों के बीच आदर, प्यार और अच्छी बातचीत मौजूद है।

संबंधों एवं यौन के बारे में स्त्री और पुरुष दोनों के विचार भिन्न होते हैं जिनके बारे में शायद ही कभी बातचीत और चर्चा होती है। पति-पत्नी से यौन के बारे में विभिन्न सांस्कृतिक व्यवहार और सोच की अपेक्षा से की जाती है।

मार्गदर्शक के लिए सुझाव

कई लोगों यौन की बातों को लेकर अपनी इच्छाओं को बताने में झिझकते हैं। एक आरामदायक और खुला वातावरण तैयार करें। लोगों को एक लिंग के समूह में बात करने में आसानी हो सकती है और फिर बातचीत के परिणामों को सब के साथ बांटे। यौन संबंधों के लिए किस प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया जाए उन पर सहमति बनाएं एवं उन शब्दों को खोजें।

प्रतिभागियों प्रोत्साहित करें कि वे संबंधों के भिन्न-भिन्न आशयों पर विचार करें, जिसमें शामिल है: आपसी आदर, समझौता और सहमति। रिश्तों के बारें में यह अनुच्छेद क्या कहता है उसकी तुलना हमारी संस्कृति के विचारों उससे करें।

लोगों की सहायता करें कि यौन के विषय में वे अपने सांस्कृतिक विचारों पर चर्चा करें। विवाह के अंदर यौन संतुष्टि का क्या मतलब है और क्या ये स्त्री और पुरुष में भिन्न है, इस पर विचार-विमर्श करें। किन परिस्थितियों में पति और पत्नी को यौन से दूर रहना चाहिए।
एचआईवी को प्रतिदिन के कलीसिया वाले जीवन में शामिल करने का मतलब है कि हम लोगों को एचआईवी के बारे में सही सूचना प्रदान करने की कोशिश कर रहे हैं। आप कोशिश करते हैं कि बीमारी और जो उसके साथ जी रहे हैं कलीसिया का नजरिया उनके प्रति बदलें। स्वयं की सुरक्षा करें और स्वयं की देखभाल के उनके कौशल को बनाने में आप कोशिश कर रहे हैं। आप सुनिश्चित करते हैं कि उनको उत्तम सेवा मिले जिससे वे अपने आप को एवं अपने प्रियों सुरक्षित रख सकें—जैसे कि स्वैच्छिक सलाह लेना एवं परीक्षण। एवं परीक्षण के बाद वाले क्लब जहाँ वे मिलकर सूचना एवं साकारात्मक जीवन शैली को बांट सकते हैं। एचआईवी के खिलाफ एकता को बढ़ावा देने वाले सहायक वातावरण को भी हम बनाते हैं।

केनन गिडियन बयामुगिषा, INERELA+ के संस्थापक

व्यवहारिक प्रतिक्रिया के लिए सुझाव

- अपने यौन संबंध के विषय में अपनी भावनाओं को विवाहित जोड़े कैसे प्रकट कर सकते हैं?
- अपने समुदायों में हम कैसे सांस्कृतिक बदलाव को प्रोत्साहित कर सकते हैं?
- हमारे क्षेत्रों में विवाहित जोड़ों की मदद करने के लिए क्या ऐसे कोई पाठ्यक्रम, वर्कशॉप या मौके उपलब्ध हैं? क्या कलीसिया ऐसी साहयता प्रदान कर सकती है?

समय-समय पर ऐसे विषयों पर चर्चा करने के लिए विवाहित जोड़े सहमत हो सकते हैं।

संदर्भ

www.christian-Bible.com बाइबल और यौन
marriage.infomedia.com यौन और विवाह
www.Bibletruths.org मसीही परिवार

उत्पति 2:18-15

1 कुरिन्थियों 7:1-7

विवाहित जोड़ों के लिए परमेश्वर की योजना: प्रेम और यौन का स्थान

कई लोगों के लिए यौन एक शर्म का एवं वर्जित विषय है। वे इसके बारे में बात करने से भी कतराते हैं कि लोग क्या सोचेंगे कि वे अनुचित या अशलील हैं। लोग उन पर दोष लगाते हैं कि वे दूसरों के लिए ठोकर का कारण है। फिर भी यौन को परमेश्वर ने मानवता के लिए अपनी वास्तविक योजना के हिस्से के रूप में बनाया था, एक तोहफे के रूप में जिसे पति और पत्नी आपस में आनंद लें और बांट सकें।

विचार-विमर्श

बाइबल के समय में...

1. पुरुष और स्त्री के बारे में, और उनके बीच संबंधों के विषय में उत्पति का ये अनुच्छेद क्या कहता है?
2. 1 कुरिन्थियों 7 में, पौलुस ने पुरुषों से यह कहता है कि यदि मनुष्य विवाह न करे तो ये उत्तम है?
3. आप क्या सोचते हैं कि पौलुस कौन से वैवाहिक कर्तव्यों के बारे में बात कर रहा था?
4. 1 कुरिन्थियों 7 से हम क्या सीख सकते हैं कि यौन संबंध को लेकर स्त्री और पुरुष की भूमिकाओं के विषय में परमेश्वर की इच्छा क्या है?

एचआईवी के समय में...

5. उत्पति में लिखा है कि 'पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी के साथ रहना' चाहिए है। क्या हमारी संस्कृति में यह एक सामान्य रीति है? इसके लाभ और नुकसान क्या हैं?
6. 1 कुरिन्थियों का अनुच्छेद हमारे सांस्कृतिक रीतिरिवाजों को कैसे चुनौती देता है?
7. अपने विचार से, क्या यौन सिर्फ पति का अधिकार है या दोनों की सहमति से प्रेम की एक अभिव्यक्ति है?
8. कौन सी परिस्थितियाँ विवाहित जोड़ों को धोकेबाज बनने के लिए प्रेरित करती है?
9. अकसर हम कुछ वाक्य सुनते हैं: 'उस स्त्री को यौन संबंध में कोई दिलचस्पी नहीं है' या 'उस पुरुष को सिर्फ यौन संबंध से मतलब है'। एक मसीही जोड़ा ऐसे संतुष्ठ यौन संबंध को कैसे बना सकता है जो परमेश्वर को आदर देता हो और इसी समस्या से बचता हो।
10. पति के लिए विवाह में एक संतुष्ट यौन संबंध को बनाने के क्या फायदे हैं? या फिर पत्नी के लिए? एचआईवी को फैलने से रोकने में?
11. वैवाहिक रिश्ते की कुंजी अच्छी बात-चीत है। झंझलाहट तब होती है जब जोड़े एक-दूसरे से बातचीत या चर्चा नहीं करते। ऐसी सूची बनाएं जिसमें पुरुष और स्त्री प्रेम, देखभाल और यौन नज़दीकी की अपनी जरूरत के लिए बातचीत में वे कैसे एक दूसरे से अलग-अलग हैं?

12. मसीहों के रूप में हम एक अच्छे और स्वस्थ्य विवाह का उदाहरण कैसे पेश कर सकते हैं?

सीखने के लिए मुख्य बातें

- यौन संबंध के बारे में पुरुष और स्त्री के लिए सांस्कृतिक रूकावटें और पारंपरिक भूमिकाएं एवं उम्मीदें अकसर एक संतुष्ट यौन रिश्ते के रूकावट का कारण बनती हैं।
- अकसर स्त्री और पुरुष यौन और रिश्तों को अलग-अलग तरीके से देखते हैं। विवाहित जोड़ों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे इसे पहचानने और यह समझें कि एक दूसरे के लिए महत्वपूर्ण बात क्या है।
- विवाह के अंदर बदलाव दोनों पति-पत्नी के लिए लाभकारी होना चाहिए और इसमें दोनों की सहमति जरूरी है।

प्रार्थना के लिए विनतीयाँ

- सांस्कृतिक रीतिरिवाजों एवं विश्वासों में जकड़े हुए जोड़ों के लिए प्रार्थना करें जो अकसर स्त्री को काफी दुःखी और असंतुष्ट छोड़ देती है।
- उन हताश और असमंजस में पड़े जोड़ों के लिए प्रार्थना करें क्योंकि आपसी संतुष्टि की जरूरत के लिए वे खुलकर अपनी समस्या को व्यक्त नहीं कर पाते हैं। परमेश्वर हमें साहस दे कि हम खुल कर और ईमानदारी से अपनी बात रख सकें और एक अच्छे रिश्ते का निर्माण कर सकें।
- प्रार्थना करें कि एक-दूसरे को सच्चाई से प्रेम करने में हम मसीह के उदाहरण का पालन कर सकें और उन बंधनों को तोड़ सकें जो स्त्री को जकड़े हुए हैं। मसीही पुरुषों को साहस मिले कि वे दूसरों से अलग आदर्श जीवन जीयें और अपनी पत्नीयों को मसीह का प्रेम दिखाएं।

पढ़ने के लिए अतिरिक्त अनुच्छेद

श्रेष्टगीत 4:9-16 दो लोगों का आनंद जो एक दूसरे के प्रेम का मज़ा ले रहे हैं।

इफिसियों 5:25-29 पति कैसे अपनी पत्नी से प्रेम करे।

10 एकल व्यक्ति एवं अविवाहित जोड़ों के लिए परमेश्वर की योजना: प्रेम एवं यौन का स्थान

यह अध्ययन हमें कैसे बदल सकता है?

हम जानेंगे...

- और समझेंगे कि बाइबल प्रेम, यौन और रिश्तों के बारे में क्या बताती है।
- इस बात को और जानेंगे कि यौन संबंध के लिए कुछ लोगों द्वारा दबाव और असुरक्षा का सामना किया जाता है, खासतौर से जवान महिलाएं एवं लड़कियां जो कि ऐसे घर में रहते हैं जहां उन्हें खाने और जीने के लिए यौन संबंध के लिए मजबूर किया जाता है।

हम बनेंगे...

- यौन के इर्द-गिर्द नकारात्मक और सकारात्मक सांस्कृतिक मूल्यों, रिवाजों और दबावों की जांच करने योग्य
- यौन के निषिद्ध विषय पर और ज्यादा खुलकर चर्चा करने योग्य
- रिश्तों और यौन संतुष्टि को लेकर स्त्री और पुरुष के अलग-अलग सोच पर ज्यादा संवेदनशील
- समाज और मीडिया के द्वारा जवान लोगों पर बनाए जा रहे दबावों के प्रति ज्यादा जागरूक।

हम कार्य करेंगे...

- आत्मविश्वास के साथ विवाह से पहले यौन और रिश्तों के बारे में चर्चा
- यौन संबंध से दूर रहेंगे जब तक कि यह विवाह के अंतर्गत न हो, इस तरह अनचाहे गर्भ से बचेंगे, एचआईवी या अन्य यौन संबंध से होने वाले संक्रमण से बचेंगे।

पृष्ठभूमि की जानकारी

यौन और रिश्तों के बारे में सीखने में जवान लोगों को बहुत मुश्किल होती है । अधिकतर जानकारी उनको दोस्तों या फिर मीडिया से मिलती है। ये सब चीजें विवाह के बाहर यौन के लिए बहुत ही लापरवाह वाले व्यवहार को प्रोत्साहित करती है।

यौन की शक्तिशाली चाह हमारे स्वभाव का एक हिस्सा है, लेकिन ये हमारे नियंत्रण में हैं। परमेश्वर चाहता है कि विवाह से पहले हम यौन संबंध से दूर रहें और विवाह के अंतर्गत अपने साथी के प्रति विश्वासयोग्य रहें। जब तक वे इस बात की चर्चा खुले में करते हैं वे एकदूसरे के साथ आनंद में यौन संबंध के लिए इंतजार कर सकते हैं। इस तरह वे परमेश्वर के आज्ञा का अनुसरण करेंगे।

मार्गदर्शक के लिए सुझाव

यौन संबंध की बात खुल कर करने में कई लोगों को मुश्किल हो सकती है। एक आरामदायक और खुला वातावरण तैयार करें। लोगों को एक लिंग के समूह में बात करने में आसानी हो सकती है और फिर बातचीत के परिणामों को सब के साथ बांटे।

इस अध्ययन की सुगम शुरूआत के लिए, चर्चा करें कि यौन और रिश्तों को लेकर हमारे समाज में लड़कियों की सामान्य सोच और अपेक्षाएं क्या हैं। लड़को की सोच और अपेक्षाएं क्या हैं? मुख्य भिन्नताओं की सूची बनाएं।

व्यवहारिक प्रतिक्रिया के लिए सुझाव

इस बात की चर्चा करें कि जवान लोगों को सिर्फ नियमों को देने के साथ-साथ यौन के लिए एक सकारात्मक विचार का निर्माण करने में कलीसिया क्या भूमिका अदा कर सकती है। अच्छे निर्णयों को लेने, एक दूसरे का आदर करने, स्वयं की रक्षा करने और जिन चुनौतीयों और दबावों को वे झेलते हैं उनका सामना करने के लिए जवान लोगों में हम किस तरह से कौशल को प्रोत्साहित एवं विकसित कर सकते हैं?

अपनी शादियों में हम जवान लोगों के लिए एक अच्छा उदाहरण कैसे दे सकते हैं ?

असहायक प्रभावों के असर को कम या बदलने में कलीसिया किस तरह से मदद कर ?

संदर्भ

www.christian-Bible.com बाइबल और यौन

marriage.infomedia.com सेक्स एंड मैरीज

www.Bibletruths.org मसीही परिवार

नाटक मंचन

एक जवान जोड़ा प्रेम में पागल है। वे एचआईवी के खतरे को जानते हैं और लड़की लड़के से यौन संबंध बनाने के लिए इंतजार करने के लिए कहती है। लेकिन, लड़के के दोस्त उसे चिढ़ाते हैं और कहते हैं कि वह नामर्द है। अगली बार जब दोनों मिलते हैं तो लड़का लड़की को अपने साथ किसी सुनसान जगह में ले चलता है। जब वे वहाँ पहुँचते हैं तो वह उससे कहता है कि "मैं यौन संबंध बनाने के लिए इंतजार करते करते थक गया हूँ।"

इस बिंदु पर नाटक को रोका और लोगों से पूछा जा सकता है कि उन्हें क्या लगता है, आगे क्या होना चाहिए? विचार विमर्श के बाद नाटक को आगे जारी रखें।

---

1 कुरिन्थियों 6:12-20

एकल व्यक्ति एवं अविवाहित जोड़ों के लिए परमेश्वर की योजना: प्रेम एवं यौन का स्थान

यौन एक ऐसा विषय है जो जवानों के बीच में बहुत चर्चित, भ्रमित एवं समस्या पैदा करने वाला है। बाइबल का यह अध्ययन इस विषय को हाल के एचआईवी और उन बढ़ते सामाजिक दबावों के संदर्भ से देखने की कोशिश करता है जिसका सामना जवान लोग करते हैं।

विचार-विमर्श

बाइबल के समय में...

1. 12वे पद में पद पालुस का यह कहने का मतलब क्या है कि, 'सब वस्तुएं उचित हैं, लेकिन सब हितकर नहीं है'?
2. इन पर विचार-विमर्श करें कि पालुस के कहने का मतलब क्या है, जब वह कहता है:
   - "तुम्हारे शरीर मसीह के अंग हैं।" (पद 15)
   - "वे दोनों एक तन होंगे" (पद 16)
   - "तुम्हारा शरीर पवित्र आत्मा का मंदिर है" (पद 19)।

एचआईवी के समय में...

3. विवाह के बाहर यौन संबंध होने के बारे में आपके समुदाय में क्या रवैया और चलन है? क्या ये बात लड़कों और लड़कियों के लिए अलग-अलग हैं?
4. रिश्तों के बारे में लड़कों और लड़कियों के अलग-अलग विचार और अपेक्षाएं क्या हैं? इस अनुच्छेद के संदर्भ में, क्या कोई ऐसी सोच एवं चलन हैं जिनमें हम बदलाव कर सकते हैं?
5. आपकी संस्कृति में क्या कोई ऐसी वजहें हैं जिनके कारण जवान लोग अपनी शादी में देरी करते हैं?
6. हमारे समाज में जवानों पर यौन, प्रेम और विवाह के बारे में अपनी सोच बनाने मे सबसे ज्यादा प्रभाव किस बात ने डाला है? किस व्यक्ति या किस वस्तु को सबसे ज्यादा प्रभावी होना चाहिए था? इसको बदलने में क्या हम कुछ मदद कर सकते हैं?
7. परमेश्वर ने स्त्री और पुरुष को अपने स्वरूप में बनाया, और यौन संबंध का आनंद लेने के लिए हमें शारीरिक रूप में बनाया। लेकिन कुछ सांस्कृतिक रीतिरिवाज शरीर में बदलाव पर जोर देते हैं जैसे स्त्री का खतना। हमारी सस्कृति में कौन से ऐसे आम चलन हैं जिन्हें हानिकारक माना जाता है या जो महीही मूल्यों एवं नैतिकता के विरूद्ध हैं? क्या यह दोनों लिंगों के लिए लाभदायक है? क्या कोई ऐसे उपाय हैं जिनके द्वारा हम मसीही होने के नाते इन हानिकारक रीतिरिवाजों को चुनौती दे सकते हैं?
8. क्या हमारे समाज में ऐसी परिस्थितियाँ हैं जहाँ यौन पर लोगों के पास कोई विकल्प नहीं है? हमारी प्रतिक्रिया क्या हो सकती है?

सीखने के लिए मुख्य बातें

- प्रेम और यौन के बारे में समाज का नजरिया उस नजरिये से बिल्कुल अलग है जो कि यौन की भूमिका एवं स्थान के विषय में परमेश्वर की अपेक्षा है। हमें अपने जवान लोगों की सहायता करने की आवश्यकता है कि वे अपने जीवनों और अपने जीवनसाथी के लिए बुद्धिमानी से चुनाव करें। हमें उन्हें नही कहने के लिए और सामाजिक और आर्थिक दबावों के विरुद्ध कदम उठाने के लिए आत्मविश्वास, सहारा और साहस देना चाहिए।
- यौन और यौन स्वास्थ्य के बारे में स्पष्ट एवं लाभकारी जानकारी प्राप्त करने के विषय में जवान स्त्री व पुरुष के पास कोई सुविधा नहीं होती।

- रिश्तों एवं यौन के बारे में जवान स्त्री और पुरुष के भिन्न-भिन्न विचार और अपेक्षाएं हो सकती हैं। इन अपेक्षाओं को शादी से पहले व्यक्त और चर्चा करने की जरूरत है ताकि एक अच्छे रिश्ते की नींव पड़ सके।

प्रार्थना के लिए विनतीयाँ

हे प्रिय प्रभु, हम ऐसे लोगों से घिरे हुए हैं जिनके मूल्य हमारे मूल्यों से अलग हैं। हम में से कई लोग अलग होने से डरते और दबाव से संघर्ष करते हैं। हमें अलग बनने की और आपके पीछे चलने को चुनने की सामर्थ्य दें। आमीन।

पढ़ने के लिए अतिरिक्त अनुच्छेद

1 कोरिन्थी 7:8-9 सलाह कब विवाह करना चाहिए।

उत्पति 2:18-25 परमेश्वर स्त्री को बनाता है

उत्पति 39:5:20 यूसुफ परीक्षा का सामना करता है और परमेश्वर के वचन का पालन करता है।

11 महिलाओं के विरुद्ध यौन उत्पीड़न और हिंसा

यह अध्ययन हमें कैसे बदल सकता है?

हम जानेंगे...

- और पहचानेंगे उस शारीरिक और यौन उत्पीड़न को जो कई महिलाएं सहती हैं।
- कि कलीसिया की यह जिम्मेदारी है कि वह पुरुष और स्त्री के बीच होने वाले भेद-भाव के खिलाफ आवाज उठाए।

हम बनेंगे...

- जागरूक होंगे कि हम सबको लिंग को ध्यान में न रख कर सम्मान मिलना और समान रूप से बराबर व्यवहार किया जाना चाहिए।

हम कार्य करेंगे...

- यौन शोषण के मुद्दे को संबोधित करने के अवसर प्रदान करने के लिए
- शोषण के शिकार हुए उत्तरजीवियों को सहायता प्रदान करने के लिए और उनके लिए जिम्मेदार अपराधी को पकड़ने के लिए।

पृष्ठभूमि की जानकारी

हमारे समुदायों में महिलाओं के खिलाफ यौन शोषण पर अकसर कोई ध्यान नहीं देता है। एक कलीसिया होने के नाते यह हमारा कर्तव्य है कि हम देखें कि स्त्री और पुरुष दोनों को अपने समुदायों में हम कैसे आदर देते हैं और उनका मूल्य क्या है। स्त्री-पुरुष में भेदभाव, और यौन शोषण सभी कुछ एचआईवी के फैलाने में बढ़ावा देते हैं, जिनके कारण महिलाएं सबसे ज्यादा असुरक्षित होती हैं। कलीसिया को जरूरत है कि वह इन समस्याओं को संबोधित करे और सकारात्मक पुरुषत्व का नमूना पेश करने के लिए पुरुषों को उत्साहित करे जो कि कमजोर की मदद के द्वारा शक्ति को दिखाता है, एवं सेवक नेतृत्व के द्वारा महिलाओं के लिए आदर सम्मान को प्रदर्शित करता है।

मार्गदर्शक के लिए सुझाव

जब आप यौन शोषण और हिंसा की बात कर रहे हों तो संवेदनशील रहें, क्योंकि समूह में ऐसे लोग हो सकते हैं जो इस हिंसा से गुज़रे हों और यह विषय उनके लिए दर्द भरा हो सकता है। हमेशा दूसरों के निजी जीवन का आदर करें। कभी भी किसी विशेष व्यक्ति या उदाहरण के बारे में बात न करें।

सलाह के द्वारा सहायता देने के लिए तैयार रहें क्योंकि बाइबल अध्ययन में कुछ कई सदस्यों के लिए उपयुक्त रहेगा।

उन लोगों के लिए जिनकी चंगाई के लिए या क्षमा देने के लिए विशेष जरूरत हो उनके लिए प्रार्थना का समय दें।

इस विशेष समुदाय में यौन शोषण के कुछ कारणों की जाँच करें, जिससे कि आप लोगों को और अच्छी तरह से चुनौतियों को समझने में मदद कर सकें।

समुदाय में उपलब्ध उन सेवाओं का पता कीजिए जो ऐसे शोषित लोगों को सहायता प्रदान कर सकते हैं (जैसे पुलिस, परामर्श केन्द्र, पुनःस्थापना केन्द्र)।

व्यवहारिक प्रतिक्रिया के लिए सुझाव

एक समुदाय के रूप में हम हिंसा को विशेषकर असुरक्षित लड़कियों और महिलाओं के खिलाफ कैसे रोक सकते हैं, और जो उन अपराधियों को सज़ा दिलाना जो इनके लिए जिम्मेदार हैं?

उन शोषित लोगों के लिए प्रार्थना करें कि परमेश्वर चंगाई ला सके।

अपराधियों को सज़ा दिलाने के लिए कानूनी कार्यवाही एवं शोषित हुए लोगों (थैरेपी) को उपलब्ध सहारा देने के लिए समुदाय में उपलब्ध सेवाओं का पता लगाएं।

यौन उत्पीड़न और शोषण किस प्रकार हो सकता है और समाज पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है इस बारे में लोगों को शिक्षा दें।

यौन उत्पीड़न एवं शोषण के लक्षणों और इसको कैसे संबोधित करना है इस पर विचारविमर्श करने के लिए समुदाय की हिस्सेदारी को आगे बढ़ाएं।

संदर्भ

www.warc.ch Justice and partnership/Partnership between women and men

जिन महिलाओं का बालात्कार हुआ है उन्हें तुरंत चिकित्स्य मदद को खोजना चाहिए। कुछ इलाकों में वे पोष्ट एक्सपोज़र प्रोफायलेसिस (पीईपी) प्राप्त कर सकते हैं। ये दवाई रेप के 72 घंटे के अंदर दी जाती है ताकि एचआईवी संक्रमण से बचाया जा सके। पता करें क्या ये दवाएं स्थानीय इलाकों में उपलब्ध हैं। यदि नहीं, तो ऐसी दवाओं के बारे में जागरूकता फैलाएं और इसे उपलब्ध कराने की सिफारिश करें।

न्यायियों 19:16-29

महिलाओं के विरुद्ध यौन उत्पीड़न और हिंसा

हमारे समाज में महिलाओं के खिलाफ होने वाले यौन शोषण और हिंसा पर अकसर कोई ध्यान नहीं देता है। कई बार कोई भी इस विषय के बारे में बोलना नहीं चाहता है। बाइबल में कई ऐसे उदाहरण है जिनमें स्त्रियों के साथ सही व्यवहार नहीं हुआ। फिर भी, यीशु हमें सिखाते हैं कि सभी लोग स्त्री-पुरुष दोनों परमेश्वर के स्वरूप में रचे गए हैं, और उनके साथ समानता का व्यवहार करना चाहिए। एक कलीसिया के रूप में हमें फिर से विचार करने की जरूरत कि यीशु क्या चाहते हैं कि महिलाओं के साथ हम कैसा व्यवहार करें। कलीसिया को जरूरत है कि वह इस लिंग भेदभाव की समस्या को संबोधित करे और सकारात्मक पुरुषत्व का नमूना पेश करने के लिए पुरुषों को उत्साहित करे जो कि कमजोर की मदद के द्वारा शक्ति को दिखाता है, एवं सेवक नेतृत्व के द्वारा महिलाओं के लिए आदर सम्मान को प्रदर्शित करता है।

विचार विमर्श

बाइबल के समय में...

1. वे पुरुष लोग, जो बुढ़े आदमी के घर का दरवजा खटखटा रहे थे क्या चाहते थे ? बाइबल इन पुरुषों के बारे में क्या कहती है ?
2. आप क्या सोचते हैं कि वह बुढ़ा आदमी घर की स्त्रियों को सौंपने के लिए क्यों तैयार था? क्या ये भी उतना ही 'घृर्णित कार्य नहीं था?
3. लेवी लोगों और बुढ़े आदमी का स्त्रियों के प्रति जो नजरिया था उसके बारे में आपको क्या लगता है?
4. इस अनुच्छेद में स्त्रियों के प्रति यीशु का नजरिया उन पुरुषों की तुलना में कैसा है ? क्या आप ऐसे उदाहरणों के बारे में सोच सकते हैं? (यूहन्ना 8:1-11; यूहन्ना़ 4:7-9)
5. क्या आप इस कहानी को उस रखैल के नजरिए से सुना सकते हैं? इस बात पर विचार करें कि उसे कैसा महसूस हुआ होगा और उसने कैसी प्रतिक्रिया दी होगी?

एचआईवी के समय में...

6. हमारे समुदाय में क्या ऐसे तरीकें हैं जिनमें स्त्री को इस्तेमाल की जाने वाली एक वस्तु के रूप में देखा जाता है? सांस्कृतिक रीतिरिवाजों पर विचार करें। उदाहरण के लिए, बाल विवाह या अच्छे मेहमान नवाजी के चिन्ह के रूप में स्त्री को हवश के लिए दे देना। किस प्रकार से यह यीशु का महिलाओं के प्रति देखभाल और आदर वाले नजरीये का विरोधाभास है ?
7. इस प्रकार के रीतिरिवाज, और स्त्री-पुरुष के बीच भेदभाव महिलाओं में एचआईवी फैलाने की संभावना को कैसे बढ़ा देते हैं?
8. हमारे समुदाय में महिलाओं के प्रति होने वाले हिंसा और अत्याचार से कलीसिया कैसे महिलाओं को बचा सकती है?
9. जिन लोगों का शोषण हुआ है उनके प्रति हमारी क्या प्रतिक्रिया है? क्या हम उन्हें अपनी सहायता देते हैं या जिनका शोषण हुआ है उन्हें हम कलंकित समझते हैं और उनसे दूर रहते हैं?

सीखने के लिए मुख्य बातें

- कमजोर एवं असुरक्षित लोगों की रक्षा करना, अन्याय के खिलाफ बोलना और जिनका शोषण हुआ है उनकी देखभाल एवं उन्हें सहायता प्रदान करना कलीसिया की जिम्मेदारी है (मीका 6:8)।
- जिस महिला के साथ बालात्कार हुआ है उसे अलग-अलग प्रकार की सहायता और देखभाल की जरूरत पड़ सकती है जिसमें शामिल है एचआईवी परीक्षण, परामर्श, प्रार्थना का सहारा, स्वीकरण, भावनात्मक सहारा आश्वासन और किसी समझदार व्यक्ति के साथ आत्मविश्वास के साथ बातचीत करने का समय।

- महिलाएं कोई इस्तेमाल करके फेंकने की वस्तु नहीं हैं और वे सम्मान और आदर के लिए बराबरी के साथ योग्य हैं (इफिसियों 5:25)
- जिन महिलाओं का शोषण हुआ था उनके कलंक और इंकार को हमें चुनौती देनी चाहिए, और उनकी भावनात्मक, शारीरिक और आत्मिक जरूरतों को पूरा करने के लिए उन्हें सहायता देनी चाहिए।
- इस बात पर विचारविमर्श करें कि एक समुदाय के रूप में हम शोषण को कैसे रोक सकते हैं और उन अपराधियों को कैसे पकड़ सकते हैं जो इसके जिम्मेदार हैं।

प्रार्थना के लिए विनतीयाँ

- प्रार्थना करें परमेश्वर ऐसी परिस्थितियों को उजागर करें जहाँ महिलाओं के साथ उत्पीड़न होता है और उन्हें खत्म करने में हमारी मदद करे।
- प्रार्थना करें कि कलीसिया महिलाओं के साथ होने वाले हिंसा व शोषण के खिलाफ आवाज़ उठाने की जिम्मेदारी लेगी और उन लोगों को प्रेम और सहायता प्रदान करगी जिन्होंने शोषण को सहा है।
- प्रार्थना करें कि प्रभु हमें दीनता के साथ जीवन जीना सिखाएं। (फिलिप्पियों 2:1-12)

पढ़ने के लिए अतिरिक्त अनुच्छेद

1 कुरिन्थियों 6:19-20 हमारा शरीर पवित्र आत्मा का मंदिर है।

मति 1:18-25 मरियम के प्रति युसूफ का बर्ताव और आदर

यूहन्ना 8 :1-11 यीशु और व्यभिचार में पकड़ी गई महिला

उत्पति 19:1-11 अपने मेहमानों को बचाने के लिए लूत अपनी बेटियों को बालात्कार के लिए देता है (स्वर्गदूत कौन थे?)।

12 जवान किशोरों की सूरक्षा: एचआईवी के प्रति उनकी असुरक्षा

यह अध्ययन हमें कैसे बदल सकता है?

हम जानेंगे...

- कि बलात्कार की घटना, जितना हम सोचते है उससे भी ज्यादा आम बात है, और कभी-कभी लड़को का भी बलात्कार होता है
- कि बलात्कार की अधिकतर घटनाएं अनजान लोगो से ज्यादा परिवार के सदस्यों द्धारा ही होती है।

हम बनेंगे...

- हम ज्यादा जागरूक होंगे कि यौन उत्पीड़न के प्रति किशोर या अल्पवयस्क कितने असुरक्षित हैं।

हम कार्य करेंगे...

- अल्पवयस्कों को शिक्षा देने के द्वारा, कि वे अपने आप को कैसे सूरक्षित रखें
- सुनिश्चित करेंगे कि शोषण, विशेषकर यौन शोषण परिवार के अंदर तक ही सीमित या छिपा न रहे।
- उत्पीड़न के शिकार लोगों को सहायता प्रदान करेंगे।

पृष्ठभूमि की जानकारी

अल्पवयस्क किशोर या जवान भिन्न-भिन्न प्रकार के उत्पीड़न जैसे शरीरिक, भावनात्मक और यौन उत्पीड़न का शिकार हो सकते हैं।
यह अध्ययन परिवार के अंदर होने वाले यौन उत्पीड़न पर विचार करेगी। कई लोग समझते हैं कि यौन उत्पीड़न परिवार के बाहर होता है, लेकिन अकसर कई बार ऐसा नही होता है।
बलात्कार की घटना जो कि एक बहुत ही घिनौना काम है, हिंसा के कारण एचआईवी के संक्रमण की संभावना को और अधिक बढ़ा देती है और लिंग की नाजुक त्वचा को नुकसान पहुंचाती है।

मार्गदर्शक के लिए सूझाव

ऐसे सामाजिक एवं आर्थिक दबावों पर विचार करने के द्वारा चर्चा के आयाम को बढ़ायें, जो अल्पवयस्क लोगों को, खासतौर से लड़कियों को उनकी इच्छा के विरूद्ध यौन संबंध बनाने को मजबुर करते हैं।
विचार-विमर्श के लिए लोगो का अलग-लग लिंग समूह में बांट ले। कुछ प्रतिभागियों ने यौन उत्पीड़न और बलात्कार का स्वयं अनुभव किया होगा। लोगो के लिए इन अनुभवों को बांटने का मौका दें केवल, यदि वे तैयार हैं तो, लेकिन किसी से भी उनकी पृष्ठभूमि को न पूछें। लोगो की सहायता करें कि वे दूसरो के बारे में बातचीत करें जिनको वे जानते हैं, लेकिन बिना उसका नाम बताये। इस तरह वे बेनाम होकर अपने बारे में बातचीत कर सकते हैं। इस विषय को बहुत ही संवेदनशील मानें।
हो सके तो सलाह-परामर्श देने के अनुभव वाले ऐसे व्यक्ति की खोज करें जो कि ऐसे लोगों को सहायता प्रदान कर सकता है जो बाद में बातचीत करना चाहेंगे।

व्यवहारिक प्रतिक्रिया के लिए सुझाव

विचार विमर्श करें कि हमारे समुदाय में बलात्कार से पीड़ित लोगों के लिए क्या संसाधन हैं। क्या हम स्थानीय पुलिस से और ज्यादा काम करने को कह सकते हैं?

क्या हमारी कलीसिया और ज्यादा सहायता और सलाह-परामर्श की सेवा प्रदान कर सकती है?

सलाह-परामर्श के कौशल को विकसित करने के लिए कौन से प्रशिक्षण के अवसर उपलब्ध हैं?

हम अपने अल्पवयस्क लोगों को ऐसी परिस्थितियों से बचना कैसे सिखा सकते हैं जहां पर वे खतरे में होते हैं?

इस बात पर विचार-विमर्श करें कि क्या कोई ऐसी सुरक्षा प्रणाली स्थापित की जा सकती है, जिससे कि हमारे समुदायों में हम इन असुरक्षित बच्चो की सुरक्षा प्रदान करने में मदद कर सके।

संदर्भ

www.abigails.org एक ऐसी संस्था जो घरेलू हिंसा के बारे में सलाह, सहायता, परामर्श और बाइबल अध्ययन प्रदान करती है।

The Tamar Campaign : इस नाम को इंटरनेट में खोजें।

सब महिलाओं मे से लगभग एक तिहाई का उनके जीवन के दौरान कभी न कभी बलात्कार होता है, जो कि अकसर उनके परिवारों के अंदर ही होता है। हालांकि सटिक आँकड़ों को प्राप्त करना बहुत मुश्किल है। (Human Rights Watch)

---

2 शमुएल 13:1-22

जवान किशोरों की सूरक्षा: एचआईवी के प्रति उनकी असुरक्षा

यह अध्ययन एक बहुत ही दुख भरे अनुच्छेद पर आधारित है जो मनुष्य की कमजोरी को सबसे बुरी स्थिति में दर्शाती है। राजा दाऊद, यिशै का पुत्र और जो कई सारे भजनों का लेखक है, उसकी कई सारी पत्नियां और बच्चे थे। ये कहानी दाऊद के दो बेटों अम्नोन,अबशालोम और उसकी जवान बेटी तामार की है।

विचार विमर्श

बाइबल के समय में...

1. तामार के बारे में इस अनुच्छेद से हम क्या सीखते हैं?

2. तामार के प्रति अपनी भावनाओ को अम्नोन क्यों अपने तक ही सीमित रखता है। इसका परिणाम क्या हुआ?
3. अम्नोन ने अपनी बात अपने मामा को योनादाब को बताई। वह इतनी आसानी से उसकी सलाह को मानने के लिए क्यो तैयार हो गया?
4. पद 6 से 14 तक में आप अम्नोन के कूकर्म के बारे में क्या सोचते हैं। उसने वलात्कार को अंजाम दिया, लेकिन उसके साथ और कौन इस अपराध के लिए जिम्मेदार था?
5. बलात्कार करने के बाद तामार के प्रति अम्नोन की भावना क्यों बदल गई, इस बारे में आप क्या सोचते हैं?
6. इस कहानी में शामिल सभी पुरुषों की भिन्न-भिन्न भूमिकाएं क्या हैं?
7. बलात्कार के पहले और बाद में तामार ने अपने बचाव के लिए क्या किया और क्या कहा?
8. इस कहानी में भिन्न-भिन्न पुरुषों द्वारा जो कुछ तामार के साथ हुआ उससे तामार कैसे बचाई जा सकती थी?
9. विचार कीजिए इस कहानी के दौरान कितने मौके आये जिनमें यौन उत्पीड़न की घटना को टाला जा सकता था।
10. तामार के साथ जो कुछ भी हुआ था क्या हम उसे किसी रीति से उसके लिए दोषी ठहरा सकते हैं?

एचआईवी के समय में...

11. अकसर कई बार परिवार के ही भीतर लोग किसी न किसी प्रकार के शोषण की शंका करते हैं लेकिन उसको नजरअंदाज कर देते हैं? वे ऐसा क्यों करते हैं?
12. यौन और अन्य उत्पीड़न से अपने किशोर जवानों को हम कैसे बचा सकते हैं?
13. तामर ने अपने ऊपर हुए शोषण के खिलाफ पहले और बाद में भी आवाज उठाई। इसका परिणाम क्या हुआ? हमारी संस्कृति में जो महिला आवाज़ उठाती है उसे उसका परिणाम क्या मिलता है?
14. क्या हमारे समुदाय में तामार जैसी और भी जवान हैं? उनका क्या अनुभव है--और हमारी क्या प्रतिक्रिया है? (बिना नाम दिए इस पर चर्चा करें)

सीखने के लिए मुख्य बातें

- इस शर्मनाक कहानी में शामिल लोगों की चुप्पी बेहद चिंताजनक है। हमारे समुदाय में, यदि मसीही लोगों को मालूम है कि कहीं पर शोषण हो रहा है तो उन्हें मुकदर्शक नहीं बनना है, चाहे व्यक्तिगत रीति से उनकी कोई भी हानि हो।
- बलात्कार शारीरिक शक्ति के बारे में है।
- बलात्कार से पीड़ित को अक्सर एचआईवी संक्रमण हो जाता है।
- न केवल बाहरी लोगों या सिपाहियों द्वारा परन्तु परिवारों के भीतर यौन शोषण आम बात है।
- जवान लोग खासतौर पर लड़कियां, यौन हिंसा के प्रति काफी असुरक्षित हैं और हमें सुनिश्चित करना चाहिए कि वे इस खतरे के बारे में बचपन से ही शिक्षित हो जाए, और यह कि हमारे परिवारों और समुदायों के भीतर उन्हें प्रभावशाली सुरक्षा प्रदान की जाए।

प्रार्थना के लिए विनतीयाँ

- तामार जैसे उन बलात्कार और यौन पीड़ितों के लिए प्रार्थना करें, जो पाते हैं कि उनका जीवन, उनके बिना किसी दोष के तबाह हो गया है।
- हमारी कलीसियाओं के लिए प्रार्थना करें कि वह बलात्कार एवं यौन शोषण के पीड़ितों को उनका भविष्य फिर से बनाने के लिए सलाह और सहायता प्रदान करे।
- प्रार्थना करें कि जब कभी भी शोषण और अन्याय हो रहा है तो मसीही लोग के पास बोलने के लिए साहस हो।

पढ़ने के लिए अतिरिक्त अनुच्छेद

उत्पत्ति19: 1-11 लूत अपनी बेटियों के बलात्कार के लिए तैयार था ताकि वह अपने मेहमानों को बचा सके (स्वर्गदूत कौन थे?)

उत्पत्ति 38: 12-26 यहूदा और तामार

13 स्वस्थ विवाह, स्वस्थ परिवार को बनाता है

यह अध्ययन हमें कैसे बदल सकता है?

हम जानेंगे...

- और समझेंगे शादी और परिवारों के लिए परमेश्वर की इच्छा को
- और समझेंगे कि मजबूत एवं धर्मी परिवारों को बनाने से मजबूत समाज और राष्ट्र का निर्माण होता है।
- दोनों पति व पत्नी के बीच विश्वासयोग्ता, भरोसा, आपसी आदर व सम्मान पर जोर देने से परिवार स्थिर रहता है और बच्चों को बड़ा करने में एक सकारात्मक वातावरण मिलता है।

हम बनेंगे...

- वैवाहिक रिश्ते के मूल्य एवं गहनता की अपनी समझ में हम प्रोत्साहित होंगे।

हम कार्य करेंगे...

- अच्छे रिश्तों को बनाकर, टूटे हुए रिश्तों को फिर से जोड़कर और बच्चों एवं जवानों को शिक्षा दे कर परमेश्वर के प्रेम को समाज पर झलकाएंगे।

पृष्ठभूमि की जानकारी

विवाह परमेश्वर की योजना है न की मानवजाति की। विवाह के शुरूआत की उत्पत्ति वाली कहानी (उत्पति 2:24-25) एक कथन के साथ समाप्त होती है जो ऐसी चार बातों को बताती हैं जिनका हर विवाह में होना जरूरी है।

अलग होगा--'आदमी अपने माता-पिता को छोड़ेगा' - नए विवाहित जोड़े को अपने माता-पिता को छोड़ना अवश्य है।

मेल-मिलाप-- 'अपनी पत्नी से मिले रहना है'—यहां पर सोच एक साथ चिपके रहने या स्थाई रीति से जुड़ने का है।

एकता—'और वे एक ही तन/शरीर बने रहेंगे'—दो जनों का एक बनना।

घनिष्टता--'वे दोनों नंगे थे ...और उन्हें कोई शर्म नहीं थी' – स्वयं का स्वार्थीपन होने की अनुपस्थिति के कारण यह पहला जोड़ा एक-दूसरे में आनंदित था और उन्हें कोई शर्मिन्दगी या तिरस्कृत होने का डर नहीं था।

मार्गदर्शक के लिए सुझाव

कुछ समय के लिए विचारविमर्श करें एक सफल वैवाहिक जीवन कैसे बनता है। चर्चा को आगे बढ़ाने के लिए यहाँ पर सुझाये गये कुछ विषय हैं जो अच्छे वैवाहिक जीवन के निर्माण के लिए हैं। जैसे जीवन भर का वादा, एक साझे की पहचान, विश्वासयोग्यता, बिना रोके प्रेम, आपसी समर्पण, यौन संतुष्टि, खुली बातचीत और एक दूसरे का आदर।

अपनी शादी के शुरूआती सालों में अपने रिश्ते और यौन के बारे में माता-पिता को बिना हिचक के करना सीखना चाहिए। इससे उन्हें ही आसानी होगी जब वे अपने बच्चे को यौन संबंध के बारे में, कैसे लड़कियाँ गर्भवती होती हैं और एचआईवी के खतरों के बारे में शिक्षा देंगे।

व्यवहारिक प्रतिक्रिया के लिए सुझाव

तलाक, अवैध संबंध, शराब और नशीली वस्तु का सेवन वे सब तरीके हैं जिनका लोग शादी की परेशानी से बचने के लिए इस्तेमाल करते हैं। लेकिन ये सब बातें परिस्थिति को और भी खराब कर देती हैं। एक और रास्ता है – एक बेहतर रास्ता। शादी को सफल बनाने के लिए तीन व्यक्तियों की जरूरत पड़ती है—पति, पत्नी और परमेश्वर। जब पति-पत्नी प्रार्थना, बाइबल पढ़कर, मसीह के साथ संगति और उसको समर्पित होते है तो वे एकदूसरे के करीब भी जाते हैं।

संदर्भ

www.rbc.org/index.aspx Radio Bible Class Ministries

- शादी के बारे में विभिन्न उपयोगी प्रश्न एवं उत्तर

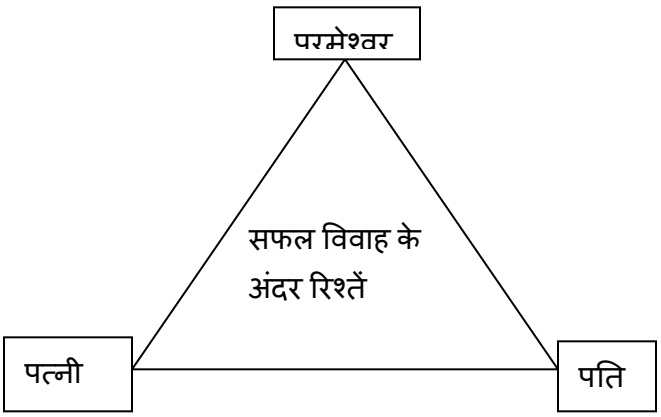

इफिसियों 5:21-33

स्वस्थ विवाह, स्वस्थ परिवार को बनाता है

यह बाइबल अध्ययन हमें पौलुस के द्वारा मजबूत और धर्मी विवाह की महत्वता के बारे में सीखने में मदद करता है और कि कैसे यह स्वस्थ परिवार के लिए एक नींव है।

पौलुस इस अनुच्छेद का इस्तेमाल इफिसियों की कलीसिया यह स्मरण दिलाने के लिए करता है कि धर्मी विवाह का क्या मतलब है (ऐसे समय में जब कि यौन अनैतिकता बहुत प्रचलित थी)। फिर वह माता-पिता और बच्चे के बीच रिश्तें की बात करता है, और परिवार के महत्व को समझाता है।

विचार विमर्श

बाइबल के समय में...

1. विवाह को बनाने वाले कौन है ? विवाह का क्या उद्देश्य है ?
2. आपको क्या लगता है कि पौलुस को क्यों अच्छे विवाह के बारे में इफिसियों से बात करनी पड़ी ?
3. विवाह के रिश्ते में एक-दूसरे को समर्पित होने का क्या मतलब है ?
4. कलीसिया का मसीह के साथ वाले संबंध, के साथ अच्छे विवाह की तुलना पौलुस क्यों करता है ?
5. अच्छे विवाह के लक्षणों के रूप में पौलुस किन बातों को महत्वपूर्ण बताता है?
6. एक मज़बूत परिवार की नींव क्या होती है ?

एचआईवी के समय में...

7. आज के और सांस्कृतिक रूप से हमारे समाज में ऐसे रीति रिवाज़ कौन से हैं जो विवाह एवं परिवार पर नकारात्मक या सकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं? क्या हर परिस्थिति में पत्नी के प्रति विश्वासयोग्य रहना पति के लिए संभव है? क्या हर परिस्थिति में पति के प्रति विश्वासयोग्य रहना पत्नी के लिए संभव है?
8. क्या बात पति और पत्नी को हर परिस्थिति में विश्वासयोग्य रहने में सहायता करती है?
9. टूटे वैवाहिक संबंधों का परिणाम क्या होता है?
10. क्या आप सोचते हैं कि पति-पत्नी को आज के समय में भी एक मजबूत रिश्ते के लिए इन बाइबल के सिद्धांतों का पालन करना चाहिए ? यदि हाँ तो क्यों?
11. परिवारों के ऊपर एचआईवी का क्या प्रभाव पड़ता है?
12. समाज में परिवार की क्या भूमिका है? परिवार को मजबूत और स्वस्थ्य होने में कलीसिया कैसे मदद कर सकती है?

सीखने के लिए मुख्य बातें

- पौलुस सीखाता है कि पति को चाहिए कि वह अपनी पत्नी को वैसे ही प्रेम करे जैसे मसीह अपनी कलीसिया को करता है। पति-पत्नी दोनों को एक दूसरे के अधीन होने की जरूरत है।
- माता-पिता को अपने विवाह में एक अच्छे बाइबल के आधार की जरूरत पड़ती है ताकि एक मजबूत और स्वस्थ्य मसीही परिवार बन सके।
- विवाह का उद्देश्य एक साथी बनाना, आपसी सहारे और बच्चों का लालन-पालन होता है।
- विवाह में आपसी आदर, एक दूसरे का सम्मान, भरोसा और विश्वासयोग्यता की जरूरत होती है।
- एचआईवी से परिवार पर बहुत ही बुरा असर पड़ता है। इसीलिए अपनी नींव को मसीह में डालकर, परिवार को मजबूत और स्वस्थ्य होना बहुत जरूरी है, जिससे कि वे हर चुनौतियों का सामना कर सकें।
- टूटे रिश्तों को फिर से जोड़ने में क्षमा और मेलमिलाप बहुत जरूरी है।

प्रार्थना के लिए विनतीयाँ

- बाइबल पर आधारित विवाह को पुरुष एवं स्त्री समझें और उसका अनुसरण करे।
- एचआईवी से प्रभावित परिवारों के लिए।
- ऐसे बच्चों के लिए जिनका पालन-पोषण टूटे परिवारों के समावेश में हुआ है।

पढ़ने के लिए अतिरिक्त अनुच्छेद

उत्पत्ति 1:26-28 परमेश्वर ने स्त्री-पुरुष को बनाया और उन्हे आशीष दी

कुलुस्सियों 3:18-21 मसीही परिवारों के लिए नियम

1 पतरस 3:1-7 पति-पत्नी के लिए मार्गदर्शिका

इब्रानियों 13:4 विवाह में विश्वासयोग्यता

14 बच्चों की अच्छी मसीही परवरिश

यह अध्ययन हमें कैसे बदल सकता है?

हम जानेंगे...

- बच्चों को पालने में परमेश्वर के नजरिये को हम समझेंगे
- बच्चों और जवानों में धार्मिकता का पोषण करने के महत्व जानना ताकि वे जिम्मेदार नागरिक एवं वयस्क बन सकें।
- बच्चों की शारीरिक, भावनात्मक और आत्मिक जरूरतों को समझना।

हम बनेंगे...

- एचआईवी के कारण बिना माता पिता के पल रहे बच्चों के प्रति जागरूक होना।

हम कार्य करेंगे...

- उन बच्चों को सहायता देकर जिनकी वे देखभाल करते हैं, देखभाल करने वालों की सहायता करेंगे।
- एड्स से अनाथ हुए बच्चों को अपने परिवार में शामिल करने का विचार करके।

पृष्ठभूमि की जानकारी

पूरे विश्व में 25 लाख बच्चे एचआईवी के साथ जी रह रहे हैं। एडस में माता-पिता को खोने के कारण खासतौर पर अफ्रीका में, ऐसे परिवार की संख्या बढ़ रही है जहाँ सिर्फ बच्चे रह गए हैं।
गरीबी के बिगड़ते हुए हालात ने इस परिसिथति को और भी मुश्किल बना दिया है। बच्चों की जो सुरक्षा परिवार और समुदायिक सदस्यों द्वारा होती थी वह अब खत्म हो रहे हैं।
अनाथ बच्चों की संख्या प्रतिदिन बढ़ रही है। संसाधन जो पहले ही से कम थे अब खत्म होने की कगार पर हैं। देखभाल करने वालों के लिए यह एक बहुत बड़ी चुनौती है।

मार्गदर्शक के लिए सुझाव

विचारविमर्श करें, या इन सारे बिंदुओं को याद रखें

- माता-पिता और देखभाल करने वालों को अपने बच्चों के कल्याण के लिए योजना बनानी चाहिए।
- जब आप सामान्यतः जीवन के बारे में, खासतौर पर अपने बच्चों और परिवार के बारे में बात करते हैं तो हमेशा सकारात्मक रहें!
- सभी महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में भाग लें जैसे खेल-कूद, मैच, ग्रैजुएशन और घूमने के लिए जाना।
- खास अवसरों पर कार्ड देना या किताब या तोहफा देना याद रखें।
- अपने बच्चों को बढ़ा करने में परमेश्वर के साथ और दूसरों के साथ सहभागी बनें।
- अकसर खेलकूद करें चाहे जब आपको मन को न भी करे तब भी।

- परमेश्वर के वचन पर मनन करें, बाइबल पदों को याद करें और वैसा ही करने के लिए बच्चों को उत्साहित करें।
- धैर्य एक सदगुण है जो हमेशा अच्छे फल देता है! (गलातियों 5:22-23)
- हर दिन अपने बच्चों के लिए प्रार्थना करें! (इफिसियों 6:18)

व्यवहारिक प्रतिक्रिया के लिए सुझाव

एचआईवी बच्चे के स्वास्थ्य के हर क्षेत्र को प्रभावित करता है—शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक और आत्मिक। इसलिए बच्चे का विकास इन सभी क्षेत्रों में होना चाहिए-- जिसमें शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आत्मिक आयाम शामिल होने चाहिए।

परमेश्वर की आज्ञा को मानना केवल आज्ञा और नियम पालन करना ही नहीं है। यह तो हमारे हृदय और मन की बात है। व्यवस्थाविवरण 6:6

हम परमेश्वर को प्रेम करते हैं कि नहीं इसकी जाँच इससे होती है कि हम उसकी आज्ञा मानते हैं कि नहीं (यूहन्ना 14:21) यदि हम सच में उससे प्रेम करते हैं तो हम उसकी आज्ञाओं को अपने बच्चों तक भी पहुंचायेंगे, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक।

विचारविमर्श कीजिए कि हमारी कलीसिया ऐसे परिवारों की कैसे मदद कर सकती है जिसमें केवल बच्चे ही रह गए हैं।

संदर्भ

Let Your Light Shine: Caring for Children Affected by HIV वीडियो पर आधारित एक ऐसा प्रशिक्षण कोर्स जिसमें कार्य करने के लिए पुस्तकें एवं वर्कशॉप भी है www.arca-associates.org

---

व्यवस्थाविवरण 6:4-9

इफिसियों 6:1-4

बच्चों की अच्छी मसीही परवरीश

एचआईवी और एड्स के कारण विश्वभर में ऐसे परिवारों की संख्या बढ़ रही है जिनमें केवल बच्चे या जवान रह गए हैं। कई बच्चे, बड़े होने के अपने महत्वपूर्ण वर्षों में एक या फिर दोनों माता पिता की सहायता बिना के पल रहे हैं।

विचारविमर्श

बाइबल के समय में...

1. बच्चों को पालने के बारे में हम व्यवस्थाविवरण के अनुच्छेद से क्या सीखते हैं?
2. मातापिता या अभिभावकों को क्या करना चाहिए जिससे उनके बच्चे परमेश्वर के भय में बढ़ सकें?
3. यहूदी परंपरा में, बाइबल के पदों को लिखकर छोटे-छोटे डिब्बों में रखकर, उनके सिर पर या बांहों में बांधा जाता है। बाइबल के पदों के सीखने को हम बच्चों में कैसे प्रोत्साहित कर सकते हैं जिससे की बाइबल के पद 'उनके मनों में रहें' ?
4. इफीसियो के पद से 'मातापिता को आदर देने' का क्या तात्पर्य क्या है ?
5. इसका क्या अर्थ है कि 'हे पिताओं अपने बालकों को क्रोध न दिलाएं' ?

एचआईवी के समय में...

6. विचारविमर्श कीजिए कि क्या अच्छा चरित्र उदाहरण के द्वारा या सीखने के द्वारा सीखा जाता है।
7. आज की समाज में क्या बात दिखाती है कि मातापिता और अभिभावक बच्चों को पालने में परमेश्वर की ओर से दी गई अपनी भूमिका की अपेक्षा कर रहे हैं ?
8. एचआईवी के संक्रमण के प्रति बच्चे और अवयस्क लोग क्यों इतने असुरक्षित हैं ?
9. बच्चों और अवयस्क लोगों को एचआईवी के संक्रमण से बचाने एवं उन्हें जानकारी देने के विषय में हम मातापिता और अभिभावक क्या कर सकते हैं ?
10. एक कहावत है 'एक बच्चे को पालने के लिए पूरे समुदाय की आवश्यकता पड़ती है'। अपने बच्चों और अवयस्क लोगों की देखभाल हम एक कलीसिया और समुदाय के रूप में कैसे कर सकते हैं, खासतौर पर अनाथों और असुरक्षित, या बीमार रिश्तेदार की देखभाल करने वालों की ?
11. अपनी संतान के रूप में परमेश्वर हमारी देखभाल कैसे करता है ? अपने बच्चों और हमारे समुदाय में अवयस्क लोगों की देखभाल करने के लिए हम किस प्रकार से परमेश्वर के उदाहरण का पालन कर सकते हैं?

सीखने के लिए मुख्य बातें

- बच्चों की अच्छी मसीही परवरिश एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। मातापिता और अभिभावकों को इस जिम्मेदारी को गंभीरता से लेना चाहिए और परमेश्वर से सहायता मांगनी चाहिए वे परमेश्वर के वचन को पढ़ने और उस पर चलने के द्वारा अपने बच्चों को अच्छी तरह से पाल सकें।
- बच्चों के लिए अच्छा उदाहरण बनना, धर्मी चरित्र को बनाना—न केवल शब्दों में बल्कि ज्यादा महत्वपूर्ण है अपने कामों में।
- स्पष्ट नियमों की स्थापना करें और अनुशासन का प्रयोग तब करें जब जरूरत पड़े ताकि बच्चे अपनी जिम्मेदारी को समझें।
- अपने बच्चों के लिए शिक्षक और दोस्त बनें। उनकी हर परेशानी में उनके साथ रहें।
- अपने बच्चों को प्यार करें, उनकी बात सुनें और उनके साथ अच्छा समय बिताएं। प्रत्येक बच्चे के अंदर उनके हुनर को विकसित करें।

- ऐसे बच्चों को जो बिना मातापिता के पल रहे हैं उनकी सहायतार्थ और उन्हें प्यार करने के लिए उन्हें समय और संसाधन प्रदान करें। ।
- लड़कियों पढ़ाएं-लिखाएं और प्रोत्साहित करें ताकि वे जागरूकता और आत्मविश्वास के साथ बढ़ सकें। शादी से पहले यौन संबंध बनाने के दबाव को रोकने में यह उनकी सहायता करेगा।

प्रार्थना के लिए विनतीयाँ

- बच्चे को पालने में मातापिताओं के लिए बुद्धि, करूणा, ज्ञान और समझ प्राप्त करने के लिए।
- मुश्किल हालातों में जी रहे उन बच्चों के लिए विशेषकर वे जो अनाथ हैं या परिवारों में अकेले हैं।
- सरकार के लिए कि वे ऐसे कानून बनाएं जो बच्चों को शोषण, उत्पीड़न और हिंसा से सुरक्षा दे।

पढ़ने के लिए अतिरिक्त अनुच्छेद

लूका 2:52 यीशु का पूर्ण रूप से शरीर, मन और आत्मा में विकास।

कुलुस्सियों 3:20 बच्चों, अपने मातापिता की हर बात में आज्ञा पालन करो।

नीतिवचन 22:6 लड़के को शिक्षा उसी मार्ग की दे जिसमें उस चलना चाहिए।

15 लिंग और रिश्तों की पुन:स्थापना

यह अध्ययन हमें कैसे बदल सकता है?

हम जानेंगे...

- एकदूसरे के साथ सृष्टि, प्रेम और अच्छे रिश्ते को उत्सव के रूप में मनाने का महत्व
- परमेश्वर के जैसा बनने का अर्थ है पूर्ण रूप से इंसान बनना और पूर्णरूप से जीवित होना है
- एचआईवी से निपटने के लिए एक दूसरे के नेतृत्व को स्वीकार एवं विकसित करना।

हम बनेंगे...

- एचआईवी के लिए प्रतिक्रिया देने में, शोषण करने के बजाय मिलकर एकदूसरे के साथ सहभागी बनकर काम करेंगे
- अपने रिश्तों में परमेश्वर की भलाई को उत्सव की तरह मनाना
- टूटे हुए रिश्ते को जोड़ सकने योग्य बनेंगे।

हम कार्य करेंगे...

- मानेंगे और इस बात पर काम करेंगे, कि एचआईवी की रोकथाम और देखभाल की योजना बनाते समय महिलाओं की हम अपेक्षा करते हैं।
- नेतृत्व में महिलाओं की भूमिका को फिर से स्थापित करेंगे।
- उस सोच को चुनौती देंगे जो मनुष्य को केवल एक उपयोग की वस्तु समझते हैं।

पृष्ठभूमि की जानकारी

कई शताब्दियों से पूरे विश्व में महिलाओं और लड़कियों के साथ कई भिन्न-भिन्न तरीकों से भेदभाव होता आ रहा है। ज्यादातर समाजों में यह प्रणाली उस मूल्य प्रणाली को दर्शाता है जिसमें लड़के का मूल्य लड़की से ज्यादा है। हम लड़के और लड़की के प्रति दोहरा मापदंड को स्वीकार करते हैं (जैसे कि यौन गतिविधियों में)। हम महिलाओं के स्थान एवं शक्ति पर पुरुष के स्थान एवं शक्ति को उचित ठहराते हैं। हालांकि, यह बाइबल पर आधारित नहीं है। आज के समाज की विशेषता लोगों के बीच विभाजन के द्वारा दर्शाई जाती है, खासतौर पर आदमी और औरत के बीच में। इन विभाजनों ने आदमी और औरत के रिश्ते को कमजोर कर दिया है और उसके परिणामों में अधीन करना, शोषण, हिंसा और मनुष्यों को विशेषकर महिलाओं एवं बच्चों को उपयोग की एक वस्तु समझना शामिल है। एचआईवी के इस दौर में, जब औरतों को इस बीमारी का कारण समझा जाता है और जब कि वे प्रभावितों की देखभाल करती हैं फिर भी इससे बचाव का वे बहुत ही कम उपाय कर पाती हैं।

विजिलैंस के द्वारा चलाए जाने वाले विवाह प्रशिक्षण वर्कशॉप में भाग लेने के बाद हमारे परिवार में कई सारे बदलाव आये हैं। अब मैं अपनी पत्नी के साथ बैठता हूँ और विचारविमर्श अब आसान हो गया है। इससे हम जो कार्य करते हैं उनमें बदलाव आया है। इससे हमारे बीच एकता और सहमति आई है। हमारे करीबी रिश्ते के साथ कई

बदलाव आये हैं। इससे पहले हम यौन संबंधों के बारे में कोई बात नहीं करते थे। यह केवल पुरुष का निर्णय होता था। लेकिन अब दोनों इसकी जरूरत की मांग करते हैं, क्योंकि यह दोनों के लिए जरूरी है।
पास्टर डेनियल, बुरकिना फासो

मार्गदर्शक के लिए सुझाव
स्त्री और पुरुष के बीच भेदभाव लोगों को असुरक्षित बनाता है और यह एक ऐसा कारण है जिसके द्वारा यह जीवाणु फैलता है।
इस लिंगभेद के दीवार को तोड़ डालने की शुरूआत कौन करेगा –पुरुष या महिला, या दोनों? इस बात को समझाएं कि हमारा जवाब हमारे अपने नज़रिये को कैसे पेश करता है। यह शब्द लिंग का अर्थ है इसमें दोनों लिंग शामिल हैं – न केवल स्त्री!
इस चर्चा को प्रोत्साहित करें कि लिंग के मुद्दों पर यीशु का क्या दृषिटकोण था? यदि हम उस समय के परंपरा को देखें तो यीशु ने अपने चेलों स्त्री और पुरुष दोनों के साथ कैसा व्यावहार किया?
ऐसी सफल कहानियाँ को बाँटें जहाँ पर लिंग भेदभाव के ऊपर विजय पाया गया है।

व्यवहारिक प्रतिक्रिया के लिए सुझाव
इन मूल्यों को मानने के बजाय हम कैसे अपनी कलीसिया को पुरूषों के प्रभुत्व एवं स्त्री को अधीन करने वाले नजरिये को चुनौती देने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं?
स्त्री और पुरुष दोनों को परमेश्वर के लोगों के द्वारा एक समान बहुमूल्य समझे जाने के लिए कलीसिया के ढाँचे और शक्ति अधिकार को किस प्रकार बदलने की जरूरत है? कुछ व्यवहारिक कदमों की सूची बनाएं जिन्हें हर स्तर पर कलीसिया के भीतर उठाना चाहिए।

संदर्भ
www.methodist.org.uk/downloads/Incl_gjbiblestudy_0608.doc लिंग, संस्कृति और मसीह कार्य के मुद्दों पर चर्चा के लिए एक बाइबल अध्ययन।

उत्पति 1:26-28

लिंग और रिश्तों की पुन:स्थापना

उत्पति 1 का यह लेखांश स्त्री और पुरुष बीच में बराबर की सहभागिता को दर्शाता है, जबकि उत्पति 2 परमेश्वर द्वारा पुरुष को स्त्री के ऊपर दिए गये वरीयता के साथ बराबर की भूमिका के साथ दर्शाता है। पौलुस इस बात से 1 कुरिन्थियों 11:7-9 में निष्कर्ष निकालता है। इससे हम क्या सीखते हैं?

जब हम उत्पति में सृष्टि की कहानी को पढ़ते हैं तो हम जीवन के जाल में अपने आपसी जोड़ को पहचानते हैं। इस पर हम विचार कर सकते हैं कि हम एकदूसरे पर कैसे निर्भर हैं एवं आपसी जुड़ाव में एक दूसरे के साथ हम कैसे जुड़े हैं।

विचारविमर्श

बाइबल के समय में...

1. जब आप स्त्री और पुरुष की सृष्टि की कहानी को पढ़ते हैं तो कौन सा भाग आपको आकर्षित करता है, जिसमें पुरुष का और या जिसमें स्त्री का चरित्र दिखता है?
2. परमेश्वर ने मनुष्य जाति को क्या करने का अधिकार दिया?
3. स्त्री और पुरुष का एक साथ मिलकर बराबरी में कार्य करने के उत्पत्ति 1 वाला यह लेखांश क्या महत्वपूर्ण बात प्रकट करता है?
4. स्त्री और पुरुष के बीच रिश्ते के बारे में यह हमें क्या बताता है?

एचआईवी के समय में...

5. उत्पत्ति की कहानी में अगुवाई करने, संपत्ति पर अधिकार करने और बच्चों के पालने के लिए कार्य करने की किसको आज्ञा दी गई है? आज के समय में यह हमारे समाज में किस प्रकार से झलकता है, खासतौर पर एचआईवी के क्षेत्र में?
6. हमारे समाज में एचआईवी के प्रति समाधान प्राप्त करने में उत्पत्ति का यह लेखांश कैसे मददगार है?
7. परिवार में और कलीसिया के भीतर रिश्तों की पुन:स्थापना के लिए ऐसी पाँच चीजें बताइए जो आप करेंगे।

सीखने के लिए मुख्य बातें

- परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप और अपनी समानता में रचा (उत्पत्ति 1:27)। परमेश्वर लिंग से बढ़कर है।
- परमेश्वर का स्वरूप मनुष्यों के सभी रिश्तों में झलकता है जो कि परमेश्वर को सहभागिता में, आपसी साझेदारी में और समुदाय में दिखता है, न कि सिर्फ नर और नारी वाले संबंधों में।
- उत्पतित 1:26-28 से हम देख सकते हैं कि अधीनता और प्रभुत्व के अधिकार का प्रयोग अच्छे भंडारी के रूप में पृथ्वी के ऊपर करना है और हमें ध्यानपूर्वक और इंसाफ के साथ कार्य करना चाहिए न कि दूसरे लोगों को नष्ट करने या अधीनता में लाने के लिए।
- देखभाल करने में और सृष्टि को पालने में और सृष्टि की जारी रहने वाली प्रक्रिया में भागीदारी करने में प्रत्येक मनुष्य का सम्मान इस बात में सम्माहित है कि वह परमेश्वर के समान है। स्त्री और पुरुष अलग-अलग हैं लेकिन दोनों परमेश्वर के स्वरूप में रचे गये हैं और सम्मानता में बराबर हैं।

प्रार्थना के लिए विनतीयाँ

- कलीसिया में लिंग असमानता एक गंभीर विवाद है। प्रार्थना करें कि स्त्री व पुरुष दोनों के पास साहस हो कि वे इन हानिकारक रूढ़िवादी सोच को चुनौती दें और लिंग के विषय में बाइबल पर आधारित सोच को प्रोत्साहित करें।
- प्रार्थना करें कि कलीसिया के फायदे के लिए महिलाओं के वरदान पूरी रीति से निकलकर बाहर सामने आएं और एचआईवी के विषय पर प्रत्युत्तर देने में वे बुद्धि और अगवाई दिखाएं।

पढ़ने के लिए अतिरिक्त अनुच्छेद

लुका 10:38-42 यीशु ने मरियम को पुरुषों के समान उसके पास बैठकर सीखने को उत्साहित किया।

यूहन्ना 4:4-26 यीशु एक सामरी स्त्री से बातचीत करते हैं।

मरकस 5:25-34 एक स्त्री लहू बहने वाली बीमारी से चंगाई पाती है।

युहन्ना 8:2-11 व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री।

क्योंकि आधी मानवजाति के साथ भेदभाव होता है इसलिए अपने उद्देश्यों को पाना हमारे लिए असंभव है ।
कोफी अन्नान

---

16 एचआईवी असंगत परिवार

यह अध्ययन हमें कैसे बदल सकता है?

हम जानेंगे...

- विवाह से पहले एचआईवी परीक्षण के लाभ ताकि जोड़ा इस ज्ञान के साथ विवाह कर सके कि एक असंगत जोड़ा बनने पर क्या परेशानी आ सकती है (कुछ लोग विवाह न करने का निर्णय ले सकते है)
- और समझेंगे कि हम में से जो असंगत रिश्ते में हैं वे सुरक्षित यौन संबंध बनाकर, निरोध को ठीक से और निरंतर इस्तेमाल कर एक दूसरे को एचआईवी संक्रमण या फिर से संक्रमित होने से बचा सकते हैं (परिवार में एक को एचआईवी है और दूसरे को नहीं)।
- कि चिकित्सा सहायता के द्वारा असंगत जोड़ों के लिए एचआईवी संक्रमण रहित एक स्वस्थ बच्चे को जन्म देना संभव है।

हम बनेंगे...

- हम जानेंगे कि कई असंगत जोड़े एक खुशहाल वैवाहिक जिंदगी जी रहे हैं।
- जानेंगे कि एक असंगत वैवाहिक जोड़े में बंधने का परिणाम एचआईवी से संक्रमित होना नहीं होता है।
- एचआईवी के कारण असंगत जोड़ों के बीच या एचआईवी के साथ जीवित परिवारों में वास्तविकता एवं उसके परिणामों को जानेंगे।

हम कार्य करेंगे...

- और लोगों को प्रोत्साहित करेंगे कि वे अपने साथी के साथ मिलकर एचआईवी परीक्षण के लिए जाए ताकि उन्हें एकदूसरे की एचआईवी स्थिति के बारे में मालूम हो सके न कि वे अपने साथी के बारे में शक करें या अनुमान लगाएं।

पृष्ठभूमि की जानकारी

असंगत जोड़े का अर्थ है, ऐसे विवाहित जोड़े या यौन साथी जो एक साथ रह रहे हैं, जहाँ एक साथी को एचआईवी है और दूसरे को नहीं। असंगत जोड़ों के लिए हमेशा निरोध को इस्तेमाल करने की सलाह दी जाती है ताकि दूसरा साथी सुरक्षित रहे जिसे एचआईवी नहीं है। मां को जन्म से पहले और बच्चे को ठीक जन्म के बाद चिकित्सा सलाह और एआरटी के द्वारा कई असंगत जोड़े एचआईवी रहित एक स्वस्थ बच्चे को जन्म देने के योग्य हैं।

मार्गदर्शक के लिए सुझाव

ध्यान रखें कुछ प्रतिभागी असंगत जोड़ों में से हो सकते हैं। इसलिए इस विषय पर चर्चा सभी को ध्यान में रखते हुए संवेदनशील होकर करें।

कई परिस्थितियों के लिए परामर्श के कौशल में प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है जिसमें असंगत जोड़े भी शामिल हैं। लेकिन, हर कोई ऐसा प्रशिक्षण प्राप्त नहीं कर सकता है और कठिन परिस्थिति में जब उन्हें किसी की मदद करनी हो तब परेशानी हो सकती है। इस पृष्ठ में कुछ उपयोगी सुझाव दिये गये हैं।

व्यवहारिक प्रतिक्रिया के लिए सुझाव

एचआईवी की अपनी स्थिति को जानना और उस पर खुल कर चर्चा करने की योग्यता, रिश्ते में एक मुख्य कुंजी है, जिससे आप अपने साथी को संक्रमण से सुरक्षित रख सकते हैं।

विवाह और असंगत जोड़ों की सहायता के बारे में कलीसिया की सोच और शिक्षा की जांच करें। क्या वह कोई अनचाही रूकावटें हैं? क्या लोगों को पता है कि चिकित्सा परामर्श के द्वारा कई असंगत जोड़े एचआईवी संक्रमण रहित बच्चे पैदा कर सकते हैं? कलीसिया में अगुवों को प्रशिक्षण देने पर चर्चा करें।

हमारे क्षेत्र में, प्रशिक्षण की सुविधाओं और परामर्श की सेवाओं का पता लगाएं। क्या यह सब आसानी से उपलब्ध और भरोसेमंद है? क्या बेहतर सुविधा के लिए कलीसिया को आवाज़ उठानी या वकालत करनी चाहिए?

संदर्भ

www.avert.org/condoms.htm टूटे हुए जोड़ों के द्वारा निरोध का सफल इस्तेमाल।

परामर्श योग्यता

- लोगों को आराम महसूस करने में मदद करें।
- हर समय उन्हें सम्मान दें।
- अपनी परिस्थिति को बाँटने के लिए उन्हें उत्साहित करें।
- पूरे ध्यान से पूरी बात को सुनें। कई बार हम सोचने लग जाते हैं कि इसके बाद हम क्या पूछेंगे ।
- चुप्पी और आँसू में विचलित न हों।
- आश्चर्य, चौंकने या दोष लगाने वाली प्रतिक्रिया न दें—बात को केवल समझें।
- सलाह न दें, केवल लोगों को उनके विकल्प खुद से चुनने दें और अपने निर्णयों को स्वयं लेने दें। लेकिन यह ध्यान दें कि उसके पास सही जानकारी हो और उन्हें सभी सहायता की जानकारी हो।
- जो बात आपको विश्वास के साथ बताया गया है उसे कभी भी किसी और को न बताएं।
- लोगों ने जो निर्णय लिया है, उसमें उनकी सहायता करें। (भले ही आप उनसे सहमत न हो)।
- लोगों के साथ लगातार मिलते रहें जब तक कि वे भविष्य के लिए ज्यादा सकारात्मक न हो जाएं।

इफिसियो 5:25-33

होशे 4:6

एचआईवी-- असंगत जोड़े

परीक्षण के बाद शायद जोड़ों को मालूम चले कि वे असंगत हैं (जहाँ एक को एचआईवी है और दूसरे को नहीं)। कुछ जोड़े यह जानकर भी कि वे असंगत हैं विवाह का निर्णय लें या यौन संबंध में जाएं। असंगत जोड़ों के लिए एक प्रेम भरे रिश्ते में खुश रहना संभव है।

विचारविमर्श

बाइबल के समय में...

1. इफिसियों के अध्याय मे मसीह ने कलीसिया से कैसे प्रेम किया? उसने इस प्रेम को कैसे दर्शाया?
2. हम अपने प्रतिदिन के जीवन में मसीह के उदाहरण का पालन कैसे कर सकते हैं?
3. कलीसिया के प्रति उसके प्रेम परिणाम क्या था?
4. कलीसिया के प्रति हमारे अपने प्रेम का क्या परिणाम है?
5. मनुष्य के लिए उसकी शिक्षाओं पर चलना कितना आसान है?
6. मसीह के समय में पत्नियां अपने पति का कैसा आदर करती थीं? आज के समय में यह कैसे बदल गया है?

एचआईवी के समय में...

7. होशे के अनुच्छेद को देख पर, ज्ञान का महत्व विषेशकर एचआईवी को लेकर क्या है और उस ज्ञान के न होने के परिणाम क्या होते हैं?
8. इफिसियो के अनुच्छेद से पति और पत्नी की क्या-क्या भूमिकाएं हैं और एचआईवी के रोकथाम, परिवार की देखभाल और सहायता में यह कितना महत्वपूर्ण है?
9. परिवार में एचआईवी होने, विशेषकर असंगत जोड़ा होने पर अपनी पत्नी के प्रति, पति द्वारा प्रेम और सुरक्षा की भूमिका क्यों बढ़ जाती है?
10. मसीहों के लिए यह क्यों इतना महत्वपूर्ण है कि वे परिवार में बीमार और स्वस्थ्य होने पर सदा प्रेम और देखभाल वाला रिश्ता बना कर रखें। (विवाह के वादे)।
11. एक कलीसिया या समुदाय के रूप में हमारे साथ रह रहे असंगत जोड़ों की हम कैसे सहायता कर सकते हैं?
12. अपनी साथी के साथ यौन और एचआईवी के बारे में आप कितनी चर्चा या बातचीत कर करते हैं?

सीखने के लिए मुख्य बातें

- एचआईवी असंगत होना काफी सामान्य बात है, खासकर ऐसे पारिवारिक परिस्थिति में जहाँ जोड़े नियमित रूप से यौन संबंध रखते हैं।
- जब जोड़े एचआईवी परीक्षण के लिए जाते हैं जब उन्हें एकदूसरे की एचआईवी स्थिति का पता चलता है। इससे परिणाम खुलकर उनके सामने आता है जिससे उन्हें अपने साथी को बताने में कोई कठिनाई नहीं होती है। इसके साथ उन्हें परामर्श मिलता है जो उन्हें चुनौती का सामना करने, खासतौर में एचआईवी असंगत में उन्हें सहायता मिलती है।
- असंगत होने के बजाय भी, मसीह ने प्रेम का जो आदर्श कलीसिया के लिए दिखाया, उससे एकदूसरे की देखभाल करने में मसीही जोड़ों को उत्साह मिलना चाहिए, जिससे कि ऐसी इस नाज़ूक हालात में परिवार टूट न जाये।
- कलीसिया और समुदाय में कलंक और भेदभाव लोगों में तिरस्कार की भावना पैदा करता है और ऐसा प्रतीत करा सकता है कि यहं पर किसी को भी एचआईवी नहीं है, चाहे भले ही वहां असंगत परिवार भी हों।

प्रार्थना के लिए विनतीयाँ

- उन असंगत जोड़ों के लिए प्रार्थना करें जिन्हें दूसरों से कलंक और भेदभाव सहना पड़ता है, और संक्रमित साथी के लिए भी जो आत्मगलानी का अनुभव कर रहा हो।
- मसीही जोड़ों के बीच सच्चे प्रेम के फलने फूलने के लिए प्रार्थना करें क्योंकि सच्चा भय को निकाल भगा देता है, जिसमें परिवार के भीतर एचआईवी होने का भय भी शामिल है।

पढ़ने के लिए अतिरिक्त अनुच्छेद

प्रेरितों के कार्य 18:1-3, 18-26 ध्यान दें कि प्रिसकिल्ला और अक्विला दोनों एक साथ काम करते थे।

1 यूहन्ना 3:16 ऐसा प्रेम जो एक दूसरे के लिए अपने जीवन कुर्बान कर देता है।

17 एचआईवी के साथ जीवित लोगों की पूर्ण सहभागिता

यह अध्ययन हमें कैसे बदल सकता है?

हम जानेंगे...

- और समझेंगे कि एक कलीसिया के रूप में सुरक्षित और सहायक वातावरण को बनाना कितना महत्वपूर्ण है जहां पर लोग एक दूसरे पर भरोसा कर सकें,और सभी लोगो के पास एक दूसरे की सेवा करने के लिए अवसर हो ।
- और विचार करेंगे कि हम में से जो एचआईवी में जी रहे हैं उनके लिए पूर्ण सहभागिता का क्या अर्थ है
- और एचआईवी में जी रहे लोगों के पूर्ण सहभागिता के प्रभाव को निम्न बातों में खोजेंगे: प्रभावकारी रीति से रोकथाम, इलाज, देखभाल करने व सहारा देने में, टाली जा सकने वाली मृत्यु और नए संक्रमण को रोकने में।
- और समझेंगे कि कलीसिया की पारंपरिक सोच कितनी सीमित ह जिसमें एचआईवी संक्रमित लोगों की घर में ही देखभाल की जाती है।

हम बनेंगे...

- हम समझ पायेंगे कि मसीह यीशु सारे मानवजाति को अपने में मिलाता है।
- अपनी कलीसिया के लिए परमेश्वर की महान योजना को समझने की नम्रता से कोशिश करने योग्य बनेंगे।

हम कार्य करेंगे...

- आज्ञाकारिता में एचआईवी का प्रत्युत्तर देने में हमारी व्यक्तिगत वचनबद्धता।
- एचआईवी में जी रहे लोगों के पूर्ण सहभागिता को प्रोत्साहित करेंगे
- लोगो को प्रोत्साहित करेंगे कि जो हम अभी कर रहे है उतने में ही हम संतुष्ट न रहे।

पृष्ठभूमि की जानकारी

हमारे दृष्टिकोण को अकसर हमारे सांस्कृतिक और धार्मिक विश्वास आकार देते हैं। यह उस बात को प्रभावित करती है कि हम कैसा व्यवहार करते हैं और एक दूसरे के साथ कैसा बर्ताव करते हैं।

इन कई सालों के दौरान हम एचआईवी के खिलाफ लडाई लड़ रहे हैं, कलीसिया ने अनाथों और असुरक्षित बच्चों के लिए सुरक्षा देखभाल और जिनको एचआईवी से संबंधित बीमारी है उनके घरों में ही देखभाल का प्रबंध किया है। लेकिन कई मामलों में दोष लगाने व कलंकित करने वाले व्यवहार को प्रोत्साहित करने के लिए कलीसिया जिम्मेदार रही है। इसके परिणामस्वरूप हम में जो लोग एचआईवी में जी रहे है वे पूरी रीति से सहभागी नहीं बन पाते हैं । फिर भी लोगों की सोच बदलने में और कलंक को संबोधित करने में कलीसिया के पास बहुत सामर्थ्य व संभावना है। कई लोग जो एचआईवी से बिना थके लड़ रहे थे अब थक गए हैं और सोच रहे हैं कि इतनी मेहनत के बाद भी, कलीसिया के प्रत्युत्तर में बहुत कम उन्नति हुई है।

मार्गदर्शक के लिए सुझाव

विभिन्न प्रकार की सहभागिता जिनका हम अनुभव कर सकते हैं उनको खोजिए, जैसे कि, जो निर्णय पहले लिए जा चुके हों उनके लिए सहमति देना, निर्णयों को आकार देना और ऐसी नई दिशाओं के लिए योजना बनाना, जिनमें सहमति बनाने की जरूरत है। विचार कीजिए कि हम में से जो एचआईवी में जीवित हैं असल में उनकी सहभागिता को कितना प्रोत्साहित किया गया है।

विचार-विमर्श कीजिए कि कलीसिया, कैसे अपनी दोष लगाने वाली सोच को और इस विश्वास को कि एचआईवी एक श्राप या पाप का दंड है, बदल सकती है? यह एक बहुत बड़ी रूकावट है जो कलीसिया को उन लोगों का लाभ प्राप्त करने से रोकती है जो एचआईवी में जी रहे हैं, और साथ ही ऐसे लोगों की सहायता भी करने से रोकती जो जरूरतमंद हैं।

व्यवहारिक प्रतिक्रिया के लिए सुझाव

हम में से जो लोग एचआईवी में जी रहे है उनका कलीसिया पर भरोसा करने, और यह एहसास कराने में कि वे कुछ योगदान दे रहे हैं और दूसरों की मदद के लिए अपने हूनर एवं अनुभव का इस्तेमाल कर रहे हैं, हम किस प्रकार से मदद कर सकते हैं?

इस अध्ययन में हम सीखेंगे कि गलत सोच कितनी आसानी से परिवारों को तोड़ देती है। उसी प्रकार एचआईवी के प्रति गलत सोच कलीसियाई परिवार को तोड़ सकती है। यदि हम पूर्ण सहभागिता के साथ उस आनंद को जिसे परमेश्वर अपने परिवार के रूप में हम सब से चाहता है तो हमें अपनी सोच व व्यवहार को बदलना होगा।

एचआईवी के साथ जीवित लोगों के अनुभव कलीसिया के निर्माण में वास्तविक प्रभाव किस क्षेत्र में ला सकते हैं?

संदर्भ

Positive Voices: Religious leaders living with or personally affected by HIV and AIDS,

Called to Care series No 1, Strategies for Hope Trust, Oxford 2005

Making it Happen: A guide to help your congregation do HIV/AIDS work by Lucy Y Steinitz, Called to Care series No 2, Strategies for Hope Trust, Oxford 2005

कलीसिया एक ऐसी कुंजी है जो ऐसे लोगों को उनकी खोई हुई आशा और आत्म सम्मान को वापस देती है जो उनसे ले लिया गया था। बाइवल कहती है कि हम सब, पुरुष एवं स्त्री दोनों परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गये है। एचआईवी इस बात को नहीं बदल सकता।

पास्टर शमुएल मयेली, HEAL.

Democratic Republic of Congo

लुका 15:11-32

एचआईवी के साथ जीवित लोगों की पूर्ण सहभागिता

लूका के सुसमाचार में यह कहानी परमेश्वर पिता के ह्रदय को दर्शाती है। कई संस्कृतियों में पिता एक आधिकारिक स्वरूप वाला होता है, जिसका उसके बच्चों द्धारा आदर किया और भय माना जाता है। बाइबल के समय में, प्रतिष्ठित व बड़ा आदमी दौड़ता नहीं था। लेकिन इस कहानी में पिता अपनी संस्कृति और परपरा को तोड़कर दौड़ता है और अपने अयोग्य पुत्र के लिए अपने प्रेम और क्षमा को दर्शाता है, उसे गले से लगाता है और आदर देता है। बड़ा पुत्र, जिसने एक अच्छे पुत्र के समान आज्ञा का पालन किया था, नाराज़ हो जाता है। जो इस व्यवहार के योग्य था उसे यह नहीं मिलता, लेकिन जिसे सज़ा मिलनी चाहिए थी, उसके लिए उत्सव मनाया गया ।
खोये हुए पुत्र ने निर्णय लिया कि वह वापस अपने घर चला जायेगा क्योंकि वह जानता था कि घर उस जगह से बेहतर जगह है जिसमें वह उस समय था। बड़े पुत्र ने अपने भाई को मिले सम्मान और क्षमा के प्रति गुस्सा किया। उसका पिता बड़े ही विनम्रता से उसके प्रति अपने प्रेम का आश्वासन देता है और उसके नजरीये को ठीक करता है।

विचारविमर्श

बाइबल के समय में...

1. इस कहानी में मुख्य लोग कोन-कौन हैं?
2. क्या आप इस कहानी को पिता के नजरीये से फिर से बता सकते हैं? या दोनों में से एक पुत्र के नजरीये से?
3. वह क्या बात थी जो छोटे बेटे को पश्चाताप तक लाती है?
4. जब पिता ने अपने खोये हुए पुत्र को देखा तो उसकी प्रतिक्रिया क्या थी?यह प्रतिक्रिया इतनी आश्चर्यजनक क्यों थी?

एचआईवी के समय में...

5. इस कहानी में पिता का व्यवहार किस प्रकार से हमारे प्रति परमेश्वर के व्यवहार को दर्शाती है? क्या यह दूसरों के प्रति हमारे व्यवहार को दर्शाती है?
6. बड़े पुत्र की प्रतिक्रिया क्या थी? आप क्या सोचते हैं कि उसे ऐसा क्यों महसूस हुआ?
7. क्या उसका व्यवहार हमारे नजरीये एवं कैसे हम दूसरों के साथ व्यवहार करते हैं उसको दर्शाता, खासतौर से एचआईवी के संबंध में?
8. एचआईवी के लिए क्या हमारी कलीसिया का कोई आधिकारिक प्रत्युत्तर या घोषणापत्र है? क्या इसमें रोकथाम, देखभाल, सहारा एवं वकालत शामिल है? एचआईवी के प्रति प्रत्युत्तर देने के लिए किसे जिम्मेदारी लेनी चाहिए?
9. क्या हमारी कलीसिया ऐसी जगह है जहां पर हर किसी का स्वागत होता है और जहां हर सदस्य पूर्ण रूप से सहभागिता कर सकता है? अपनी कलीसिया को घर जैसा बनाने और उसमें सहारा देने वाला

वातावरण बनाने के लिए जहां हर कोई भागीदारी ले सकता है, हम पिता की भूमिका कैसे निभा सकते हैं?

सीखने के लिए मुख्य बातें

- हमारा व्यक्तिगत नज़रिया कलीसिया को ऐसी सुरक्षित और ऐसे स्वागतमय समुदाय बनने से रोक सकती है जैसा कि परमेश्वर ने उसके बनने की इच्छा की है।
- कलीसिया के भीतर दोष लगाने वाली सोच, चुप रहने और कलंकित करने वाली संस्कृति को बढ़ावा देती है, और हम में से जो लोग एचआईवी के जीवित हैं उनके द्वारा पूर्ण सहभागी लेने को रोक सकती है। साथ में यह एचआईवी से बचाव के कार्यक्रम को रोक सकती है और लोगों को इलाज, देखभाल और सहारा प्राप्त करने से रोक सकती है। और इसके कारण हम में से जो एचआईवी के साथ जीवित हैं उनके जीवन के स्तर को घटाती है और गैरजरूरी मृत्यु में योगदान करती है।
- कभी कभी हम में से जा एचआईवी में जी रहे हैं आत्मग्लानी से भरकर सोच सकते हैं कि योगदान देने के लिए हमारे पास कुछ भी नहीं है। लेकिन फिर भी, हम में से प्रत्येक को मसीह के देह में योगदान देने के लिए बुलाया गया है।

प्रार्थना के लिए विनतीयाँ

- प्रार्थना करें कि बाइवल के सिद्धान्त के अनुसार चलकर, एक अच्छे गवाह बन कर जो परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करते हैं और उसके बिना शर्त वाले प्रेम को सभी लोगो के साथ बांट कर, हम भी सभी लोगों के साथ को प्रेम कर सकें जैसा कि मसीह ने किया है।
- प्रार्थना करें कि कलीसिया में दोष लगाने वाला व्यवहार बदले, जिससे कि एचआईवी में जी रहे लोग प्रेम और सहारे को पा सकें और अपनी प्रतिभाओं को कलीसिया के साथ बांट सकें।

पढ़ने के लिए अतिरिक्त अनुच्छेद

भजन संहिता 139:13-16 हम में से प्रत्येक जन बहुमूल्य है और परमेश्वर की नज़र में कीमती हैं

1 यूहन्ना 4:7-12 परमेश्वर का प्रेम और हमारा प्रेम

18 असुरक्षित बच्चों के लिए देखभाल और सहारा

यह अध्ययन हमें कैसे बदल सकता है?

हम जानेंगे...

- एचआईवी, दुःख और मृत्यु से प्रभावित अनाथ बच्चों, अन्य असुरक्षित बच्चों और उनकी देखभाल करने वालों के बारे में और ज्यादा जानेंगे।
- देखभाल और सहारा देने के लिए इन समूहों की विशेष जरूरतों को पहचानेंगे।

हम बनेंगे...

- अनाथ बच्चों और अन्य असुरक्षित बच्चों के व्यवहारिक, भावनात्मक और आत्मिक जरूरतों के प्रति संवेदनशील बनेंगे।
- देखभाल करने वालो के ऊपर पड़ने वाले दबाव को समझेंगे।

हम कार्य करेंगे...

- पहचानेंगे कि एक व्यक्ति के रूप में, या एक कलीसिया और एक समुदाय के रूप में अनाथों, अन्य असुरक्षित बच्चों और उनकी देखभाल करने वालों को हम किस प्रकार से इसमें से कुछ देखभाल और सहारे को प्रदान कर सकते हैं।

पृष्ठभूमि की जानकारी

एचआईवी के आर्थिक और समाजिक प्रभाव से सबसे ज्यादा बच्चे तथा उनकी देखभाल करने वाले प्रभावित होते हैं। ऐसे बच्चे जिनके माता पिता बहुत बीमार हैं या मर गये हैं, वे भावनात्मक दुःख, भूख, गरीबी या बुरे स्वास्थ्य से पीड़ित होते हैं। उन्हे भी कलंक सहना पड़ता है। बच्चे खुद भी अपने बीमार रिश्तेदारों या अपने छोटे भाई बहनो के देखभाल करने वाले हो जाते हैं। कुछ तो शायद खुद भी एचआईवी में जी रहे होते हैं। ज्यादातर इन सभी बच्चो का स्कूल छुट जाता है और ये भावनात्मक प्रेम से वंचित हो जाते हैं।

बच्चों से उनके माता पिता या अभिभावकों की बीमारी या मौत के बारे में बात करने में, और दुःखी होने की प्रक्रिया को झेलने में उनकी मदद करने में वयस्क लोगों को काफी परेशानी हेाती है। अनाथ बच्चों की देखभाल करने वाले उनके रिश्तेदार या अभिभावक लोग स्वयं भी अकसर गरीब होते हैं, और सरकार से अपर्याप्त सहायता पाते हैं। साथ में, अपने माता-पिता की बीमारी और असमय मृत्यु के भावनात्मक सदमें को झेलने वाले बच्चों के साथ मेल बनाने में वे अशिक्षित होते हैं। हमारे समुदाय में इन बच्चों को लगातार व्यवहारिक, भावनात्मक और आत्मिक सहायता की जरूरत पड़ती है।

समस्त संसार में एड्स के कारण अनाथ हुए बच्चों में से आधी संख्या की देखभाल उनके बुजूर्ग दादा-दादी करते हैं। उनके पास खाने और चिकित्स्य देखभाल के लिए बहुत थोड़ा पैसा होता है इसमें शामिल शारीरिक कार्य के साथ वे संघर्ष करते हैं।

मार्गदर्शक के लिए सुझाव

अपने जीवन में दुःख और भारी बदलाव के अनुसार ढलने में बच्चों की सहायता करने हेतु वयस्को के लिए उपलब्ध प्रशिक्षण के अवसरों की चर्चा करें।

यदि संभव हो तो ऐसे देखभाल करने वालों और जवानों को आमंत्रित करें जो ऐसे घरों में रहते हैं जहां बच्चे घर के प्रमुख हैं। ये लोग आकर अपने जीवनों के बारे में और उन दबावों के बारे में बातचीत करें जिनका वे अनुभव कर रहे हैं।

इस बात की जांच करें कि किस प्रकार से अनाथों और असुरक्षित बच्चे और उनकी देखभाल करने वालों की जरूरतों को दूसरे लोगों की वकालत व सहायता की जरूरत पड़ सकती है। यह वकालत क्या रूप ले सकती है?

व्यवहारिक प्रतिक्रिया के लिए सुझाव

बच्चे हमारे भविष्य हैं। उनकी जरूरतों का पूरा होना बहुत ही महत्वपूर्ण है ,ताकि वे एक संतुलित, देखभाल करने वाले एवं आत्मविश्वास से परिपूर्ण वयस्क बन सके।

प्रेरितों के काम 6:1- 6 में कुछ विशिष्ट लोगों को पहचाना जाता है ताकि वे विधवाओं की देखभाल करें। इस कहानी को एक उदाहरण के रूप में इस्तेमाल करें कि विशेष जरूरत को पूरा करने के लिए कलीसिया को अपने आप को किस रीति से व्यवस्थित करना चाहिए।

विचारविमर्श करें कि एचआईवी से प्रभावित या अनाथ हुए बच्चों की जरूरतों को पूरा करने में मदद करने के लिए कलीसिया किस रीति से देखभाल और सहायता प्रदान कर सकती है, खासतौर पर जब संसाधन बहुत ही सीमित हों।

विचारविमर्श करें कि इन जरूरतों को पूरा करने में कलीसिया एवं समुदाय के अनुवों की मदद करने में वे अतिरिक्त संसाधन और सहायता क्या है। हम इन्हें कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

संदर्भ

The Child Within: Connecting with children who have experienced grief and loss by Judy Rankin, Called to Care series no. 6, Strategies for Hope Trust, Oxford 2008.

मरकुस 10:13-16; यशायाह 1:17 और याकुब 1: 27

असुरक्षित बच्चों के लिए देखभाल और सहायता

यीशु बहुत गुस्सा हो जाते हैं जब उनके चेले, लोगो को छोटे बच्चों को उसके पास लाने से रोकते हैं। बाइबल में हम केवल दो बार यीशु को गुस्सा दिखाते देख सकते हैं, और यहां पर उनका गुस्सा उनके अपने चेलों के ऊपर था।

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने इस्राएल के अगुवों और लोगों से अनाथों और विधवाओं की सुधि रखने का आहवान किया। नये नियम में, याकुब, हमारे मसीही विश्वास की अभिव्यक्ति के रूप मे कमजोर और असहाय की सहायता करने के व्यवहारिक कर्तव्य के महत्व को बताता है।
कभी कभी बच्चों को वयस्कों की तुलना में कम महत्वपूर्ण समझा जाता है। वे शक्तिहीन, असुरक्षित, कमजोर और दूसरो पर निर्भर होते हैं। लेकिन फिर भी, यीशु उन्हे महत्व देते हैं, और उनके प्रति विशेष चिंता दिखाते हैं।

विचार विमर्श

बाइबल के समय में...

1. चेलो के उन माताओं को क्यों डांटा जो अपने बच्चों को यीशु के पास ला रहे थे?
2. उन बच्चों के प्रति जो यीशु के पास लाये गये थे उसकी क्या प्रतिक्रिया थी?
3. यीशु के लिए बच्चे इतने महत्वपूर्ण क्यों थे?
4. कलीसिया के भीतर बच्चे इतने महत्वपूर्ण क्यों होते हैं?

एचआईवी के समय में...

5. बच्चों के लिए यीशु के नजरीये से हम क्या सीखते हैं?
6. जब बच्चो के माता पिता एचआईवी में जी रहे होते हैं तो बच्चों पर कैसे प्रभाव पडता है?
7. एचआईवी के कारण अनाथ हुए या प्रभावित हुए बच्चों की विशेष जरूरतें क्या हैं?
8. इन बच्चों को देखभाल और सहारा देने में देखभाल करने वालों के लिए, अकसर जो बुजुर्ग होते हैं किस प्रकार के चुनौतियां होती हैं?
9. एचआईवी के कारण अनाथ हुए या प्रभावित हुए बच्चों की देखभाल करने वालों की विशेष जरूरतें क्या हैं?
10. हमारी कलीसिया और समुदाय के भीतर अनाथ बच्चों, असुरक्षित बच्चों और देखभाल करने वालों के लिए देखभाल एवं सहायता के कार्यों में समन्वय बिठाने की जिम्मेदारी कौन लेगा?
11. क्या यह कुछ ऐसी बात है जिसको कि हमारी कलीसिया द्वारा सेवकाई के रूप में विकसित किया जाना चाहिए?

सीखने के लिए मुख्य बातें

- यीशु दिखाते हैं कि परमेश्वर की नजर में बच्चे कितने मूल्यवान हैं। असहाय बच्चों को सहायता देना मसीह शिष्यता का आधार है।
- संस्थाओं एवं सरकारों द्वारा बच्चों की जरूरतों के बारे में विचारविमर्श करने पर बच्चे इतंजार नहीं कर सकते। ये जरूरते अति आवश्यक हैं। यदि बाहरी सहायता उपलब्ध नहीं हैं, तो कलीसिया और समुदाय शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, शारीरिक, आत्मिक और भावनात्मक सहायता देने के लिए काम कर सकती है।
- शारीरिक जरूरतों के साथ-साथ बच्चों को व्यवहारिक शिक्षा, आमोद-प्रमोद, दोस्ती, सहायता और मार्गदशन की जरूरत होती है। हम में से सब लोगइस बारे में विचार कर सकते हैं कि इन में से कुछ जरूरतो को पूरा करने में हम कैसे सहायता कर सकते हैं?

प्रार्थना के लिए विनतीयाँ

- प्रार्थना करें कि और भी कलीसियाएं असहाय बच्चों के लिए सही देखभाल और सहायता की क्षमता को विकसित करे?
- कलीसियाओं के लिए प्रार्थना करे कि वे देखभाल करने वालो की सहायता एवं उनकी वकालत करने में सहायता, प्रशिक्षण और प्रोत्साहन प्रदान करे।
- संस्थाओं के लिए प्रार्थना करें कि वे इन क्षेत्रो में, कलीसियाओं को प्रशिक्षण और सहायता प्रदान कर सकें, ताकि उनके पास प्रचुर मात्रा में संसाधन हो और वे कलीसियाओं को अपनी पूरी क्षमता को एहसास करने में मदद कर सकें।

पढ़ने के लिए अतिरिक्त अनुच्छेद

मत्ति 25:31- 46 यीशु दूसरों की मदद करने और उनकी ना सिर्फ आत्मिक परन्तु शारीरिक जरूरतों को भी पूरा करने के महत्व पर जोर देते हैं।

याकूब 2:14-17 विश्वास और कार्य

2007 के अंत तक, यह अनुमान लगाया गया कि 1.5 करोड़ बच्चों ने एड्स के कारण अपने एक या दोनों माता पिता को खो दिया था।

19 अगुवाई और वकालत

यह अध्ययन हमें कैसे बदल सकता है?

हम जानेंगे...

- कि कलीसिया का प्रमुख महत्व एचआईवी के प्रति प्रत्युत्तर देने में स्पष्ट नेतृत्व को दर्शाना है।
- हम में से जो एचआईवी से प्रभावित हैं उनके लिए संसाधनों को जुटाने में प्रभावकारी वकालत करना कितना जरूरी है।
- एचआईवी के लिए प्रत्युत्तर देने में अगुवाई और वकालत करने की भूमिकाओं के लिए लोगों को उनकी क्षमता को समझने में कैसे मदद करनी है।

हम बनेंगे...

- एचआईवी के इस समय में नेतृत्व के व्यवहारों एवं कार्यों पर मनन करने के लिए सुसज्जित होयेंगे।
- व्यक्तिगत रूप से एचआईवी की वकालत में भूमिका अदा करने के लिए किसी भी स्तर पर तैयार होयेंगे।

हम कार्य करेंगे...

- नेतृत्व या वकालत करने की भूमिकाओं को लेने में अपनी क्षमता पर विचार करने के लिए व्यक्तियों, परिवारों और एचआईवी के साथ जीवित या प्रभावित लोगों को प्रोत्साहित करेंगे।
- समुदायों एवं परिवारों के बाहर एवं भीतर एचआईवी की वकालत के लिए अवसरों की खोज करेंगे।

पृष्ठभूमि की जानकारी

नेतृत्व उस तरीके को आकार देता है जिसमें समाज, व्यक्तियों, समुदायों, परिवारों, और संस्थाएं एक दूसरे के साथ संबंध बनाते और ऐसे मुद्दों का प्रत्युत्तर देते हैं जिनका वे सामना करते हैं। किसी भी व्यक्ति को भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में अगवाई देने के लिए नेतृत्व के पद पर परमेश्वर बुला सकता हैं। कुछ मामलों में, नेतृत्व क्षमता में लोगों की सेवा करने हेतु समुदाय द्वारा व्यक्तियों को नियुक्त किया जाता है।

वकालत का मतलव है कि दूसरों की जरूरतों एवं चिंताओं को समझाने के लिए उनके साथ और उनके हक में उन लोगों से बोलना जिनके पास इन जरूरतों को संबोधित करने और बदलाव लाने का अधिकार होता है। जरूरतमंदो की देखभाल करने और अन्याय को चुनौती देने के लिए हमारे पास बाइबल से आदेश है।

मार्गदर्शक के लिए सुझाव

एक अगुवे के रूप में, नहेम्याह समस्या के समाधान के रूप में व्यक्तिगत रीति से मजदूरी के कार्य में भी शामिल हुआ। लेकिन वह इस कार्य को अकेला नहीं कर सकता था—दीवार बनाने में मदद के लिए उसे पूरे समुदाय की जरूरत थी।

प्रभावकारी नेतृत्व और वकालत किन उपायों की जरूरत हैं इस पर विचार विमर्श कीजिए। कुछ सुझावों होंगे: स्पष्ट समझ, डटे रहना, प्रार्थना, जुनून और प्रभावकारी बातचीत या संवाद।

व्यवहारिक प्रतिक्रिया के लिए सुझाव

एचआईवी के संदर्भ में ,प्रत्युत्तर देने के लिए नहेम्याह के समान कार्य करने के लिए हमारी कलीसियाओं में लोगों को हम किस तरह से उत्साहित कर सकते हैं।

एचआईवी के साथ जीवित लोगों के लिए प्रभावकारी वकालत में शामिल होने के लिए एक मसीही के समान हमारे पास कौन से गुण होने चाहिए?

इस्राएलियों के पास टूटी हूई दीवार एक समस्या थी जो उन्हें आक्रमण के विरूद्ध कमजोर बनाती थी। विचार कीजिए कि हमारे समाज में कौन सी टूटी दीवारें हैं। वे समस्याएं कौन सी हैं जिनका समाधान करने की जरूरत है? एक अगुवे के रूप में न्याय, सच्चाई और हमारे परिवार और समुदाय के सदस्यों के अधिकारों के लिए हम कैसे खड़े हो सकते है?

संदर्भ

Roots 1 and 2: Advocacy Toolkit by Tearfund

यह अब प्रमाणित किया जा चुका है कि पुरुषों का खतना (यदि सफाई से किया गया है) तो एचआईवी से संक्रमित होने के खतरे को पुरुषों में 60 प्रतिशत तक कम करती है। लेकिन फिर भी, जीवाणुरहित किये बिना या संक्रमित ब्लेड को कभी भी इस्तेमाल नहीं करना चाहिए क्योंकि एचआईवी के फैलने की संभावना बनी रहती है। इसके प्रति लोगों को जागरूक बनाने में अगुवे लोग सहायता कर सकते हैं।

नहेम्याह 4:1-20

नहेम्याह 6:15-16

अगुवाई और वकालत

परिवार एवं समुदाय की रक्षा करने के लिए दीवार बनाई जाती है। यदि दीवार कमजोर हो या दीवार में दरार पड़ जाये, तो यह आसानी से गिर सकती है। यदि दीवार टूट जाये तो घर गिर सकता है। इसी प्रकार हमारे समाज में विभिन्न प्रकार की दीवारें एवं संरचनाएं हैं। उनके बिना हमारे समुदाय खतरों के प्रति असुरक्षित हो जाते हैं। नहेम्याह ने अपने समुदाय की जरूरतों को देखा, और अपने लोगों की ओर से वकालत उसने उन लोगों से करी जिनके पास अधिकार था और जो मदद कर सकते थे। पहले वह परमेश्वर के पास, प्रार्थना में गया। और इससे पहले कि वह कोई कार्य करता, उसने ऐसे आधिकारिक लोगों से बातचीत करी जिनके वह अधिकार एवं संसाधन थे जिनकी उसको जरूरत थी।

विचार विमर्श

बाइबल के समय में...

1. वे मुख्य जरूरतें और समस्याएं क्या थीं जिनका इस्राएली लोग सामना कर रहे थे?
2. नहेम्याह ने नेतृत्व के किन गुणों को दिखाया? उसने किससे अपने लिए मदद मांगी?
3. दूसरे लोगों ने किस प्रकार प्रतिक्रिया करी? उन लोगों के इस तरह के व्यवहार पर आप क्या सोचते हैं?
4. दीवार के निर्माण में नहेम्याह ने किस प्रकार के खतरो का सामना किया?
5. दीवार के चारों ओर अच्छे संवाद को सुनिश्चित करने के लिए उसने क्या योजना बनाई?
6. किस प्रकार का कार्य और गुण किसी व्यक्ति को एक अच्छा या बुरा अगुवा बनाते हैं? यीशु के सेवक-अगवाई वाले नमूने पर विचार किजिए।

एचआईवी के समय में...

7. हमारे समुदाय, हमारी कलीसिया या परिवार या देश में अगुवे से हमारी क्या अपेक्षाएं होती हैं?
8. हम अपने समुदाय द्वारा झेली जा रही समस्याओं के समाधान के लिए परमेश्वर द्वारा हमें दिये गये नेतृत्व के गुणों का इस्तेमाल किस प्रकार से करते हैं?
9. अपने समुदाय और परिवार में अगुवाई और वकालत के कार्यों में शामिल होने के लिए हमारे पास कौन से मौके हैं?
10. नेतृत्व एवं वकालत की भूमिका में, हम उन लोगों को एचआईवी के साथ जीवित हैं किस प्रकार शामिल कर एवं सहारा दे सकते हैं?
11. नहेम्याह के समान, एचआईवी के लिए हमारी वकालत एवं नेतृत्व में क्या हमें दूसरे लोगों की सहायता की जरूरत है? किस प्रकार के सहारे एवं रक्षा की हमें जरूरत है?
12. एक व्यक्ति के रूप में, एचआईवी के सदर्भ में किस प्रकार के नेतृत्व के लिए हमें बुलाया गया है?

सीखने के लिए मुख्य बातें

- एक अच्छा नेतृत्व एवं सही वकालत के लिए हमें परमेश्वर के मार्गदर्शन की जरूरत है, जिससे कि हम प्रमुख मुद्दों को संबोधित कर सकें।
- एचआईवी के सभी कार्यों में ज्यादा काम करने हेतु स्थानीय सरकार एवं संस्थाओं को चुनौती देने के लिए कलीसिया अच्छी रीति से स्थापित स्थिति में है।
- जिन लोगों को हमारी जरूरत है उनका साथ देने, सहारा देने और उनके साथ खड़े रहने की हमारी जिम्मेदारी है।
- अपनी परिस्थितियों में प्रभावकारी एचआईवी नेतृत्व और वकालत प्रदान करने के लिए हम सब को वचनबद्धता, बुद्धिमानी और सशक्तिकरण की जरूरत है।

प्रार्थना के लिए विनतीयाँ

- परमेश्वर से यह मांगे कि ऐसी सभी परिस्थिति में जहां नेतृत्व नहीं है या कमजोर है और जहां पर हम 'गिरी हुई दीवारों' का सामना कर रहे हैं, ऐसी परिस्थिति को फिर से ठीक करने के लिए सामर्थ्य, समझ और अनुग्रह पाने के लिए वह हमें दिखाये कि हम उस पर कैसे भरोसा कर सकते हैं।

- उन सभी लोगों के लिए प्रार्थना करें जो गरीबी, लिंग पर आधारित हिंसा और भेदभाव के कारण एचआईवी के प्रति असुरक्षित हैं।
- उन लोगों के लिए प्रार्थना करें जो ऐसे बच्चों की देखभाल करते हैं जिन्होंने अपने मातापिता को खो दिया है या जिनके माता पिता बीमार है, और जो बिना रक्षक एवं जरूरतों पूरा करने वालो के बिना जी रहे हैं।
- मसीही होने के नाते हमें उन लोगों के पक्ष में बोलने के लिए बुलाया गया है जो जरूरतमंद हैं। प्रार्थना करें कि हम कैसे नहेम्याह के समान बनें और अपने समुदायों में जरूरतों को पूरा करने में अगुवाई दे सकें।

पढ़ने के लिए अतिरिक्त अनुच्छेद

यशायाह 6:8 भविष्यद्वक्ता यशायाह परमेश्वर की बुलाहट का जवाब देता है।

मीका 6:8 परमेश्वर हमें न्यायपूर्वक कार्य करने एवं दया दिखाने के लिए बुलाता है।

याकूब 2:14-17 व्यवहारिक विश्वास हमारे कार्य के द्धारा झलकता है।

20 मृत्यु की दशा में तैयारियाँ

यह अध्ययन हमें कैसे बदल सकता है?

हम जानेंगे...

- मृत्यु की वास्तविकता पर विचार एवं खोज कैसे करना है
- 'बचाई जा सकने वाली' मौतों को रोकने के लिए किस प्रकार कार्य करना है।

हम बनेंगे...

- मृत्यु एवं मरने के विषय पर ज्यादा खुल कर बातचीत करने योग्य बनेंगे और इस विषय के आसपास की चुप्पी एवं रवैये को खत्म करेंगे।

हम कार्य करेंगे...

- भविष्य की योजना बनाने के लिए लोगों की मदद करने के लिए और मृत्यु के दशा में उनके परिवारों की देखभाल करने के लिए

पृष्ठभूमि की जानकारी

एक आम धारणा यह है कि बीमारी और मौत परमेश्वर की इच्छा है और इस पर किसी का बस नहीं है। फिर भी जीवन परमेश्वर की ओर से एक बहुमूल्य उपहार है, और सही इलाज, प्रोत्साहन, देखभाल एवं सहारे के साथ कई लोग जो एचआईवी से संबंधित बीमारियों से ग्रस्त हैं फिर से स्वास्थ्य को प्राप्त कर सकते हैं और जीवन को भरपूरी के साथ जी सकते हैं। इसलिए प्रतिभागियों को इस मृत्युवाद वाले दर्शन से लड़ने में मदद करना महत्वपूर्ण कार्य है। मृत्युवाद का यह दर्शनशास्त्र लोगों को उम्मीद छोड़ देने और अनावश्यक जल्दी मरने की ओर ले जाता है।

मार्गदर्शक के लिए सुझाव

इस बारे में सचेत रहें कि मौत और मरने के विषय पर बातचीत करने से लोगों में गहन भावना जग सकती है। समूह में जरूरतों एवं भावनाओं के प्रति संवेदनशील रहें। लोग इन विषय का सामना स्वयं कर रहे होंगे, या अपने प्रिय जन की मृत्यु पर शोक मना रहे होंगे, इसलिए जैसा लोगों को आरामदायक लगे उसी के अनुसार कम या ज्यादा भागीदारी के लिए लोगों को अनुमति दें।

व्यवहारिक प्रतिक्रिया के लिए सुझाव

जो लोग बीमार हैं, उन्हें उम्मीद न छोड़ने के लिए प्रोत्साहित करें –बल्कि जहां कही भी उपलब्ध हो वे चिकित्स्य सहायता एवं इलाज को प्राप्त करें।

यदि किसी स्थान पर एआरटी का प्रबंध नहीं है, तो बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं को पाने हेतु चर्च में से एक समूह स्थानीय नेताओं एवं सरकारी अधिकारियों के साथ बातचीत करने के लिए, सामुदायिक सहारे को एकत्र कर सकता है।

उन मातापिताओं के लिए जो एचआईवी या एड्स के साथ बीमार हैं, बच्चों के लिए याददाश्त के बॉक्स तैयार करना सांत्वना का स्रोत प्रदान करेगा एवं आने वाले वर्षों में अपने मातापिता को याद करने को निश्चित करेगा। चाहे मृत्यु किसी भी कारण से हो, सभी मातापिताओं को अपनी मृत्यु को ध्यान में रखकर अपने बच्चों की देखभाल के लिए योजनाओं या कानूनी योजनाओं को बनाना चाहिए।

संदर्भ

Memory Book for Africa by C L Smith and R O'Brine, 2000.

Teaching Aids at Low Cost, www.talcuk.org

Footsteps 61 Memory boxes, pages 8-9

www.Biblelight.org The death of Jesus

www.spirithome.com.death.html Death and dying

बाइबल के समय में...

याददाश्त के बॉक्स

याददाश्त के बॉक्स में सभी प्रकार की वस्तुएं रखी जा सकती हैं जो कि उनके मातापिता को याद करने में बच्चों की मदद कर सकें। इसमें फोटो, विशेष खाना बनाने का ढंग, विशेष चित्र, कार्ड एवं पत्र और किसी घटना या तारीख के विवरण आदि शामिल किया जा सकता है जो परिवार या समुदाय के लिए विशेष हों। उन्हें अपने दोनों मातापिता की महत्वपूर्ण जानकारी को भी इसमें शामिल करना चाहिए जैसे पूरा नाम एवं जन्म, शादी एवं मृत्यु की तारीखें और स्थान, महत्वपूर्ण दस्तावेज़ या कीमती सामान कहां रखा है और अपने परिवार की पीढ़ी दर पीढ़ी के विवरण।

यूहन्ना 11:1-16

मृत्यु की दशा में तैयारियाँ

अकसर मृत्यु के विषय में बातचीत करना मुश्किल होता है क्योंकि यह डर पैदा करने वाला एवं वर्जित विषय है। फिर भी यह ऐसा विषय है जो हम सब को प्रभावित करता है। बाइबल का यह अध्ययन इस मुश्किल विषय को पवित्र शास्त्र के द्वारा खोज करने के लिए हमें एक अवसर प्रदान करता है। हमारे विश्वासों एवं कार्यों की ओर देखने में और हमारे द्वारा किये जा सकने वाले किसी भी सकारात्मक बदलाव पर विचार करने में यह हमारी मदद करेगी।

विचारविमर्श

बाइबल के समय में...

1. जब लाज़र बीमार पड़ा तो दोनों बहनों ने यीशु को क्यों कहलवा भेजा?
2. यीशु ने वहां जाने में देरी क्यों की?
3. क्या लाज़र की मृत्यु को रोका जा सकता था? विचार विमर्श कीजिए।

एचआईवी के समय में...

4. हमारी संस्कृति में मृत्यु के विषय पर बातचीत करना इतना कठिन क्यों है?
5. जो लोग ऐसे लोगों की देखभाल करते हैं जो मरने पर हैं वे किस तरह की भावनाओं से होकर गुजरते हैं?
6. हमारी संस्कृति में, मृत्यु के लिए तैयारी के आम तरीके क्या हैं? क्या ये रीतिरिवाज़ मददगार हैं या हानिकारक हैं?
7. मौत के लिए तैयारी, आशा प्रदान करना और लोगों को जहां कहीं संभव हो उनके जीवनों को जारी रखने के प्रोत्साहित करने के बीच में हम किस तरह से संतुलन बना सकते हैं?
8. क्या कुछ ऐसे व्यवहारिक कदम हैं जिनसे इन विषयों का सामना करने के लिए हम एक दूसरे की मदद कर सकते हैं?

सीखने के लिए मुख्य बातें

- मौत हम सब के लिए एक वास्तविकता है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि जब कोई बीमार पड़ता है तो हमें उम्मीद छोड़ देनी चाहिए या निराश हो जाना चाहिए। जीवन कीमती है और इसको बचाना चाहिए, इसलिए एक मसीही होने के नाते, बचाये जा सकने वाले लोगों के लिए हमें वह सब कुछ करना चाहिए जो हमें करना चाहिए (विशेषकर यदि कोई बच्चा इसमें शामिल है)। चिकित्स्य इलाज, और अच्छी देखभाल एवं सहारे से कई लोग यहां तक कि गंभीर बीमारी से भी ठीक हो सकते हैं, और हम में से जो एचआईवी के साथ जीवित हैं वे एक भरपूर एवं स्वस्थ्य जीवन जी सकते हैं।
- लेकिन फिर भी इसका अर्थ यह नहीं कि जब मृत्यु पास हो तो हमें अंजान या उसे नजरांदाज करना चाहिए। मृत्यु का सामना एवं तैयारी करने के लिए हम एक दूसरे की मदद कर सकते हैं। हमें भविष्य में अपने परिवारों के लिए आशा एवं अपने डरों के बारे में बातचीत करने की जरूरत है। एक कलीसियाई समुदाय के रूप में, हम उन लोगों को देखभाल एवं सहारा दे सकते हैं जो मर रहे हैं, ऐसे परिवार को जो ऐसे बीमारों की देखभाल कर रहें जो मरने पर हैं, उनके लिए प्रार्थना कर सकते हैं, और मृत्यु की स्थिति में परिवार के लिए भविष्य की योजना बनाने में लोगों की मदद कर सकते हैं।

प्रार्थना के लिए विनतीयाँ

- उन लोगों के लिए प्रार्थना करें जो बीमार हैं, विशेषकर ऐसे लोगों के लिए जो मृत्यु शय्या पर हैं या जिन्हें डर लग रहा है। दर्द से चंगाई के लिए और इस बात के लिए प्रार्थना करें कि वे परमेश्वर की शांति एवं उपस्थिति को जान पायें।
- उन परिवार सदस्यों के लिए प्रार्थना करें जो बीमारों की देखभाल कर रहे हैं, और उन लोगों के लिए जिन्होंने अपने प्रिय जन को खो दिया है। प्रार्थना करें कि उनके पास सहनशक्ति हो और वे सांत्वना को प्राप्त कर सकें।

- बुद्धि एवं समझ के लिए प्रार्थना करें कि इन परिस्थितियों में हम कैसे लोगों की मदद कर एवं उन्हें सहारा दे सकते हैं।

पढ़ने के लिए अतिरिक्त अनुच्छेद
सबोपदेशक 9:10 पृथ्वी पर अपने समय को ठीक से इस्तेमाल करना
उत्पत्ति 3:19 हम सब मिट्टी में मिल जायेंगे
यशायाह 57:1-2 धर्मी के लिए मृत्यु शांति एवं आराम लाती है

21 मृत्यु की सच्चाई

यह अध्ययन हमें कैसे बदल सकता है?

हम जानेंगे...

- मृत्यु की सच्चाई पर कैसे खोज एवं विचार करें
- मृत्यु का सामना कर रहे लोगों के साथ कौन से बाइबल के अनुच्छेदों का इस्तेमाल करें ताकि उन्हें सांत्वना और आशा मिले।

हम बनेंगे...

- मृत्यु और मरने के बारे में खुलकर बातचीत करेंगे और इस विषय पर जो चुप्पी और निषेधता है उसे तोड़ेंगे।
- उन लोगों के साथ जिनका समय नजदीक है प्रार्थना कर पायेंगे, साथ में स्वीकरण और हृदय एवं दिमाग की शांति प्राप्त करने में उनकी सहायता करेंगे।

हम कार्य करेंगे...

- मृत्यु की दशा में भविष्य के लिए और अपने परिवारों की जरूरतों को पूरा करने के लिए योजना बनाने में लोगों की मदद करेंगे।

पृष्ठभूमि की जानकारी

मृत्यु एक दिन सबको आनी है। यह महत्वपूर्ण है कि मृत्यु से हमारा सामना समझदारी के साथ और इस बात को स्वीकार करने के साथ हो कि यह हमारे लिए परमेश्वर की ठहराई गई योजना का हिस्सा है।
परमेश्वर में हमारा विश्वास मृत्यु के सामने शक्ति और साहस देता है। परमेश्वर में हमारा विश्वास मृत्यु पर हमीं उसके अद्‌भुत उपस्थिति में ले जाता है। जो मर रहे हैं, उनके साथ संवेदनशीलता में, यदि वे पूछते हैं तो हम सब को अपने भविष्य की आशा को उनके साथ बांटने को तैयार रहना चाहिए।
ऐसे माता-पिता जिनके बच्चे हैं अपने बच्चों को भविष्य का सामना करने के लिए तैयार करने में कई विभिन्न महत्वपूर्ण चीजें है जिन्हें वे कर सकते हैं।

मार्गदर्शक के लिए सुझाव

पिछले अध्याय में पढ़ी गई लाज़र की मृत्यु की कहानी यहां पर जारी है। सिर्फ यीशु के चमत्कार पर ही ध्यान न दें, परन्तु उन लोगों की प्रतिक्रिया को भी देखें जो आसपास हैं—विशेषकर लाज़र की बहनें, मरियम और मार्था।
लोगों के सथ विचारविमर्श करने में मदद करें कि क्या हम लोग मौत का सामना करने को तैयार हैं। क्या कोई ऐसे खास विषय हैं जिनके बारे में हमें डर लगता या हम चिंतित हैं।
इस बात पर विचारविमर्श करें कि जब किसी के परिवार में कोई व्यक्ति मर रहा हो तो हम किस प्रकार की सांत्वना या सहायता उन लोगों को दे सकते हैं।

व्यवहारिक प्रतिक्रिया के लिए सुझाव

स्वयंसेवकों को तैयार करें कि वे बीमारों के घरों में जाकर उन्हें प्रोत्साहन, व्यवहारिक देखभाल और सहायता दें या उनके साथ सिर्फ बातचीत और प्रार्थना करें।

लोग अपने दोस्तों से बात कर सकते हैं कि उनकी मृत्यु के बाद उनकी संपत्ति का क्या होना चाहिए। उदाहरण के लिए, कैसे हम अपने बच्चों के लिए यह सुनिश्चित करें कि उनकी जरूरते पूरी की जायेगी और वे घर पर ही रहें? दोस्त की सहायता से वे अपनी अंतिम इच्छा को लिख सकते हैं जो कि एक हस्ताक्षरित पत्र के समान होता है जिसे उनकी मृत्यु के बाद पढ़ा जाये, जिसमें यह स्पष्ट रूप से लिखा हो कि उनके बाद उनकी संपत्ति एवं घर के साथ क्या होना चाहिए। ऐसे दो लोग जो परिवार का हिस्सा नहीं हैं, और जो उस अंतिम इच्छा पत्र के लाभ प्राप्त करने वाले नहीं हैं, उन्हें उस पत्र पर तारीख के साथ हस्ताक्षर करना चाहिए ताकि उस पत्र का कानूनी अधिकार हो।

विचारविमर्श करें कि जब हम जीवित ही हैं तो इस बात को सुनिश्चित करने के लिए कि यदि मृत्यु हो जाती है, तो हमारा परिवार, खासतौर पर बच्चे सुरक्षित रहें और उनकी जरूरत पूरी हो। इस बात के लिए हम कैसे योजना बना एवं व्यवहारिक तैयारी कर सकते हैं।

संदर्भ

www.Biblelight.org यीशु की मृत्यु

www.spirithome.com/death.html मृत्यु और मरना

The Child Within: Connecting with children who have experienced grief and loss by Judy Rankin, Called to Care series No.6, Strategies for Hope Trust, Oxford 2008.

यूहन्ना 11:17-44

मृत्यु की सच्चाई

मृत्यु का प्रत्युत्तर देने के लिए प्रत्येक संस्कृति के पास अलग-अलग तरीकें हैं। ऐसे कई कर्मकांड और रीतिरिवाज़ हैं जो हमारी मदद करते हैं कि हम अपने प्रिय जनों का सम्मान करें जब वे मरते हैं, और शोक व्यक्त करने में हमारी मदद करते हैं। लेकिन फिर भी, कुछ परंपराएं और विश्वास लाभदायक होने के बजाय हानिकारक हो सकते हैं। इस अनुच्छेद में हम देखेंगे कि अपने दोस्त की मृत्यु के प्रति यीशु की कैसा प्रत्युत्तर देता है।

विचारविमर्श

बाइबल के समय में...

1. लाजर की मृत्यु पर यीशु की क्या प्रतिक्रिया थी?

2. यीशु के लिए मारथा और मरियम की प्रतिक्रियाओं में क्या भिन्नताएं थी?
3. मारथा और आसपास खड़े अन्य लोगों की तुलना में यीशु का व्यवहार कैसा था?
4. इस लेखांश में यीशु ने कौन से साहसी कार्यों को किया? (रोना, कब्र को खोलना, कब्र के वस्त्रों को खोलना)। हमारे समाज में, लोग कैसी प्रतिक्रिया करते?

एचआईवी के समय में...

5. मौत, गाड़े जाने और शोक मनाने को लेकर हमारे समाज में कौन सी परंपराएं और रीतिरिवाज़ हैं? इनमें से कौन सी मददगार हैं और कौन हानिकारक, और क्यों?
6. क्या इनमें से कोई रीतिरिवाज़ लोगों को एचआईवी के प्रति असुरक्षित बनाता है। हम इसे कैसे बदल सकते हैं?
7. यह जानते हुए भी कि वह लाजरस को वापस जिंदा कर देगा, यीशु रोया। जो लोग कर रहे हैं, उनके प्रति हमारी कैसी प्रतिक्रिया होनी चाहिए?
8. जो लोग अपनों के जाने के गम में शोक मना रहे हैं, उन्हें हम कैसे सांत्वना और व्यवहारिक सहायता दे सकते हैं?

सीखने के लिए मुख्य बातें

- यह कहानी यीशु की अद्‌भुत चमत्कार की है—लेकिन परमेश्वर आज भी चमत्कार के द्वारा कार्य करता है। परमेश्वर के चंगाई और नया जीवन देने की शक्ति पर हमारे विश्वास को कोई सीमा नहीं लगानी चाहिए।
- जब लोग शोक करते हैं तो सही शब्दों का प्रयोग करने से ज्यादा महत्वपूर्ण है लोगों के साथ रहना और अपना प्यार दिखाना।
- मृत्यु निकट है, यह जानने पर लोगों को व्यवहारिक रूप से इसके लिए तैयार रहने में सहायता मिलती है, लेकिन सबसे ज्यादा सहायता आत्मिक रूप में मिलती है।

प्रार्थना के लिए विनतीयाँ

- उन लोगों के लिए प्रार्थना करें जो मृत्यु का सामना कर रहे हैं, कि मृतकों के जी उठने पर हमारे विश्वास के द्वारा उन्हें सांत्वना मिले।
- और अंत में, हम सबको मृत्यु के द्वारा, पृथ्वी पर हमारे दु:ख खत्म करके और अपने साथ अनंत जीवन में लेकर परमेश्वर हमें चंगाई देगा।

पढ़ने के लिए अतिरिक्त अनुच्छेद

1 थिस्सलुनीकियों 4:13-14 पुनरुत्थान में हमारी आशा

1 कुरिन्थियों 15:12-20 मृतकों का पुनरुत्थान

1 कुरिन्थियों 15:51-57 जय ने मृत्यु को निंगल लिया!

22 अपने प्रिय जनों की मृत्यु का शोक करने के बाद जीवन के साथ सामंजस्य करना

यह अध्ययन हमें कैसे बदल सकता है?

हम जानेंगे...

- और उन व्यवहारिक तरीकों को समझेंगे जिसमें हम मृत्यु और शोक के द्वारा एक दूसरे की सहायता कर सकते हैं

हम बनेंगे...

- अपने दोस्तों और प्रिय जनों के मरने के कारण शोकित लोगों के साथ शोक करने योग्य बनेंगे।
- इस योग्य बनेंगे कि हम मृत्यु को दुःख-दर्द से छुटकारे के रूप में और परमेश्वर के साथ नया जीवन शुरू करने के रूप में देख सकेंगे।

हम कार्य करेंगे...

- जिन्होंने अपने प्रियों को खोया है उन लोगों की सहायता और उन्हें उत्साहित करेंगे।
- ऐसे बच्चों की भावनाओं, और प्रतिक्रिया में सहायता करेंगे जिन्होंने अपने माता-पिता को खोया है।

पृष्ठभूमि की जानकारी

1 कुरिन्थियों से बाइबल के इस अनुच्छेद में, उत्पत्ति के पुस्तक से आदम को 'प्रथम मनुष्य' बताया गया है, और 'अंतिम मनुष्य' यीशु मसीह को बताया गया है। यह यीशु मसीह का पुनरूत्थान ही है जो पाप और मृत्यु की शक्ति को तोड़ती है, और हमें यह आशा देती है कि मृत्यु अंत नहीं है।

मार्गदर्शक के लिए सुझाव

याद रखें कि मृत्यु और शोक का विषय बहुत भारी भावनाओं को उजागर कर सकता है। संवेदनशील बनें और लोगों को तभी सुनने और भाग लेने की अनुमति दें यदि वे सहज महसूस करते हैं।

कई ऐसे लोग होंगे जो हाल ही की उनके प्रियों की मृत्यु के कारण अपने शोक और गम से भरे हो सकते हैं। एक दूसरे की मदद करने के लिए अपने अनुभवों एवं मृत्यु से हुई हानि को एक दूसरे के साथ बांटने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करें –लेकिन तभी जब वे ऐसा करने पर सहजता महसूस करते हों।

व्यवहारिक प्रतिक्रिया के लिए सुझाव

यदि कई लोगों ने अपनों को हाल ही में खोया है तो मिलकर उन विषयों पर जिनका सामना वे कर रहे हैं और एक दूसरे की मदद करने के लिए समूह में बातचीत कर सकते हैं।

क्या हम ऐसे बच्चों को मौके दें जो अनाथ हो गये है कि किसी व्यस्क के मदद से वे एक साथ मिलकर बातचीत करें और एक दूसरे की सहायता करें जब वे इस दुख से गुजरते हैं।

यदि बच्चों के माता-पिता ने यादगार बॉक्स नहीं बनाया है तो उसे बनाने में क्या हम उनकी सहायता कर सकते हैं?

संदर्भ

Footsteps 61 Children and HIV

Memory Book for Africa by CL Smith and R O'Brine, 2000.

Teaching Aids at Low Cost, www.talcuk.org

www.Biblelight.org The death of Jesus

www.spirithome.com/death.html Death and dying

The Child Within: Connecting with children who have experienced grief and loss by Judy Rankin, Called to Care series No 6, Strategies for Hope Trust, Oxford 2008.

---

1 कुरिन्थियों 15:35-58

22 अपने प्रिय जनों की मृत्यु का शोक करने के बाद जीवन के साथ सामंजस्य करना

मृत्यु एक सच्चाई है जिसका हम सबको सामना करना चाहिए। अंत में सबको मरना है। एक मसीही के रूप में, यीशु मसीह पर विश्वास के द्वारा हम सब मृत्यु का सामना सामर्थ्य और आशा के साथ कर सकते हैं। हम उन लोगों को सांत्वना दे सकते हैं जो अपने प्रिय जनों की मृत्यु के गम में शोकित हैं। इस लेखांश में हम देखेंगे कि मृत्यु के बाद वाले जीवन के बारे में बाइबल क्या कहती है।

विचारविमर्श

बाइबल के समय में...

1. जब हम मर जाते हैं तो क्या होता है, उस विषय में यह लेखांश क्या बताता है?
2. यह 'अंतिम मनुष्य' कौन है?
3. आप आखिरी तुरही के फुंके जाने से क्या समझते हैं (पद 52)?
4. इस वाक्यंश का क्या अर्थ है: 'जय ने मृत्यु को निगल लिया '(पद 54)?
5. क्या आप इस लेखांश से सांत्वना पाते हैं? बताइए क्यों?

एचआईवी के समय में...

6. मृत्यु और उसके बाद के जीवन के बारे में हमारे समाज में कौन से रीति-रिवाज़ एवं विश्वास हैं? जिस बात को पौलुस ने यहां लिखा है उससे इन रीतिरिवाज़ों तुलना कैसे होती है?

7. अनंत जीवन का नजरीया इस जीवन के दिन-ब-दिन वाली चुनौतियों का सामना करने में किस प्रकार हमारी मदद करती है, खासतौर पर एचआईवी को लेकर? हमारी मृत्यु या हमारे प्रिय जनों की मृत्यु का सामना करने में यह बात हमारी मदद कैसे करती है?
8. जब कोई मरता है, तो इस बात को हम उनके बच्चों को कैसे बता सकते हैं? किस प्रकार के प्रश्न वह बच्चा पूछ सकता है जिसने अपने माता-पिता को एचआईवी के कारण खोया है? हम क्या जवाब देंगे?
9. कौन से बाइबल के पद, गाने और शोक संदेश अन्त्येष्टि पर, या हाल में शोकित लोगों को सांत्वना देने के समय इस्तेमाल होते हैं? क्या वे मददगार होते हैं? क्या और भी ऐसे व्यवहारिक तरीके हैं जिनसे एक व्यक्ति और एक समुदाय के रूप में हम उन लोगों की देखभाल एवं उनको सहारा दे सकते हैं जो शोक कर रहे हैं?
10. फिलिप्पियों 1:21 में पौलुस कहता है 'मेरे लिए जीवित रहना मसीह और मरना लाभ है'। कभी-कभी मसीही लोग सोचते हैं कि मृत्यु के बारे में दुःखी नहीं होना चाहिए, बल्कि यह सोच कर आनंद मनाना चाहिए कि व्यक्ति 'प्रभु के पास चला गया है'। जब लोग अपने प्रिय जनों को याद करते हैं तो उस आशा के साथ जो हमें विश्वास के द्वारा है, हम किस रीति से स्वभाविक और सही शोक के बीच संतुलन बना सकते हैं?

सीखने के लिए मुख्य बातें

- मृत्यु हमें निराश न करे, क्योंकि हमारी आशा मसीह में यह है कि एक दिन हम परमेश्वर के साथ होने के लिए अनंत जीवन के लिए जी उठाए जाएंगे।
- आत्मिक रीति से हमारे पास पाये जाने वाली आशा के बावजूद, यह स्वाभाविक एवं स्वास्थ्यकर है कि अपने प्रिय जनों के चले जाने पर हम दुखी होते और शोक करते हैं।

प्रार्थना के लिए विनतीयाँ

- प्रभु आपका धन्यवाद हो, कि आप हमारे लिए मरे और फिर से जीवित हुए, और परमेश्वर के साथ एक सुनहरे भविष्य एवं संबंध के लिए हमें एक आशा दी है। आपका धन्यवाद हो कि आप हमें कभी नहीं छोड़ते या त्यागते हैं, लेकिन हमेशा अच्छे समय में और बुरे समय में, बीमारी में और स्वास्थ्य में, जब हम जीवित हैं और जब हम मृत्यु का सामना करते हैं आप हमारे साथ रहते हैं। हमारी सहायता करें कि मुश्किल भरे समयों में हमारे पास साहस और आशा हो। हमारी मदद करें कि इस धरती पर हम आपके हाथ और पैर बने, हमें अपने बुद्धि और अनुग्रह से भर दें ताकि हम उस समय उन लोगों को सांत्वना और सहायता दे सकें जो बीमार हैं और जिन्होंने अपने प्रियों को खो दिया है। आमीन।

पढ़ने के लिए अतिरिक्त अनुच्छेद

प्रकाशितवाक्य 21:1-5 बिना किसी मृत्यु और दुख के साथ स्वर्ग से दर्शन

1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18 प्रभु का दुबारा आगमन

रोमियो 8:37-38 कोई भी हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकता।

23 जीवन को पूरे उत्साह के साथ जीना

यह अध्ययन हमें कैसे बदल सकता है?

हम जानेंगे...

- कि हम सब मसीह की देह में एक हैं और एक साथ मिलकर परमेश्वर के राज्य का निर्माण कर रहे हैं।
- हमारे कार्यों द्वारा अपने प्रेम को बांटने के लिए परमेश्वर को हमारी जरूरत क्यों है।
- कि परमेश्वर के आश्चर्यकर्मों का तोहफा आज भी हमारे लिए उपलब्ध है।

हम बनेंगे...

- हमारे कलीसियाई परिवार के भीतर और अधिक प्रेम करने और सहायता प्रदान वाले बनेंगे।
- हमारे कलीसियाई परिवार के निर्माण में और परमेश्वर के वरदान को खोजने में प्रोत्साहित होंगे।
- पूरे विश्वास से उन लोगों के लिए अच्छे स्वास्थ्य की मांग करेंगे जिनको परमेश्वर की आशीष की जरूरत है।

हम कार्य करेंगे...

- परमेश्वर की अगुवाई के द्वारा उसकी आज्ञा को मानकर इस पृथ्वी पर उसके राज्य का निर्माण करेंगे।
- सुनिश्चित करेंगे कि हम में से जो एचआईवी में जी रहे हैं उनकी प्रतिभाओं, कौशलों और अनुभवों से कलीसिया को फायदा मिले।

पृष्ठभूमि की जानकारी

कार्यों के द्वारा प्रेम के चमकने वाले उदाहरण के रूप में, कलीसिया की गवाही को बहुत तेज़ प्रज्वलित होनी चाहिए। यह प्रेम अकसर बहुत व्यवहारिक होता है: खाना बनाना, सफाई करना, कपड़े धोना, अकेले बच्चे या व्यस्क के साथ समय बीताना, घर की मरम्मत करना या खेती-बाड़ी करना। हमारी कलीसियाएं समुदाय को बदल सकती हैं—सहायता करने वाले रिश्ते का निर्माण करके, न्याय दिलाकर, प्रेम बांटकर और परमेश्वर के राज्य द्वारा लाये जा रहे जीवन के सारे आनंद को जीकर।

जब कलीसिया गरीबी, लिंग भेदभाव और औरतों के गुप्तांग को काटने जैसी गंभीर समस्याओं को खत्म करने के लिए सक्रिय रूप से काम करती है, तो यह बहुत ही सकारात्मक गवाही बनती है। पहले समय में मसीही लोगों ने गुलामी, काले-गोरों में भेदभाव और गरीब देश के कर्ज जैसे मुद्दों के खिलाफ दृढ़ता से नेतृत्व किया है।

प्रेरित शब्द का मतलब है, परमेश्वर के द्वारा भेजा गया। मूल रूप से इस शब्द का इस्तेमाल केवल यीशु के द्वारा चुने गए चेलों के लिए किया जाता था, लेकिन पौलुस भी प्रेरित था (यद्यपि वह यीशु से उस समय नहीं मिला जब यीशु इस पृथ्वी पर थे)।

कई लोग विश्वास करते हैं कि जिसको परमेश्वर की ओर से विशेष बुलावट हुई है, वह भी प्रेरित हैं।

मार्गदर्शक के लिए सुझाव

जो लोग एचआईवी में जी रहे हैं वे भी मसीह के देह के भागी हैं। उनके वरदान, अनुभव, विश्वास, करूणा और प्रेम दूसरों के लिए हमारी गवाही के मुख्य हिस्से हैं। परमेश्वर के राज्य में, हमारे जीवन का पैमाना यीशु के लिए और हमारे आसपास के लोगों के लिए हमारा प्रेम है, न कि उस बात से जिसे इस संसार में सफलता कहते हैं। इस बारे में कि वास्तव में क्या महत्वपूर्ण है और लोगों को प्रेम करने पर एचआईवी हमारी सोच को पूरी रीति से इस तरह बदल सकती है— सभी मायनों में हमारे पड़ोसी से प्रेम—अपने समान।
चिन्हों और चमत्कारों पर लोगों के अनुभवों पर विचार-विमर्श करें। कुछ लोग सोचते हैं कि यह केवल शुरूआती कलीसिया में ही होता था, लेकिन बाइबल के कई पद जोर देकर कहते हैं कि ये सभी वरदान आज की कलीसिया के लिए भी हैं। मसीही लोगों को सिर्फ अपने लिए चिन्ह और चमत्कारों को नहीं खोजना चाहिए, लेकिन जब परमेश्वर कार्य करता है तो हमें विश्वास करना और आनंदित होना चाहिए।

व्यवहारिक प्रतिक्रिया के लिए सुझाव
जब कलीसिया के अगुवे पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य का निर्माण करने के लिए प्रतिबद्ध रहते हैं, तो परमेश्वर कई आशीषें देता है। कलीसिया के अगुवे यीशु के प्रेम को कार्यों के द्वारा प्रगट कर सकते हैं। मसीही होने के नाते, न्याय के लिए परमेश्वर के जुनून और गरीबों एवं दबे हुए लोगों के लिए यीशु की चिंता में हमें सहभागी बनाना चाहिए। कलीसिया के अगुवे जिसमें एचआईवी वाले लोग भी शामिल हैं पूरे अधिकार के साथ बोल सकते हैं। वे उन अन्यायपूर्ण कानूनों को चुनौती दे सकते हैं और गरीबों के अधिकारों की रक्षा एवं उन्हें बढ़ावा दे सकते हैं। अपने उदाहरण से वे अपनी कलीसियाओं को न्याय व इंसाफ को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणा, नेतृत्व एवं को प्रोत्साहन दे सकते हैं। यह पीड़ित लोगों के लिए प्रार्थना के द्वारा, पैसा देने के द्वारा, व्यवहारिक देखभाल के द्वारा और उनके लिए आवाज़ उठाने के द्वारा होगा।

प्रेरितों के कार्य 2:42-47

जीवन को पूरे उत्साह के साथ जीना

इस अनुच्छेद में प्रेरितों द्वारा होने वाले अदभुत चंगाई और आश्चर्यकर्मों के बारे में हम पढ़ते हैं। इन आश्चर्यकर्मों ने न केवल सुसमाचार के फैलावे को बढ़ावा दिया बल्कि मसीह की कलीसिया की अगवाई करने का अधिकार भी प्रेरितों को दिया। परमेश्वर आज भी हमारे संसार में आश्चर्यकर्मों को करता है।
परमेश्वर के राज्य को धरती पर लाने के लिए उतसाहित होना एवं प्रत्युत्तर देना ही विश्व की कलीसिया का दर्शन होना चाहिए। संसार में जहां कहीं भी लोग कठिनाई सह रहे हैं उनके साथ सहभागिता करने और उन्हें सहायता प्रदान करने में इस दर्शन को अगुवाई करनी चाहिए।
जब एचआईवी में जी रहे लोग ऐसे स्थान में आते हैं, जहाँ उन्हें शांति मिलती एवं उन्हें स्वीकार किया जाता है, तो वे परमेश्वर के प्रेम के कार्य को अपने मनों में और अपने द्वारा होने देते हैं। हममें से जो लोग एचआईवी में जी रहे हैं, वे अपना बाकी जीवन प्रेम, सहायता एवं देखभाल के साथ दूसरों को सहारा देने में व्यतीत कर सकते हैं।

विचारविमर्श

बाइबल के समय में...

1. प्रेरित लोग और शुरूआत के विश्वासी लोग कितनी बार मिलते थे? वे अपना समय कैसे व्यतीत करते थे?
2. विचार-विमर्श करें कि सब लोगों पर भय क्यों छा गया।
3. आश्चर्य चिन्ह और चमत्कार केवल प्रेरितों के द्वारा ही क्यों हो रहे थे? क्या आज भी हमारे यहाँ प्रेरित हैं?
4. प्रारंभिक कलीसिया बहुत ही नजदीकी के साथ संगति करते थे। विचार-विमर्श करें कि उस समय में इसका क्या मतलब था।
5. प्रारंभिक कलीसिया द्वारा अपना घर, अपनी संपति और पैसा एक-दूसरे के साथ बांटने का चित्र बहुत ही चुनौती भरा है। इसके क्या परिणाम हुए? उनके इस उदाहरण से हम क्या शिक्षा पा सकते हैं?
6. दूसरे लोग प्रारंभिक कलीसिया के बारे में क्या सोचते थे?

एचआईवी के समय में...

7. क्या हम विश्वास को लेकर बहुत ज्यादा आराम से हैं? क्या हम परमेश्वर द्वारा सामर्थी रूप से कार्य करने की अपेक्षा करते हैं? हमारे विश्वास में यह क्या फर्क लाएगा?
8. क्या चंगाई और आश्चर्यकर्म आज भी होते हैं? कोई उदाहरण बांटिए, यदि आप जानते हैं जहाँ पर लोगों ने परमेश्वर में शांति पा कर आत्मिक रूप से चंगाई पाई है, या शारीरिक रूप से अच्छा स्वास्थ्य पाया है?
9. 'संगति' शब्द का हमारे लिए क्या अर्थ है? समूह में सब लोग एक या दो ऐसे शब्द बताएं जो यह बताते हों कि संगति के लिए हम किस चीज़ को सबसे ज्यादा मूल्यवान मानते हैं।
10. क्या हम अपने दोस्तों और पड़ोसियों को जिनकी विभिन्न प्रकार की जरूरतें हैं यीशु के प्रेम और चंगाई के सामर्थ्य को पाने के लिए लाते हैं? क्या हम दूसरे लोगों को यीशु के प्रेम को हमारे साथ बांटने देते हैं जब हम जरूरत में होते हैं?
11. यीशु ने हर एक व्यक्ति पर, जिससे भी वह मिला, अपने महान प्रेम और समझ को उस पर दर्शाया। जो हमारे आस-पास हैं उनके लिए व्यक्तिगत रूप से हम मसीह के प्रेम का उदाहरण कैसे बन सकते हैं?
12. नीचे दिये इस अनुच्छेद के लिए लिन और बिल हाएबिल्स के रूपातंरण को एक साथ मिलकर पढ़ें। हमारी क्या प्रतिक्रिया है? अपनी आँखों को बंद कर लें और उस समय अपने परिवार, कलीसिया और समुदाय को बदलता हुआ देंखे जब यीशु वापस आएगा और अपने राज्य को इस पृथ्वी पर स्थापित करेगा। इन सपनों में से कुछ को अभी इसी समय पूरा करने के लिए कैसे हम मिलकर काम कर सकते हैं?

सीखने के लिए मुख्य बातें

- परमेश्वर अपनी कलीसिया से धार्मिता और प्रेम को, जैसे पानी नदी के तेज बहाव में बहता है वैसे ही बहता हुआ देखना चाहता है। कलीसिया को ऐसे विभिन्न सामाजिक कार्यों के लिए नेतृत्व और प्रेरणा देनी चाहिए जो हमारे दुखी संसार में न्याय व इंसाफ को लाने का लक्ष्य रखती हैं।

- कलीसिया के ऐसे अगुवे जो एचआईवी के विषय में आवाज उठाते हैं, कलंक और लिंग भेदभाव को चुनौती देते हैं वे प्रारंभिक प्रेरितों के उदाहरण पर चल रहे हैं। हो सकता है कि उन्हें दूसरों के विरोध को सहना पड़े लेकिन वे प्रोत्साहित रहते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि वे प्रभु का काम कर रहे हैं।

प्रार्थना के लिए विनतीयाँ

- प्रार्थना करें कि हमारी कलीसिया सभी आने वालों के लिए एक स्वागतमय और आशा का स्थान बने।
- प्रार्थना करें कि हमारे समुदायों में परमेश्वर के राज्य को बनाने के लिए पवित्र आत्मा हमें ऊर्जा और जुनून देकर प्रेरित करें।
- प्रार्थना करें कि हमारे कलीसियाओं में हम परमेश्वर को सामर्थ्य के साथ और चमत्कारी रूप से कार्य करता हुआ देखें।
- प्रार्थना करें लोगों को यह जानने के लिए बुद्धि मिले कि कब परमेश्वर काम करता है (साथ में झूठे भविष्यवक्ताओं को भी जांचे परखें)।
- कठिन विवादों को सुलझाने से यीशु डरता नहीं था। हमें उसके उदाहरण का पालन करना चाहिए।

पढ़ने के लिए अतिरिक्त अनुच्छेद

इफिसियों 2:19-21 हम मसीह के साथ संगी स्वदेशी हैं।

लूका 5:17-26 लोगों को चंगाई के लिए लाने के लिए दोस्तों का मूल्य।

प्रेरितों 5:12-16 प्रेरित लोग कई लोगों को चंगा करते हैं।

लिन और बिल हाएबिल्स द्वारा रूपांतरित प्रेरितों के काम का एक वैकल्पिक रूपांतरण

2:42 और वे, कुछ एचआईवी संक्रमित और कुछ बिना एचआईवी वाले लोग प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने, और रोटी तोड़ने, और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।

2:43 और सब लोगों पर भय छा गया, और बहुत से अद्‌भुत काम और चिह्न प्रेरितों के द्वारा प्रगट होते थे, जैसे-जैसे समुदाय में इस विषाणु के फैलने के खिलाफ लड़ने के लिए वे एक हो गए।

2:44 और सब विश्वास करनेवाले, संक्रमित या बिना संक्रमण वाले लोग इकट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएँ साझे में थीं।

2:45 वे अपनी-अपनी सम्पत्ति और सामान बेच-बेचकर जो स्वस्थ एवं आर्थिक रूप से स्थिर थे उदारता से देते थे-यहाँ तक कि बलिदान के रूप में उन्हें देते थे जिनके पास नहीं था, और जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी बाँट दिया करते थे।

2:46 वे प्रतिदिन जो स्वस्थ बनवान थे एक मन होकर मन्दिर में इकट्ठे होते थे, और फिर वे उन लोगों के घर में जमा होते थे जो तने बीमार थे कि घर से बाहर नहीं निकल सकते थे, घर-घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सीधाई से भोजन किया करते थे,

2:47 और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उनसे प्रसन्न थे: और वे परमेश्वर के अनुग्रह से अचंबित थे जो कि एचआईवी और एड्स के कलंक से ज्यादा शक्तिशाली था। और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था, कुछ को बहुत लम्बा जीने के लिए, दूसरों को मृत्यु के द्वारा सम्मान के साथ परमेश्वर की उपस्थिति में लाने के द्वारा।

CANA and the Church:
Taking CCMP Forward in the north Indian context...

CCMP Orientation workshop with Church Leaders

Christian AIDS/HIV National Alliance (CANA) has been engaged in facilitating Christian response to HIV in India since 1997. Over the years we have encouraged Christian organizations, Churches, Theological institutions, schools, Christian professionals and Christian community at large nationwide with the desire to make HIV a reality for the Christian communities. The challenge was big since HIV and AIDS has in-built stigma and discriminations as a sexually transmitted disease, HIV was also a taboo in the early intervention phase. However over the years, we saw drastic changes and the Christian community opened up with their responses and willingness to get involved. A number of Christian NGOs and churches developed their local responses through the inspirations and capacities that were provided by CANA over the years.

Congregation based Bible Studies

In March 2011, CANA was first introduced to the concept of UMOJA during the partners meet by Tear Fund UK. CANA team also equipped themselves in this process though an international opportunities of observing the work in Kenya and also the work in North East India. These experiences helped CANA internalized and strongly believe that CANA can take up this process to mobilize the churches to respond to HIV. The very foundation of this process is to explore local resources, and working together and CANA appreciated this for their churches and partners that would serve as a sustainable response to HIV and its vulnerabilities. With declining external funding for development, this is also the best re-start towards Church and Community Mobilization Process (CCMP) to engage local resilience and exercise faith in action. CANA understands that the time is ripe for the church and the congregation in taking responsibility for their own development and respond to cater the need of their neighborhood communities consist of the poor, needy, marginalized as well the vulnerable populations such as People Living with HIV and AIDS (PLHA), Drug Abusers, street children and so on and actively get involved in prevention and care as well addressing to the root causes of these vulnerabilities.

More details: canadelhi@gmail.com; samrajindia@gmail.com;0-9871076999